Shaurya Panchal

11 Mar 2009

09:46 AM

Indore

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 113469301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**11/03/2009**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**09:46:00 घंटे**
इष्ट	07:46:18 घटी
स्थान	**Indore**
राज्य	Madhya Pradesh
देश	India

अक्षांश	22:43:10 उत्तर
रेखांश	75:51:27 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:26:34 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	09:19:25 घंटे
वेलान्तर	-00:10:01 घंटे
साम्पातिक काल	20:35:16 घंटे
सूर्योदय	06:39:28 घंटे
सूर्यास्त	18:34:02 घंटे
दिनमान	11:54:34 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	26:44:16 कुम्भ
लग्न के अंश	24:50:25 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मेष - मंगल
राशि-स्वामी	**सिंह - सूर्य**
नक्षत्र-चरण	**उ०फाल्गुनी - 1**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	शूल
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	टे-टेकचंद
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1930	फाल्गुन	20
पंजाबी	संवत : 2065	फाल्गुन	28
बंगाली	सन् : 1415	फाल्गुन	27
तमिल	संवत : 2065	मासी	27
केरल	कोल्लम : 1184	कुंभम	27
नेपाली	संवत : 2065	फाल्गुन	28
चैत्रादि	संवत : 2065	फाल्गुन	शुक्ल 15
कार्तिकादि	संवत : 2065	फाल्गुन	शुक्ल 15

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 15
तिथि समाप्ति काल _____: 08:07:45
जन्म तिथि _____: 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पू०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 08:07:25 घंटे
जन्म योग _____: उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग ____: शूल
योग समाप्ति काल _____: 18:50:25 घंटे
जन्म योग _____: शूल
सूर्योदय कालीन करण ____: बव
करण समाप्ति काल _____: 08:07:45 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 04:06:26
भभोग _____: 57:45:11
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 5 वर्ष 6 मा 25 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगल _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

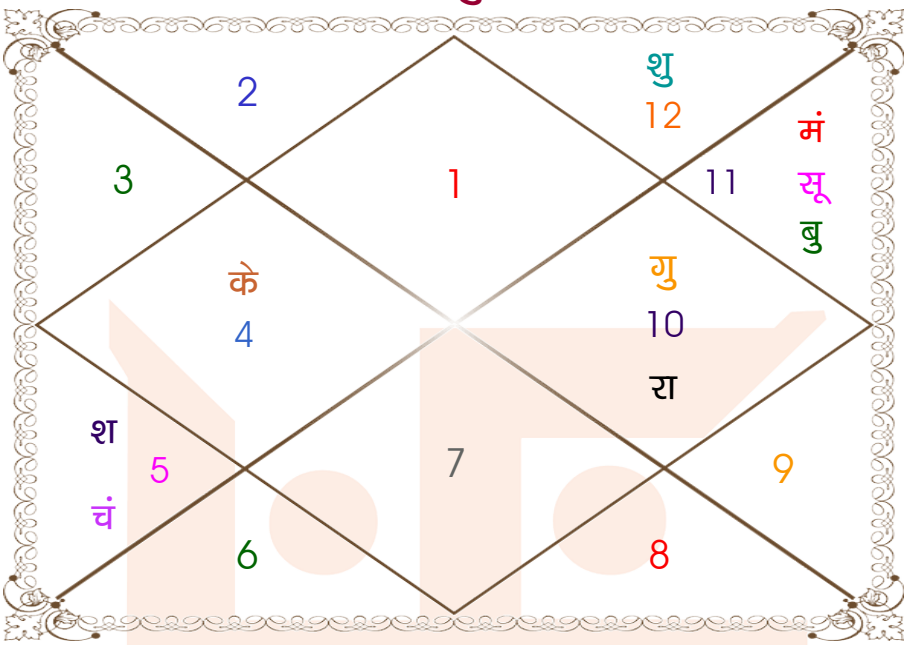

चन्द्र कुंडली

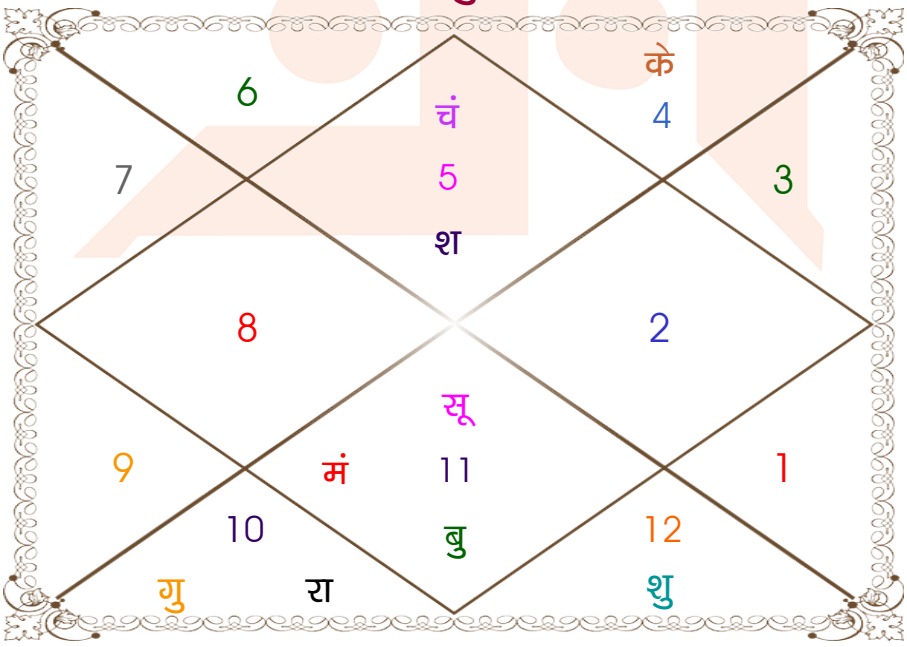

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

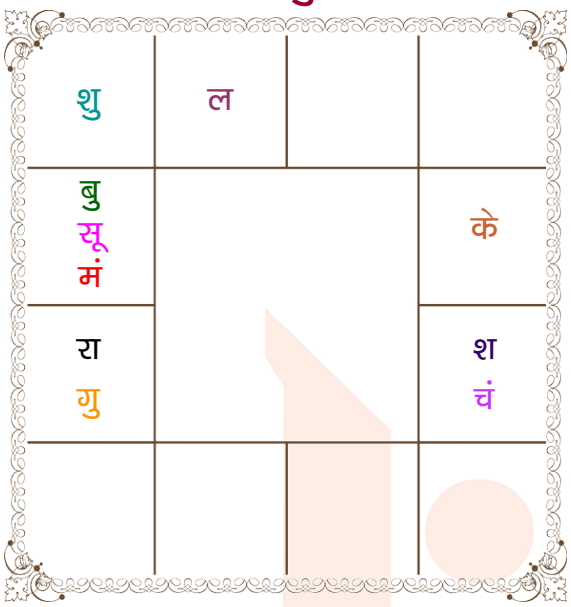

लग्न कुंडली

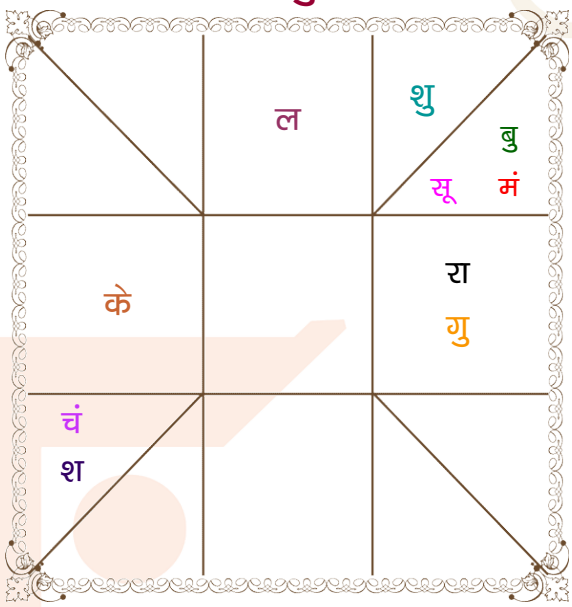

विंशोत्तरी
सूर्य 5वर्ष 6मा 25दि

सूर्य

11/03/2009

06/10/2128

सूर्य	05/10/2014
चन्द्र	05/10/2024
मंगल	05/10/2031
राहु	05/10/2049
गुरु	05/10/2065
शनि	05/10/2084
बुध	06/10/2101
केतु	06/10/2108
शुक्र	06/10/2128

योगिनी
सिद्धा 6वर्ष 5मा 29दि

पिंगला

08/09/2024

09/09/2026

पिंगला	19/10/2024
धान्या	19/12/2024
भ्रामरी	10/03/2025
भद्रिका	20/06/2025
उल्का	19/10/2025
सिद्धा	10/03/2026
संकटा	20/08/2026
मंगला	09/09/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	24:50:25	409:30:12	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	---
सूर्य			कुंभ	26:44:16	00:59:54	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			सिंह	27:37:24	13:58:01	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि
मंगल			कुंभ	02:54:34	00:46:58	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	शुक्र	सम राशि
बुध			कुंभ	09:52:04	01:38:14	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
गुरु			मक	20:54:48	00:12:50	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	नीच राशि
शुक्र	व		मीन	21:03:16	00:11:11	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	उच्च राशि
शनि	व		सिंह	24:12:15	00:04:46	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
राहु	व		मक	14:40:49	00:05:54	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	14:40:49	00:05:54	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	मित्र राशि
हर्ष			कुंभ	28:30:32	00:03:26	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	---
नेप			कुंभ	00:56:03	00:02:06	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	---
प्लूटो			धनु	09:09:00	00:00:47	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
दशम भाव			मक	12:26:49	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:59:22

लग्न-चलित

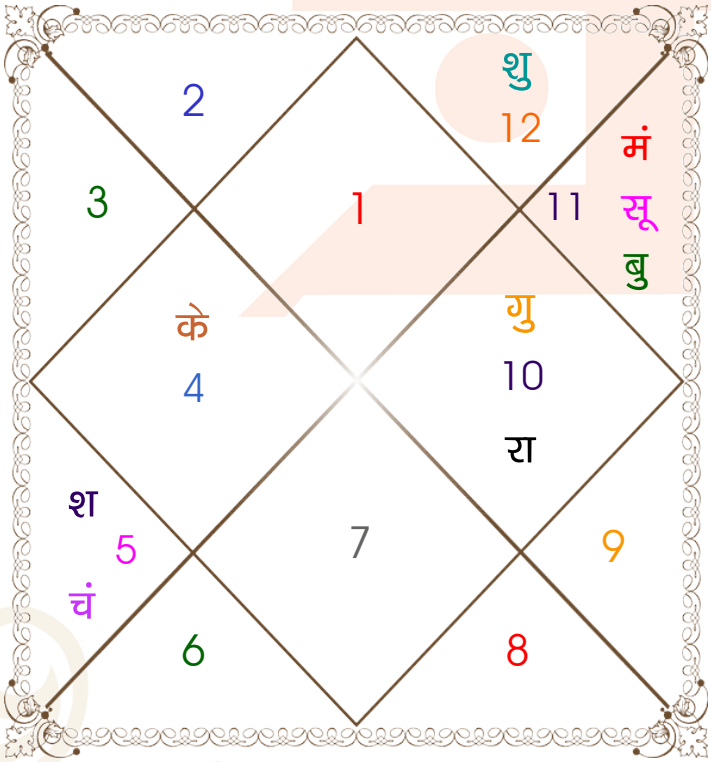

चन्द्र कुंडली

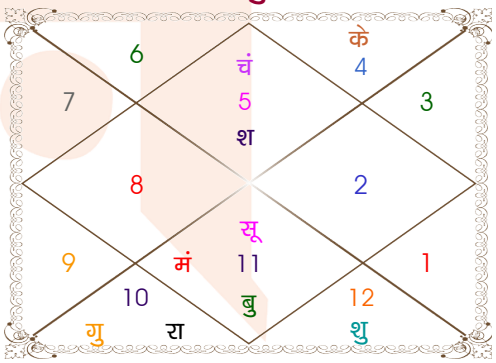

नवमांश कुंडली

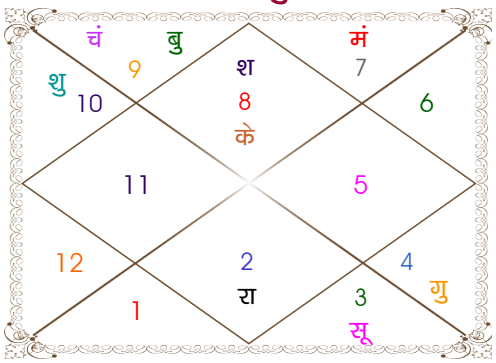

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	07:46:29	मेष	24:50:25
2	वृष	07:46:29	वृष	20:42:33
3	मिथुन	03:38:37	मिथुन	16:34:41
4	मिथुन	29:30:45	कर्क	12:26:49
5	कर्क	29:30:45	सिंह	16:34:41
6	कन्या	03:38:37	कन्या	20:42:33
7	तुला	07:46:29	तुला	24:50:25
8	वृश्चिक	07:46:29	वृश्चिक	20:42:33
9	धनु	03:38:37	धनु	16:34:41
10	धनु	29:30:45	मकर	12:26:49
11	मकर	29:30:45	कुम्भ	16:34:41
12	मीन	03:38:37	मीन	20:42:33

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	24:50:25
2	वृष	22:43:47
3	मिथुन	17:15:26
4	कर्क	12:26:49
5	सिंह	11:42:21
6	कन्या	16:55:21
7	तुला	24:50:25
8	वृश्चिक	22:43:47
9	धनु	17:15:26
10	मकर	12:26:49
11	कुम्भ	11:42:21
12	मीन	16:55:21

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली

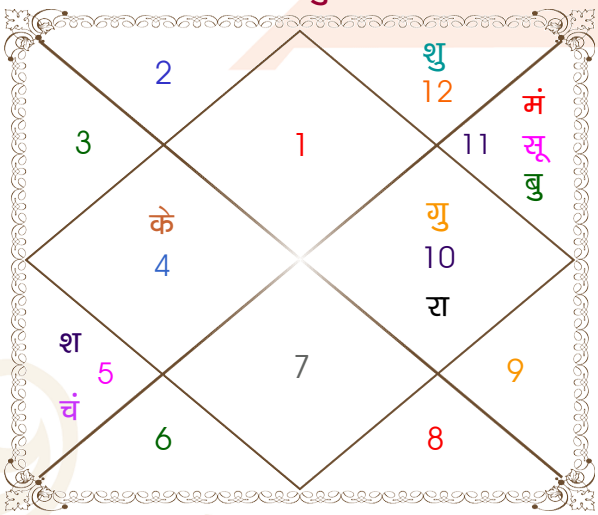

भाव कुंडली

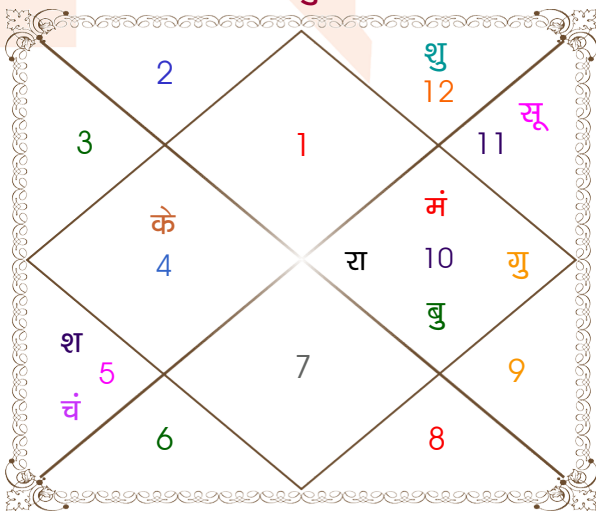

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	मृत	खल	गमन	3.04	44 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	मृत	मुदित	आगम	3.27	36 %
मंगल	कलत्र	भ्रातृ	बाल	निपीदित	गमन	2.43	54 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	कुमार	निपीदित	आगम	0.49	42 %
गुरु	पुत्र	धन	कुमार	भीत	नृत्यलिप्सा	0.31	54 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	कुमार	दीप्त	उपवेशन	23.21	29 %
शनि	भ्रातृ	आयु	मृत	खल	निद्रा	1.38	29 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	मुदित	निद्रा	0.00	86 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	मुदित	आगम	0.00	86 %
कुल						34.12	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली

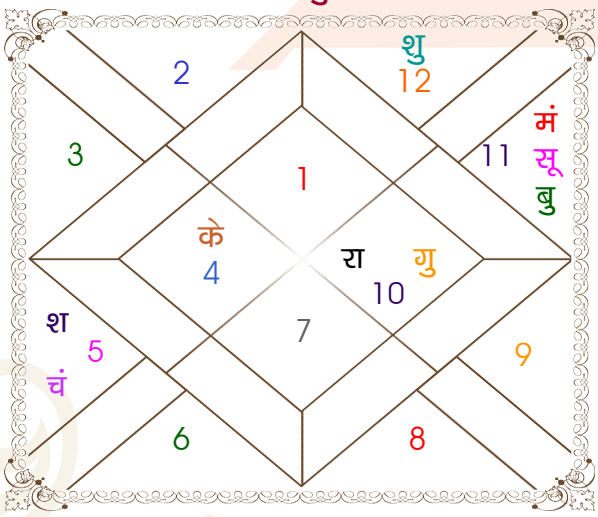

लग्न-चलित

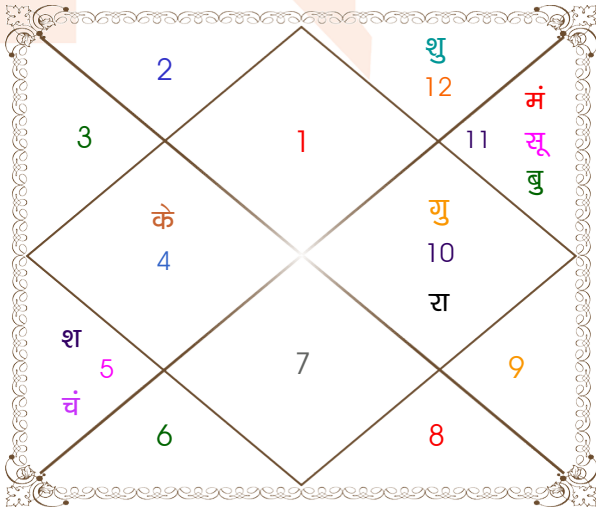

सुदर्शन चक्र

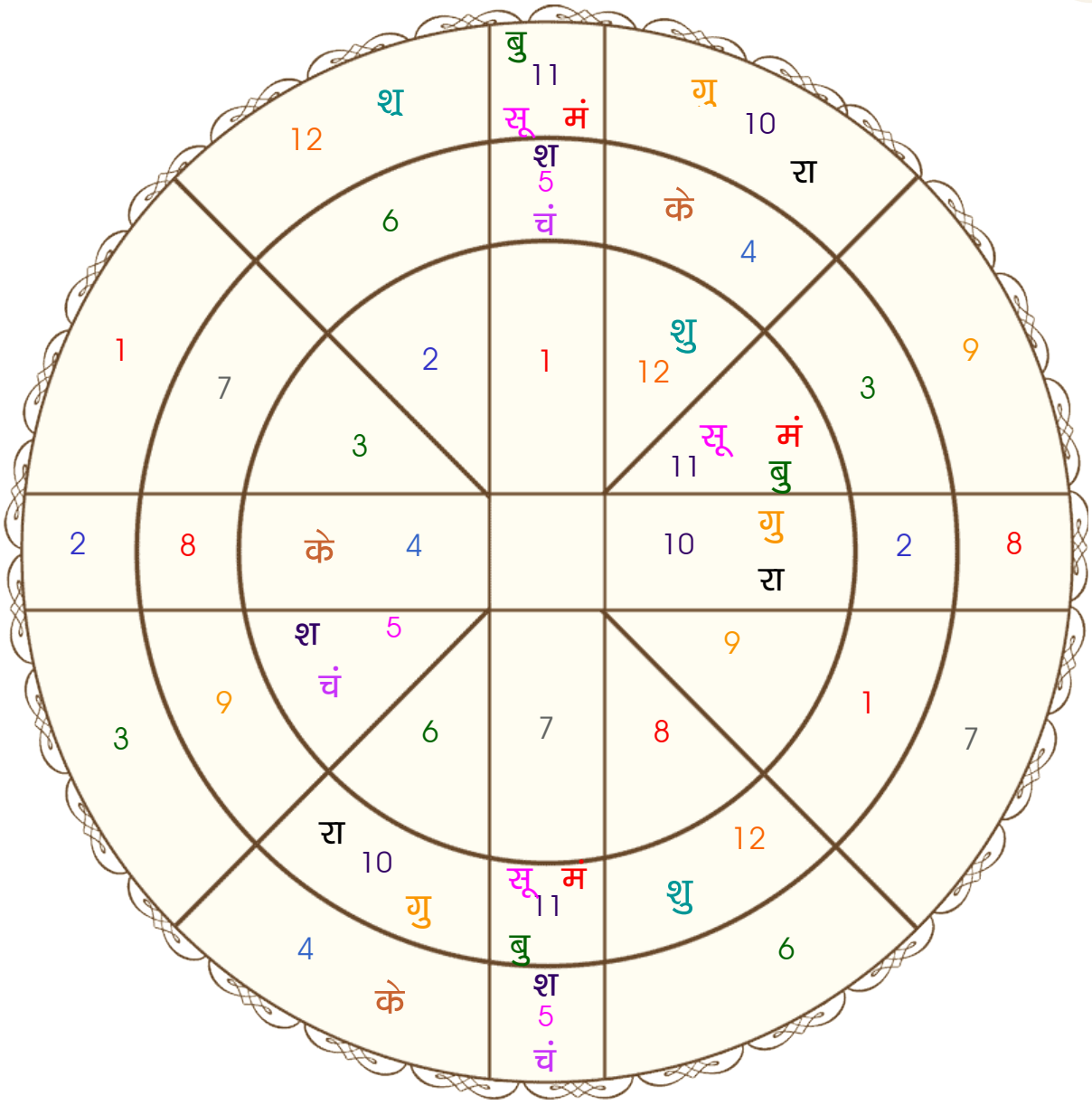

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 6 मास 7 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	26:50:48	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र
चंद्र		सिंह	27:43:56	सूर्य	सूर्य	चंद्र	गुरु
मंगल		कुंभ	03:01:06	शनि	मंगल	शुक्र	शुक्र
बुध		कुंभ	09:58:36	शनि	राहु	गुरु	चंद्र
गुरु		मक	21:01:20	शनि	चंद्र	शुक्र	चंद्र
शुक्र	व	मीन	21:09:48	गुरु	बुध	शुक्र	बुध
शनि	व	सिंह	24:18:47	सूर्य	शुक्र	बुध	केतु
राहु	व	मक	14:47:21	शनि	चंद्र	गुरु	शुक्र
केतु	व	कर्क	14:47:21	चंद्र	शनि	राहु	मंगल
हर्ष		कुंभ	28:37:04	शनि	गुरु	शुक्र	बुध
नेप		कुंभ	01:02:35	शनि	मंगल	बुध	मंगल
प्लूटो		धनु	09:15:32	गुरु	केतु	गुरु	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मेष	24:56:57	मंगल	शुक्र	बुध	मंगल
2	वृष	22:50:19	शुक्र	चंद्र	सूर्य	राहु
3	मिथु	17:21:58	बुध	राहु	शुक्र	केतु
4	कर्क	12:33:21	चंद्र	शनि	मंगल	बुध
5	सिंह	11:48:53	सूर्य	केतु	बुध	केतु
6	कन्या	17:01:52	बुध	चंद्र	शनि	चंद्र
7	तुला	24:56:57	शुक्र	गुरु	बुध	राहु
8	वृश्चि	22:50:19	मंगल	बुध	चंद्र	शनि
9	धनु	17:21:58	गुरु	शुक्र	मंगल	मंगल
10	मक	12:33:21	शनि	चंद्र	राहु	शनि
11	कुंभ	11:48:53	शनि	राहु	शनि	चंद्र
12	मीन	17:01:52	गुरु	बुध	बुध	केतु

के.पी. अयनांश : 23:52:50

फॉरच्युना : तुला 25:50:04

लग्न कुंडली

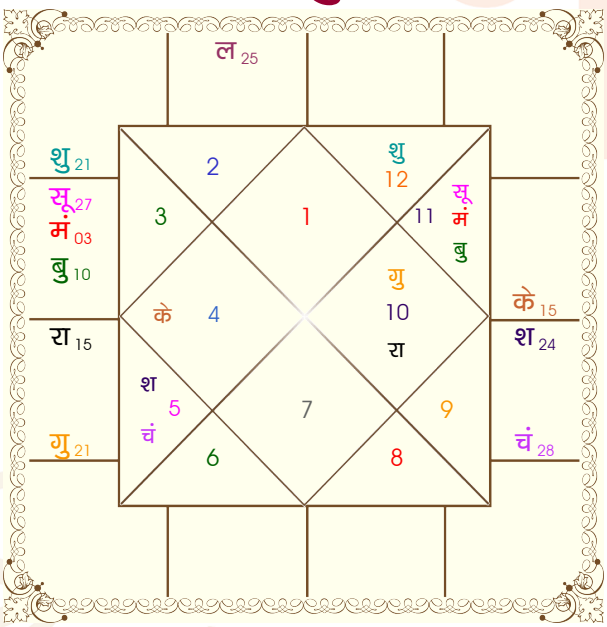

भाव कुंडली

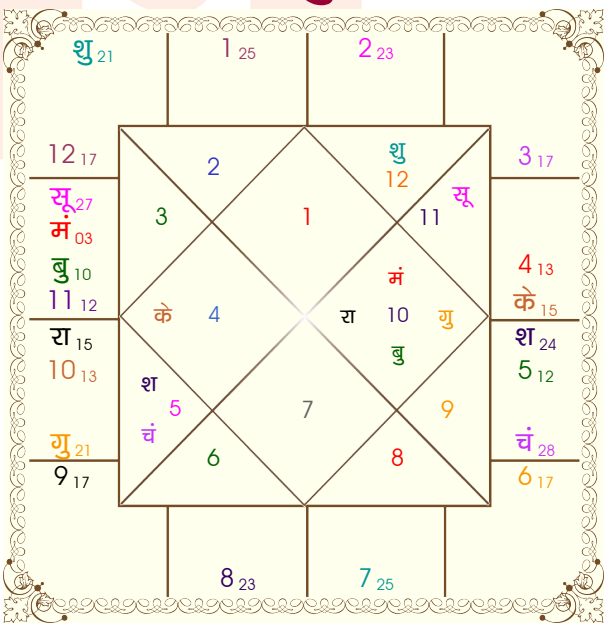

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल,
2	शुक्र- शनि-
3	बुध- शुक्र-
4	चंद्र- गुरु- राहु- केतु,
5	सूर्य- चंद्र+ गुरु, शनि, राहु, केतु,
6	बुध- शुक्र-
7	शुक्र- शनि-
8	मंगल,
9	सूर्य- गुरु-
10	सूर्य, मंगल+ बुध+ गुरु, शुक्र, शनि- राहु, केतु-
11	सूर्य, चंद्र, शनि- केतु-
12	सूर्य- गुरु- शुक्र, शनि,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	5- 9- 10, 11, 12-
चंद्र	4- 5+ 11,
मंगल	1, 8, 10+
बुध	3- 6- 10+
गुरु	4- 5, 9- 10, 12-
शुक्र	2- 3- 6- 7- 10, 12,
शनि	2- 5, 7- 10- 11- 12,
राहु	4- 5, 10,
केतु	4, 5, 10- 11-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	सूर्य
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	मं	मं
2	--	--	श	शु
3	--	--	शु	बु
4	--	के	गु रा	चं
5	गु रा के	चं श	चं	सू
6	--	--	शु	बु
7	--	--	श	शु
8	--	--	मं	मं
9	--	--	सू	गु
10	सू मं बु शु	मं बु गु रा	के	श
11	चं	सू	के	श
12	श	शु	सू	गु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	5	---	कुम्भ	11
चंद्र	4	2,6,10	सिंह	5
मंगल	1,8	---	कुम्भ	10
बुध	3,6	8,12	कुम्भ	10
गुरु	9,12	7	मकर	10
शुक्र	2,7	1,9	मीन	12
शनि	10,11	4	सिंह	5
राहु	---	3,11	मकर	10
केतु	---	5	कर्क	4

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	9,12	7	10	2,7	1,9	12
चंद्र	5	---	11	4	2,6,10	5
मंगल	1,8	---	10	2,7	1,9	12
बुध	---	3,11	10	9,12	7	10
गुरु	4	2,6,10	5	2,7	1,9	12
शुक्र	3,6	8,12	10	2,7	1,9	12
शनि	2,7	1,9	12	3,6	8,12	10
राहु	4	2,6,10	5	9,12	7	10
केतु	10,11	4	5	---	3,11	10

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य 326.74	चंद्र 147.62	मंगल 302.91	बुध 309.87	गुरु 290.91	शुक्र 351.05	शनि 144.20	राहु 284.68	केतु 104.68	हर्ष 328.51	नेप 300.93	प्लूटो 249.15
सूर्य 326.74	-- 0.00	सप्त 9.96	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 9.65	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.83	-- 0.00	-- 0.00
चंद्र 147.62	सप्त 9.96	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.37	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 9.96	-- 0.00	-- 0.00
मंगल 302.91	-- 0.00	8वां 8.51	-- 0.00	युति 7.46	युति 3.09	-- 0.00	8वां 6.12	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.79	-- 0.00
बुध 309.87	-- 0.00	-- 0.00	युति 7.46	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 0.69	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 5.93	-- 0.00
गुरु 290.91	-- 0.00	-- 0.00	युति 3.09	-- 0.00	-- 0.00	तृती 3.00	-- 0.00	युति 7.94	सप्त 7.94	-- 0.00	युति 4.98	-- 0.00
शुक्र 351.05	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
शनि 144.20	सप्त 9.65	युति 9.37	-- 0.00	सप्त 0.69	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 9.00	-- 0.00	-- 0.00
राहु 284.68	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 7.94	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 10.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
केतु 104.68	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 7.94	-- 0.00	नवां 0.73	सप्त 10.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
हर्ष 328.51	युति 9.83	सप्त 9.96	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 9.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
नेप 300.93	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.79	युति 5.93	युति 4.98	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
प्लूटो 249.15	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	तृती 2.95	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	24.84	50.71	76.58	102.45	136.58	170.71	204.84	230.71	256.58	282.45	316.58	350.71
सूर्य	--	--	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
326.74	0.00	0.00	0.00	0.44	4.85	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.85	0.00
चंद्र	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	अष्टां	सप्त	--
147.62	0.00	0.00	0.00	0.00	4.02	0.00	2.24	0.00	0.00	0.96	4.02	0.00
मंगल	4था	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
302.91	6.64	0.00	0.00	0.00	1.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.39	0.00
बुध	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां
309.87	0.00	0.00	0.00	0.00	7.63	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.63	0.25
गुरु	चतु	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती
290.91	1.55	10.00	0.00	6.32	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	6.32	0.00	3.00
शुक्र	--	तृती	चतु	--	--	--	--	--	--	--	--	युति
351.05	0.00	2.99	1.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.99
शनि	--	10वा	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	सप्त	--
144.20	0.00	9.34	0.00	0.00	6.98	0.00	0.00	1.83	0.00	0.00	6.98	0.00
राहु	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
284.68	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00	0.00
केतु	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
104.68	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00	0.00
हर्ष	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
328.51	1.72	0.00	0.00	0.00	3.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.16	0.00
नेप	--	--	अष्टां	--	--	--	--	--	--	--	--	--
300.93	0.00	0.00	0.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
249.15	0.47	0.00	7.12	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.12	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	24.84	52.73	77.26	102.45	131.71	166.92	204.84	232.73	257.26	282.45	311.71	346.92
सूर्य	--	चतु	--	अष्टां	--	--	--	--	--	--	--	--
326.74	0.00	1.49	0.00	0.44	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	तृती	चतु	--	अष्टां	--	--
147.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.24	0.86	0.00	0.96	0.00	0.00
मंगल	4था	--	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	अष्ट
302.91	6.64	0.00	0.00	0.00	6.05	1.03	0.00	0.00	0.00	0.00	6.05	0.02
बुध	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
309.87	0.00	0.00	0.00	0.00	9.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.82	0.00
गुरु	चतु	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती
290.91	1.55	9.82	0.00	6.32	0.00	9.14	0.00	0.00	0.00	6.32	0.00	1.51
शुक्र	--	तृती	चतु	--	--	--	--	--	--	--	--	युति
351.05	0.00	2.72	1.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.08
शनि	--	10वा	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	सप्त	--
144.20	0.00	9.88	0.00	0.00	2.59	0.00	0.00	2.78	0.00	0.00	2.59	0.00
राहु	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
284.68	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00	2.50
केतु	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--
104.68	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00	2.50	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00	0.00
हर्ष	तृती	चतु	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
328.51	1.72	0.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	अष्ट
300.93	0.00	0.00	0.00	0.00	4.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.02
प्लूटो	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--
249.15	0.47	0.00	6.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.61	0.00	2.35	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

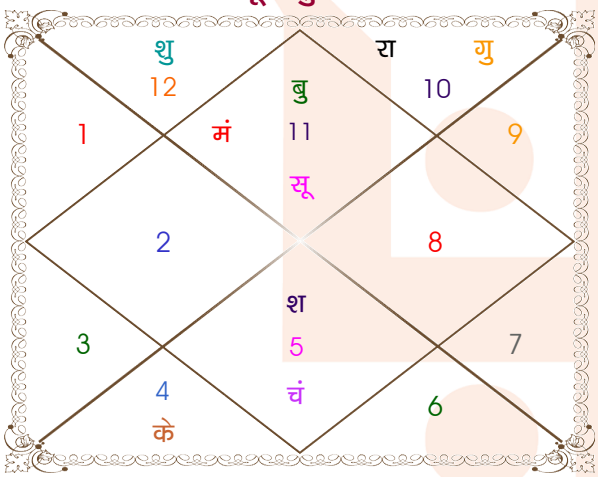

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

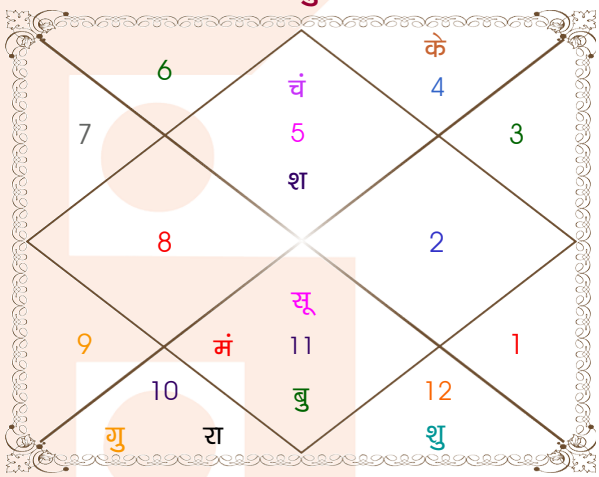

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

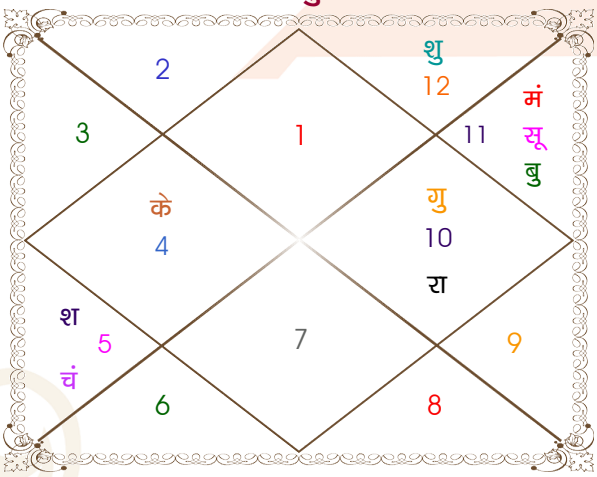

देह विचारः

होरा कुंडली

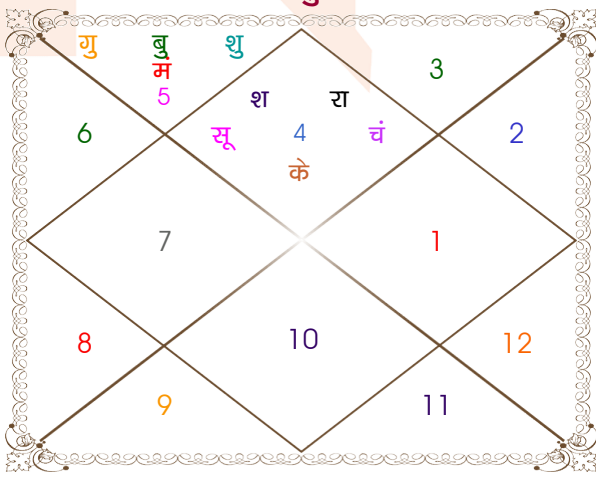

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

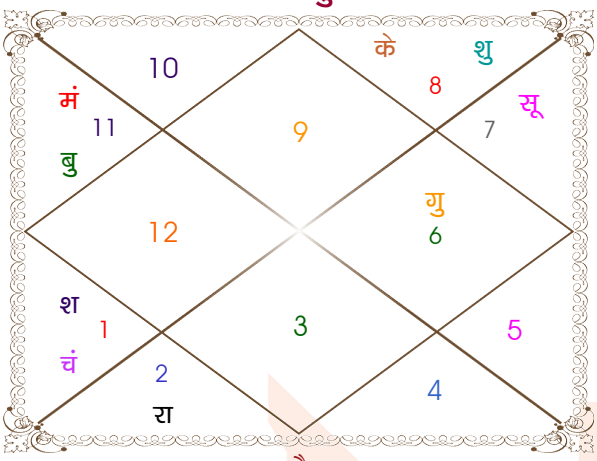

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

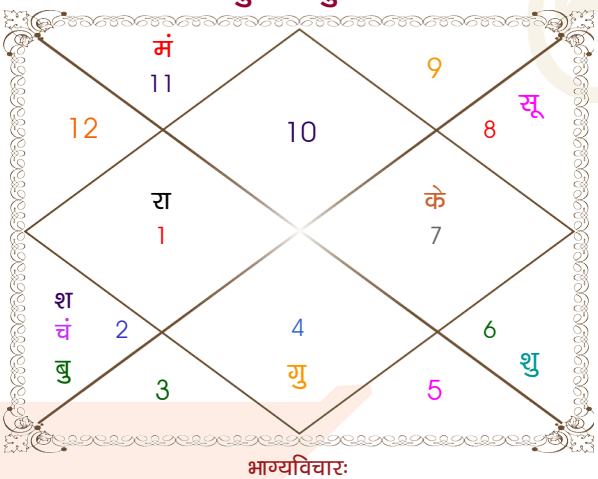

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

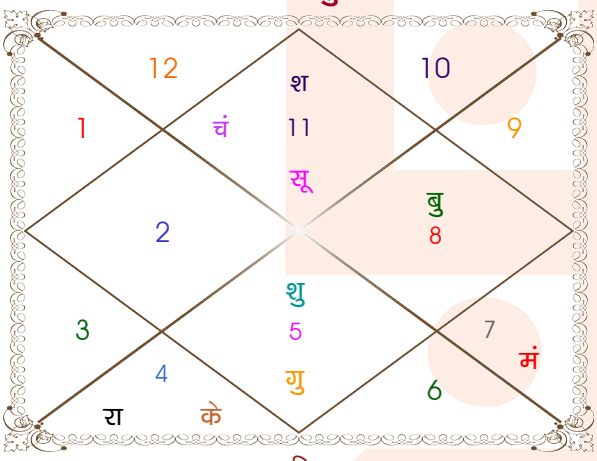

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

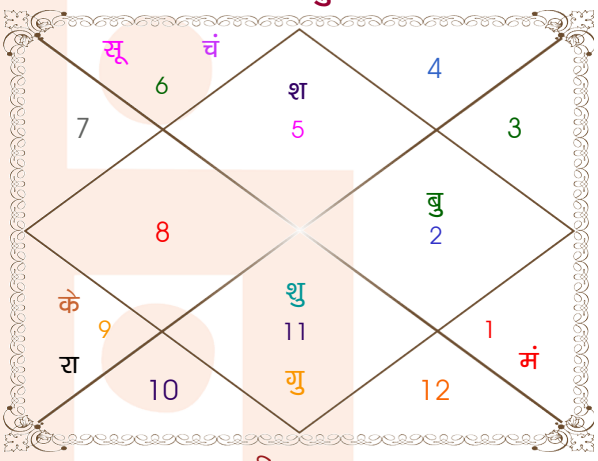

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

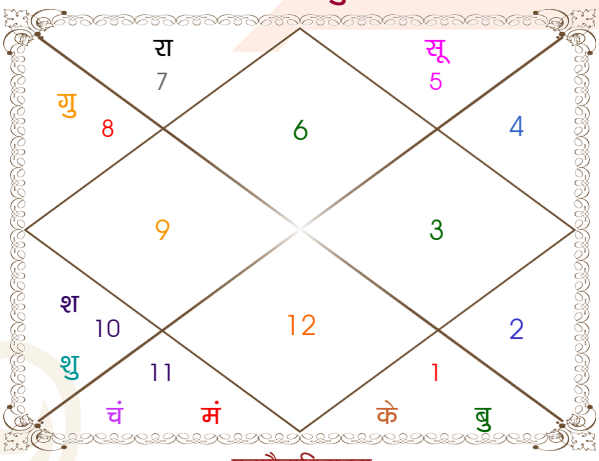

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

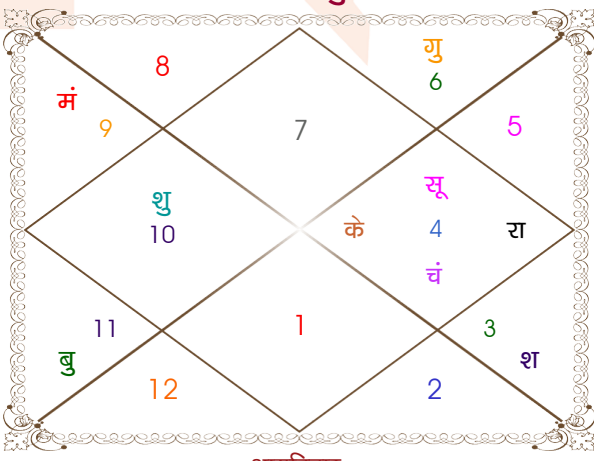

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

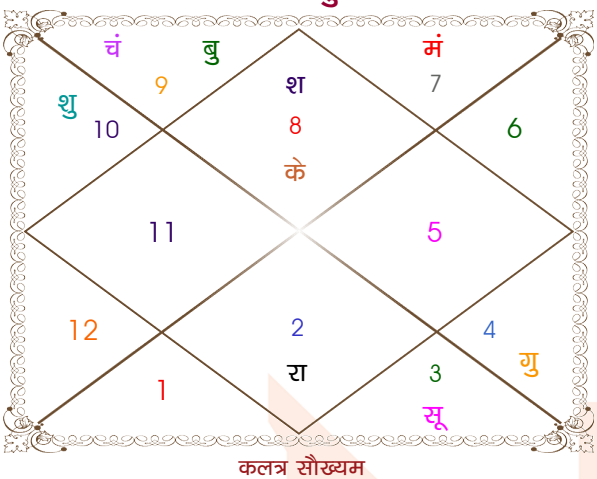

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

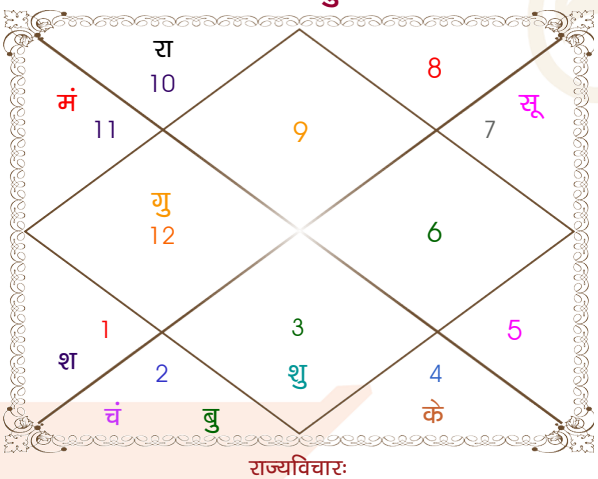

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

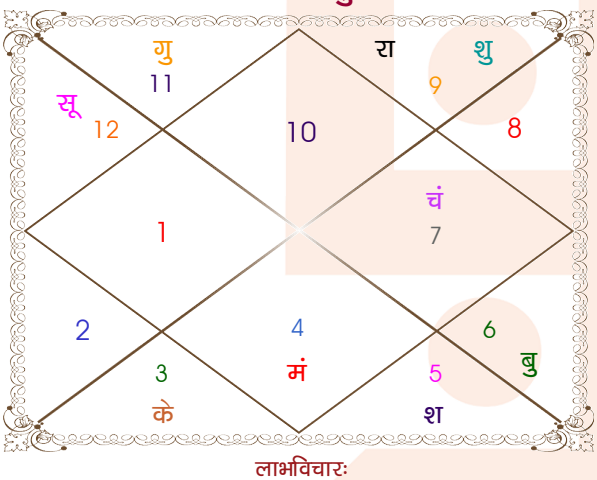

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

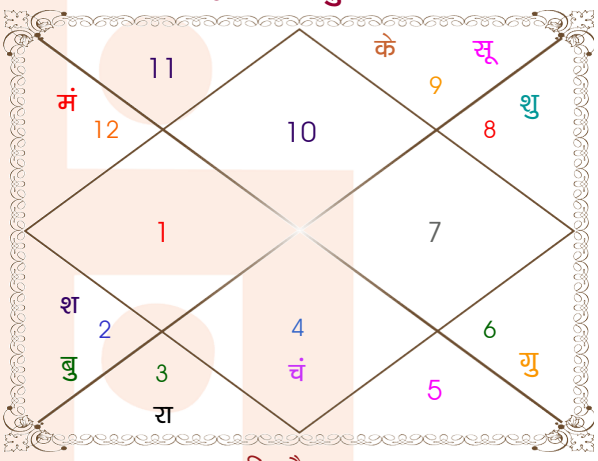

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

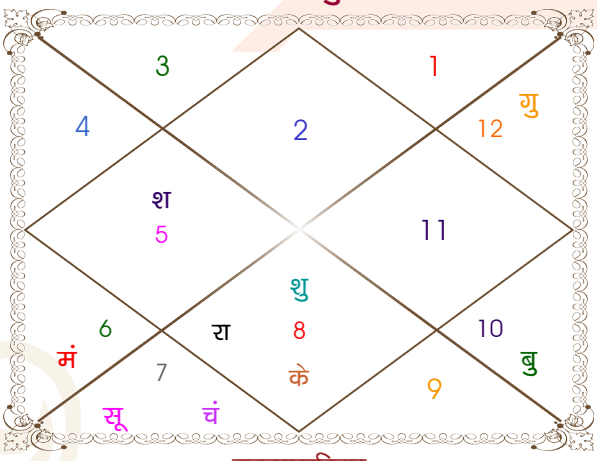

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

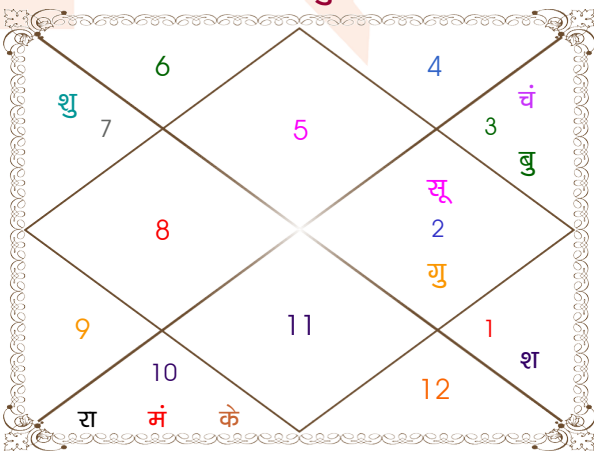

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

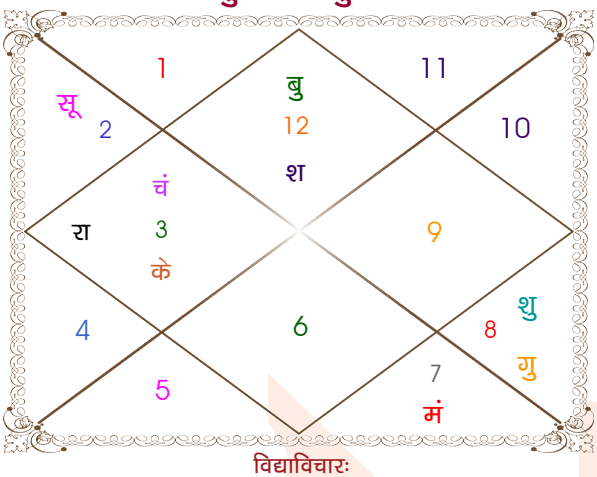

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

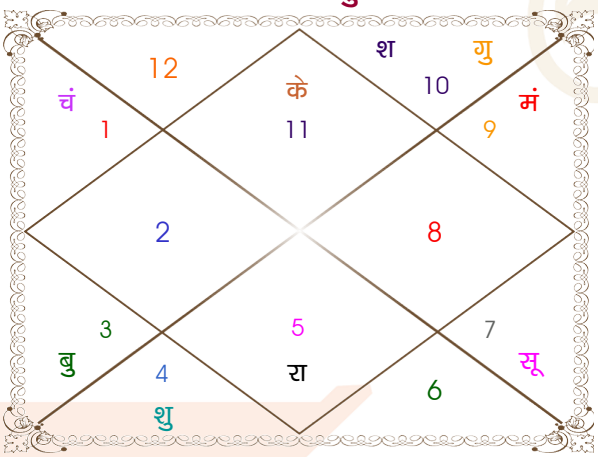

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

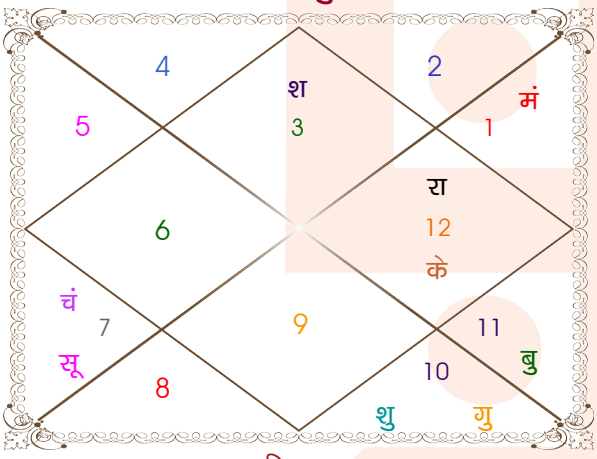

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

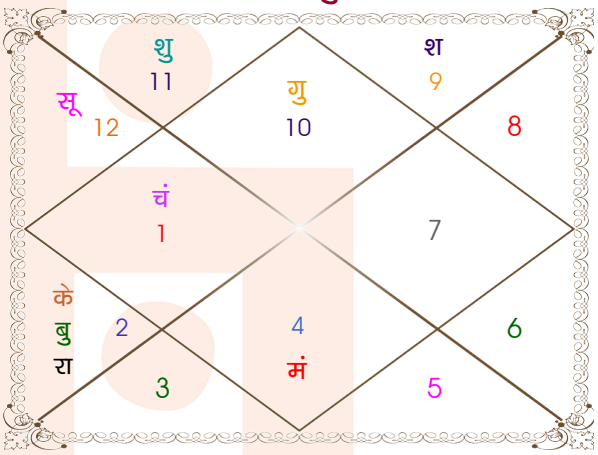

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

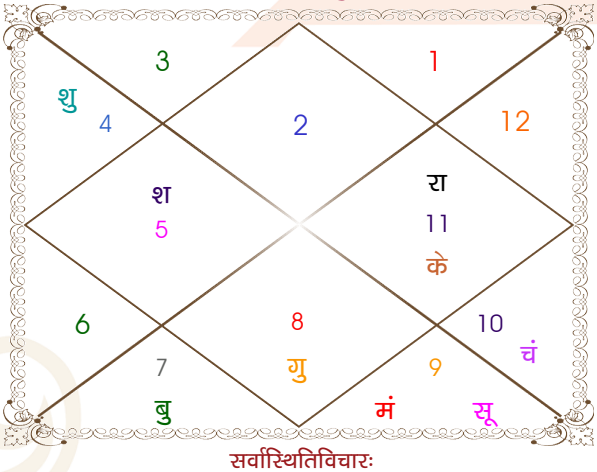

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

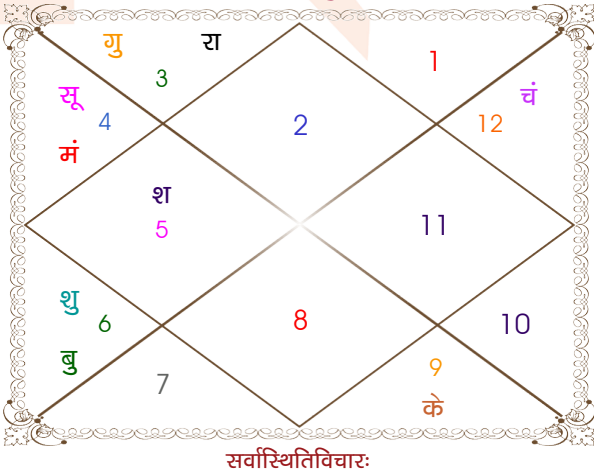

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मेष	कुंभ	सिंह	कुंभ	कुंभ	मक	मीन	सिंह	मक	कर्क
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	धनु	तुला	मेष	कुंभ	कुंभ	कन्या	वृश्चि	मेष	वृष	वृश्चि
चतुर्थांश	मक	वृश्चि	वृष	कुंभ	वृष	कर्क	कन्या	वृष	मेष	तुला
सप्तमांश	कन्या	सिंह	कुंभ	कुंभ	मेष	वृश्चि	मक	मक	तुला	मेष
नवमांश	वृश्चि	मिथु	धनु	तुला	धनु	कर्क	मक	वृश्चि	वृष	वृश्चि
दशमांश	धनु	तुला	वृष	कुंभ	वृष	मीन	मिथु	मेष	मक	कर्क
द्वादशांश	मक	धनु	कर्क	मीन	वृष	कन्या	वृश्चि	वृष	मिथु	धनु
षोडशांश	वृष	तुला	तुला	कन्या	मक	मीन	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	वृश्चि
विंशांश	सिंह	वृष	मिथु	मक	मिथु	वृष	तुला	मेष	मक	मक
चतुर्विंशांश	मीन	वृष	मिथु	तुला	मीन	वृश्चि	वृश्चि	मीन	मिथु	मिथु
सप्तविंशांश	कुंभ	तुला	मेष	धनु	मिथु	मक	कर्क	मक	सिंह	कुंभ
त्रिंशांश	मिथु	तुला	तुला	मेष	कुंभ	मक	मक	मिथु	मीन	मीन
खवेदांश	मक	मीन	मेष	कर्क	वृष	मक	कुंभ	धनु	वृष	वृष
अक्षवेदांश	वृष	धनु	मक	धनु	तुला	वृश्चि	कर्क	सिंह	कुंभ	कुंभ
षष्ट्यंश	वृष	कर्क	मीन	कर्क	कन्या	मिथु	कन्या	सिंह	मिथु	धनु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	1 ---	1 ---	1 ---
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
मंगल	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
गुरु	1 ---	1 ---	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शुक्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
शनि	0 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
राहु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	8.55	10.50	11.05	10.40	9.75	13.00	5.75	13.45	9.55
सप्तवर्ग	10.13	10.35	10.85	10.20	10.90	12.50	7.63	13.85	9.55
दशवर्ग	10.38	9.40	10.23	12.73	12.03	14.48	6.88	12.83	8.80
षोडशवर्ग	9.53	8.65	10.50	13.18	11.43	13.88	6.35	12.85	9.10

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	सम	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	46	22	58	12	5	58	41
सप्तवर्गज बल	81	83	86	60	75	75	53
ओजयुग्मक बल	30	0	30	30	0	30	15
केन्द्र बल	30	30	30	30	60	15	30
द्रेष्काण बल	0	15	15	0	0	15	0
कुल स्थान बल	186	149	220	132	140	193	139
कुल दिग्बल	45	45	53	35	29	23	40
नतोन्नत बल	46	14	14	60	46	46	14
पक्ष बल	0	119	0	0	60	60	0
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	30	0	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	50	26	14	43	9	38	24
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	126	159	43	209	234	143	38
कुल चेष्टाबल	0	0	10	6	11	53	58
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	1	-26	-2	-2	1	1	-27
कुल षट्बल	418	379	341	405	450	456	257
रूप षट्बल	7.0	6.3	5.7	6.8	7.5	7.6	4.3
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.1	1.1	1.0	1.2	1.4	0.9
संबंधित पद	1	5	4	6	3	2	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	35.02	36.07	23.94	8.49	7.79	55.64	49.11
कष्ट फल	21.84	3.36	9.06	50.99	51.54	3.63	5.70

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	341	456	405	379	418	405	456	341	450	257	257	450
भावदिग्बल	30	20	40	60	10	10	0	50	50	60	40	20
भावदृष्टि बल	61	51	44	48	82	60	22	-1	3	2	-2	19
कुल भाव बल	432	527	489	487	510	475	478	390	503	319	295	488
रूप भाव बल	7.2	8.8	8.2	8.1	8.5	7.9	8.0	6.5	8.4	5.3	4.9	8.1
संबंधित पद	9	1	4	6	2	8	7	10	3	11	12	5

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

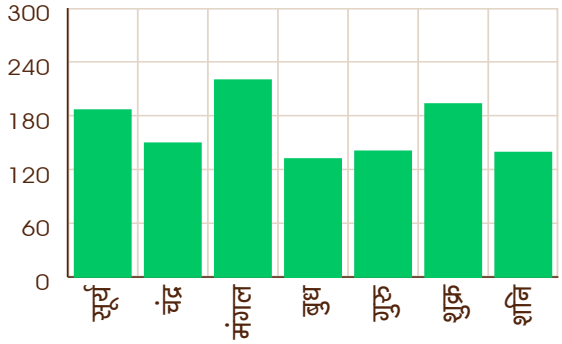

दिग्बल

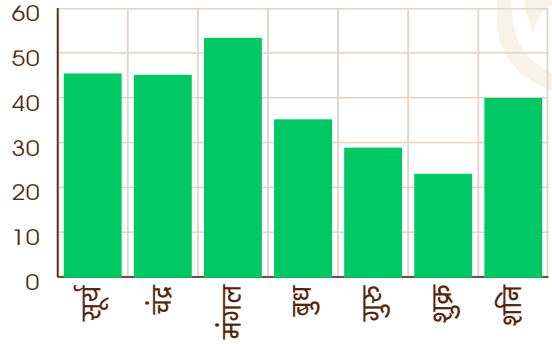

कालबल

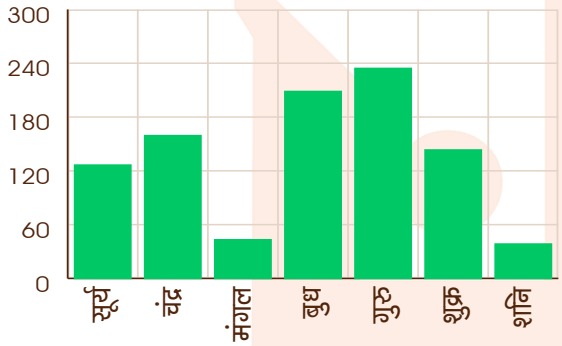

चेष्टाबल

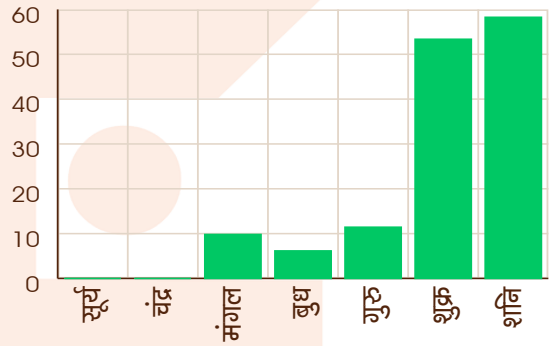

नैसर्गिक बल

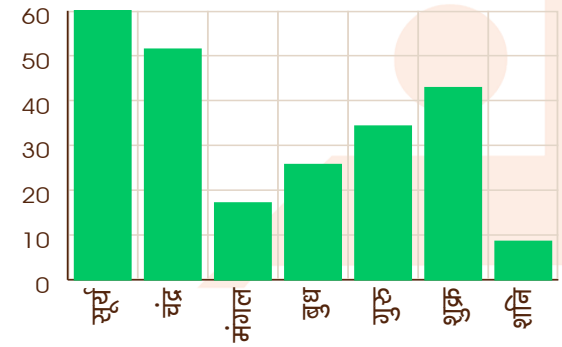

दृग्बल

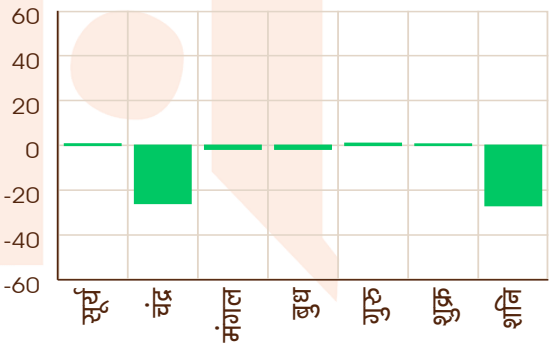

रूप षट्बल

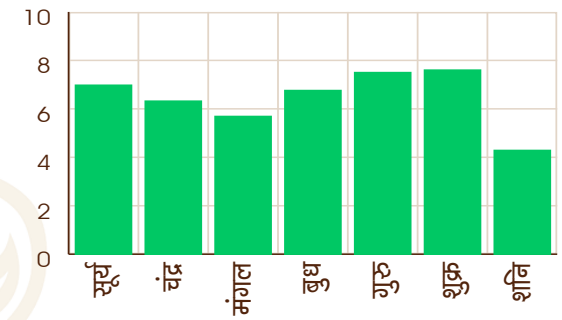

न्यूनतम षट्बल

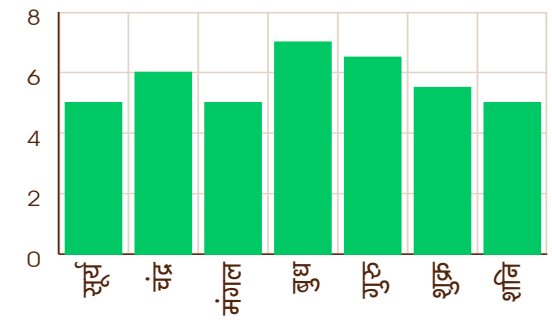

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

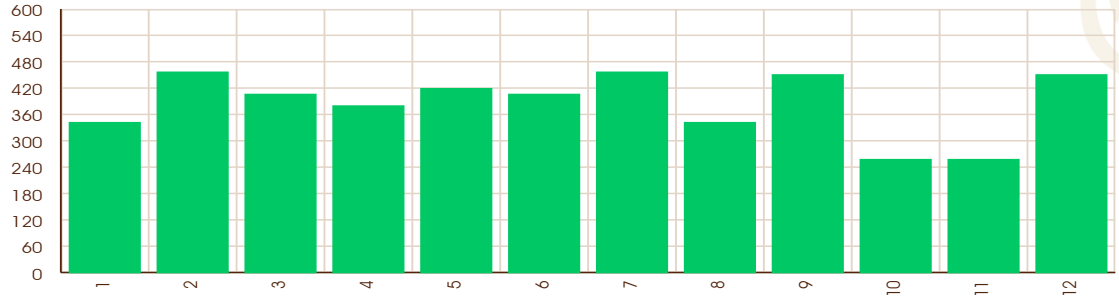

भावदिग्बल

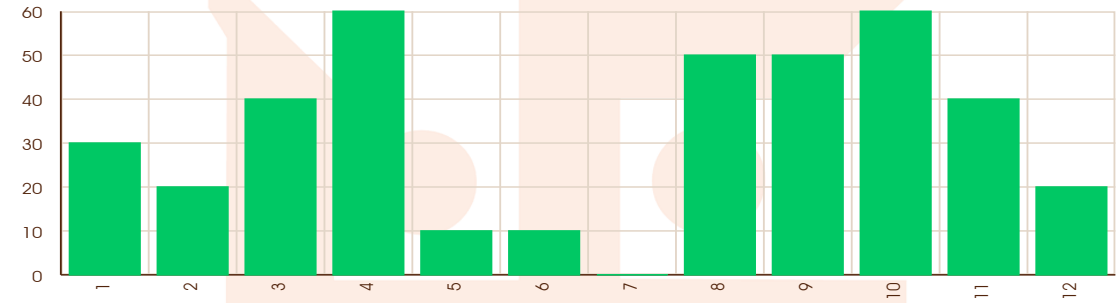

भावदृष्टि बल

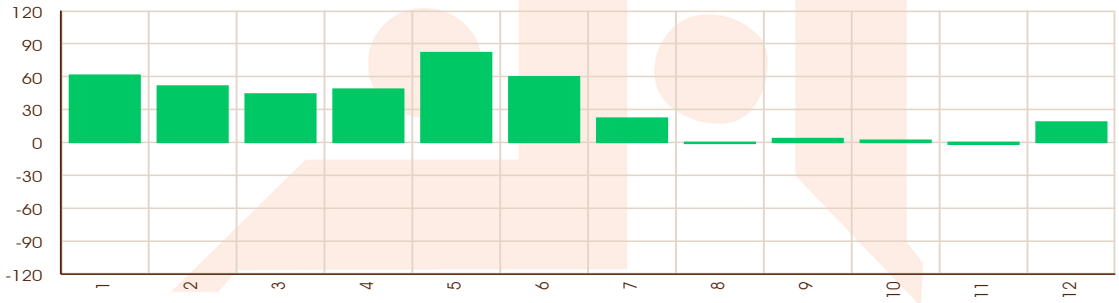

भाव बल

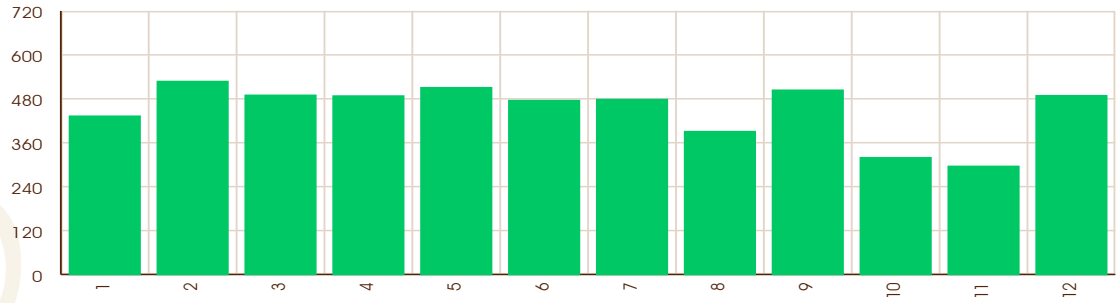

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

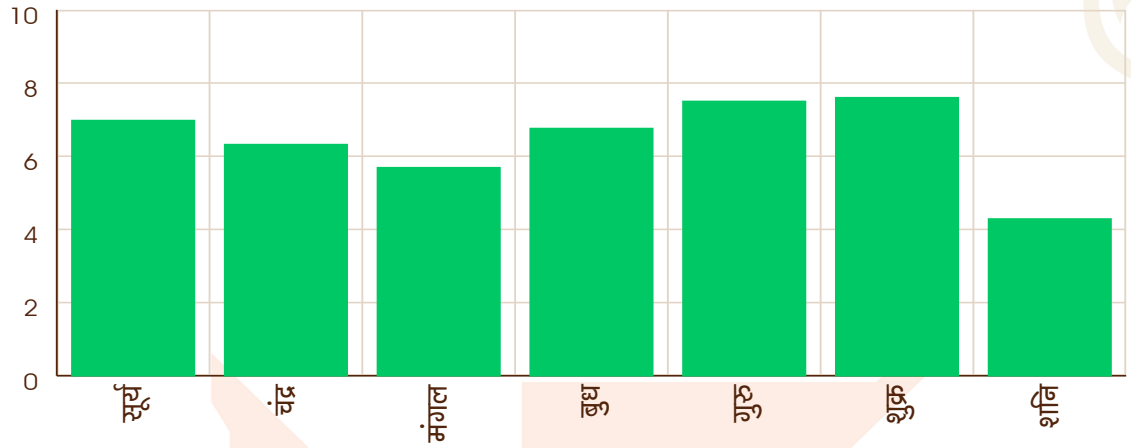

इष्ट - कष्ट फल

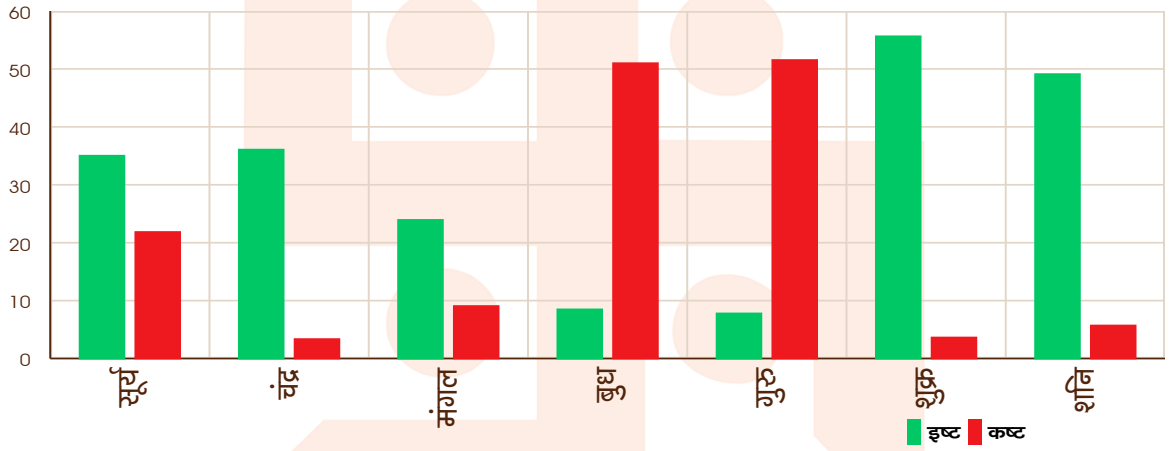

रूप भाव बल

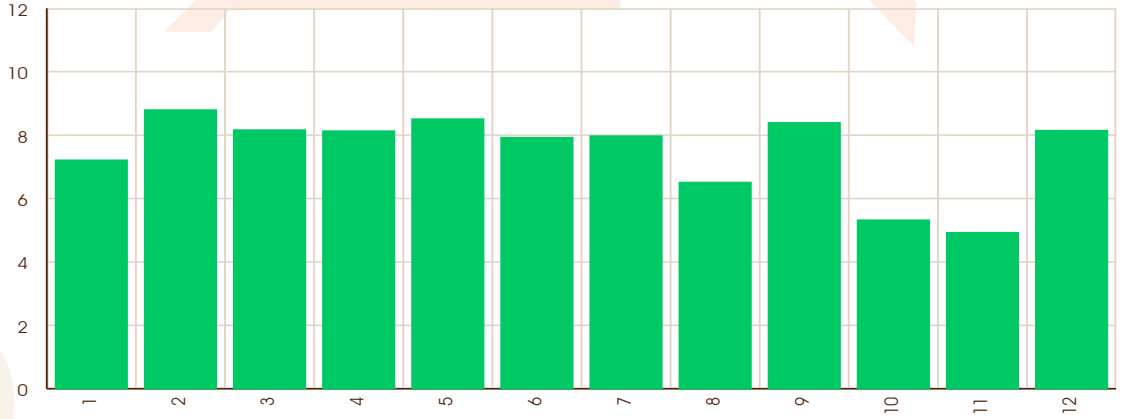

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मेष	24:50:25	--	--	भरणी	4	2
गुलिक	गु	मिथु	08:08:48	--	--	आर्द्रा	1	6
काल	का	मिथु	27:51:03	--	--	पुनर्वसु	3	7
मृत्यु	मृ	सिंह	07:40:09	--	--	मघा	3	10
यमघंटक	यम	मेष	22:34:53	--	--	भरणी	3	2
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मीन	25:24:41	--	--	रेवती	3	27
धूम	धू	कर्क	10:04:16	--	--	पुष्य	3	8
व्यतिपात	व्य	धनु	19:55:44	--	--	पूर्वाषाढ़ा	2	20
परिवेश	परि	मिथु	19:55:44	उच्च	--	आर्द्रा	4	6
इन्द्रचाप	इ	मक	10:04:16	--	--	श्रवण	1	22
उपकेतु	उप	मक	26:44:16	--	--	धनिष्ठा	2	23

प्राणपद	:	वृष	29:20:11	कारकाँश लग्न	:	धनु	08:36:37
भाव लग्न	:	मेष	13:22:04	होरा लग्न	:	वृष	29:59:52
घटी लग्न	:	तुला	19:53:15	वर्णद लग्न	:	मिथु	24:50:16

उपग्रह कुंडली

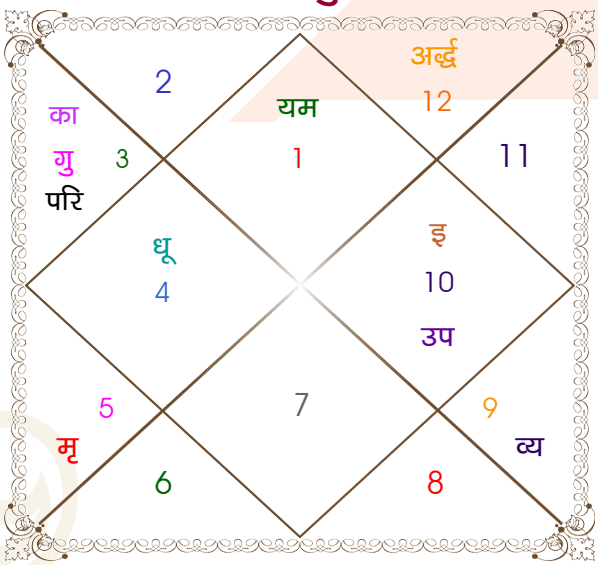

आरूढ़ कुंडली

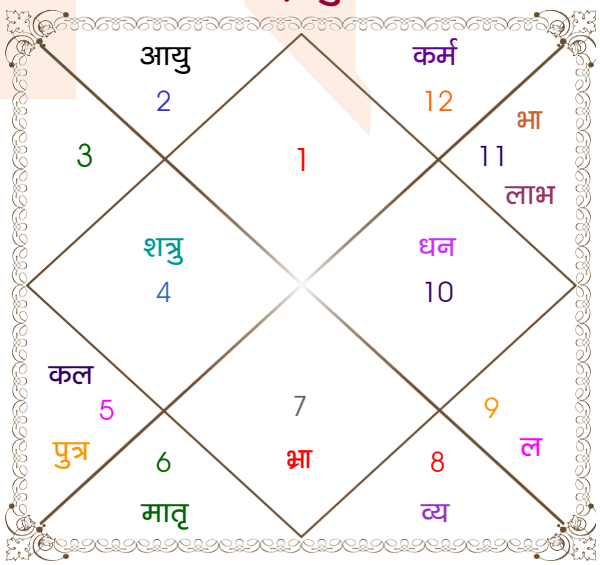

षन्नाडी चक्र

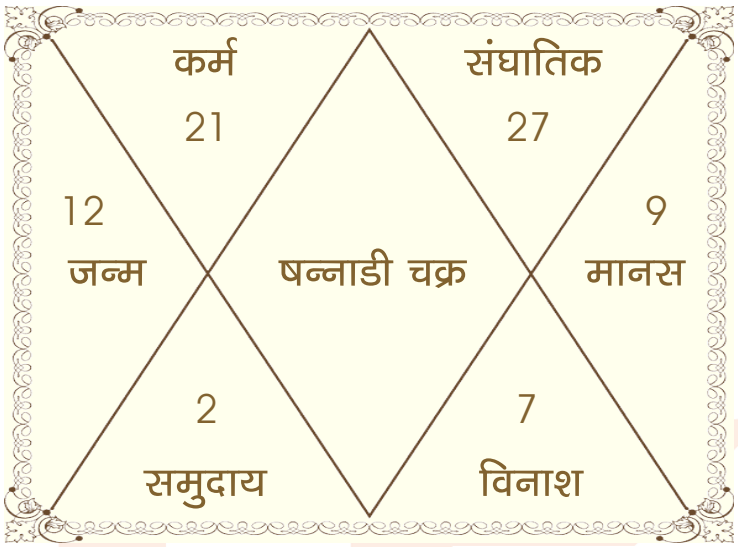

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	5	4	2	5	5	2	4	6	4	5	3	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
मंगल	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
कुल	4	4	3	5	5	5	4	1	5	3	6	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	4	2	4	2	6	2	3	2	3	4	4	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	4	4	4	5	6	4	3	4	4	7	4	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
कुल	4	6	4	5	4	2	5	5	4	5	5	7	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	3	6	5	5	5	3	3	6	5	7	3	1	52

शनि का अष्टकवर्ग

	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
कुल	2	3	3	4	5	6	3	1	2	2	5	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
गुरु	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
चंद्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	6	5	6	1	3	4	6	3	5	4	2	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	5	3	2	3	3	4	5	6	3	1	39
गुरु	5	4	2	5	5	4	5	5	7	4	6	4	56
मंगल	4	2	6	2	3	2	3	4	4	3	4	2	39
सूर्य	2	5	5	2	4	6	4	5	3	3	5	4	48
शुक्र	6	5	5	5	3	3	6	5	7	3	1	3	52
बुध	4	5	6	4	3	4	4	7	4	5	4	4	54
चंद्र	5	3	6	4	4	4	3	5	5	5	4	1	49
बिन्दु	28	26	35	25	24	26	28	35	35	29	27	19	337
रेखा	28	30	21	31	32	30	28	21	21	27	29	37	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	2	2	0	1	0	3	3	4	0	0	15
गुरु	0	0	0	1	0	0	3	1	2	0	4	0	11
मंगल	1	0	3	0	0	0	0	2	1	1	1	0	9
सूर्य	0	2	1	0	2	3	0	3	1	0	1	2	15
शुक्र	3	2	4	2	0	0	5	2	4	0	0	0	22
बुध	1	1	2	0	0	0	0	3	1	1	0	0	9
चंद्र	1	0	3	3	0	1	0	4	1	2	1	0	16
रेखा	6	5	15	8	2	5	8	18	13	8	7	2	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	2	0	1	0	3	3	4	0	0	14
गुरु	0	0	0	1	0	0	3	1	2	0	4	0	11
मंगल	1	0	3	0	0	0	0	1	1	1	1	0	8
सूर्य	0	2	1	0	2	2	0	3	0	0	1	2	13
शुक्र	1	2	4	2	0	0	3	2	4	0	0	0	18
बुध	1	1	2	0	0	0	0	2	1	1	0	0	8
चंद्र	1	0	2	3	0	1	0	3	1	2	1	0	14
रेखा	4	5	13	8	2	4	6	15	12	8	7	2	86

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	117	94	64	63	95	140	92
ग्रह पिंड	52	38	28	10	72	0	40
शोध्य पिंड	169	132	92	73	167	140	132

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

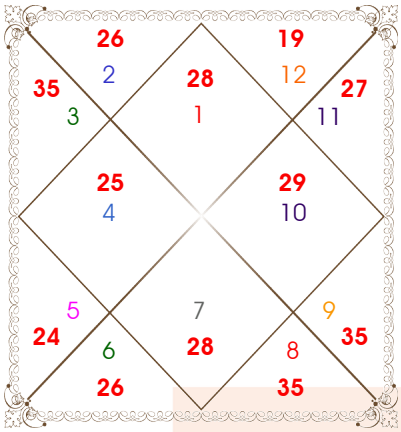

सूर्य का अष्टकवर्ग

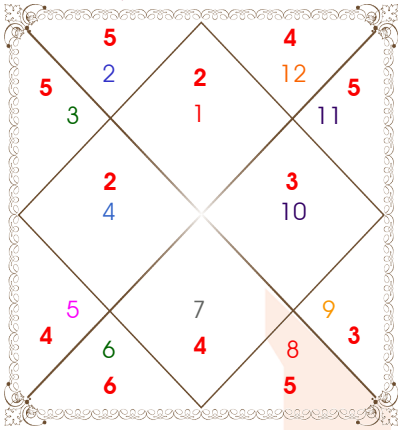

चंद्र का अष्टकवर्ग

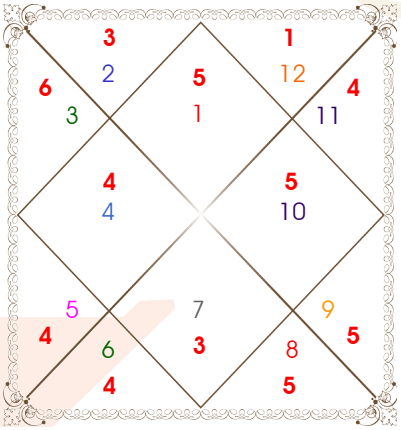

मंगल का अष्टकवर्ग

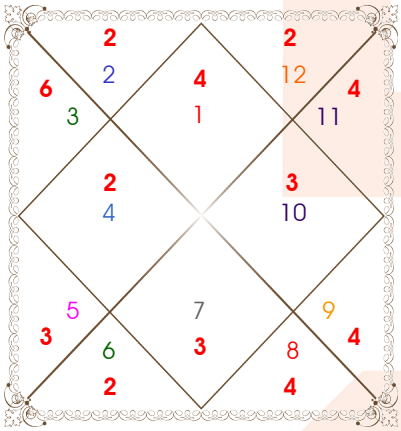

बुध का अष्टकवर्ग

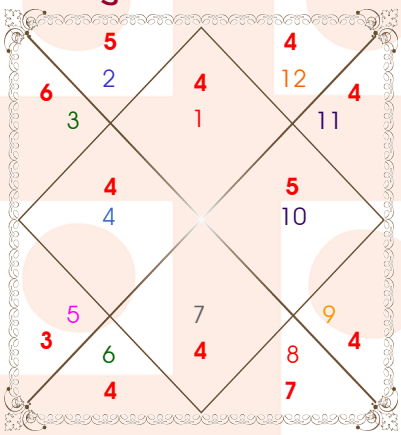

गुरू का अष्टकवर्ग

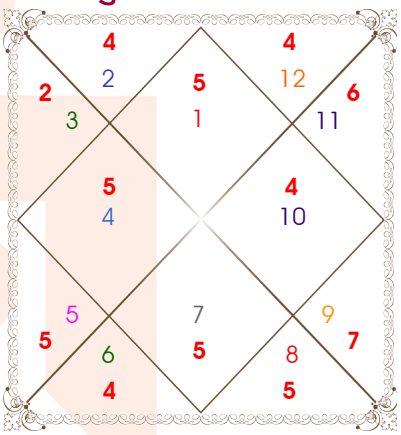

शुक्र का अष्टकवर्ग

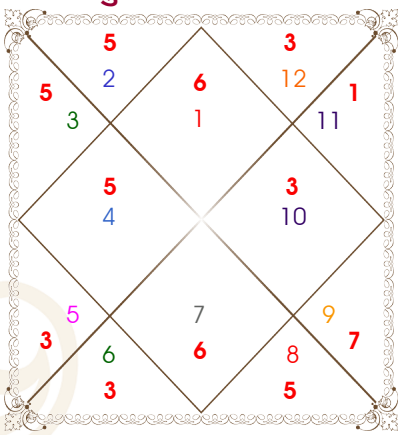

शनि का अष्टकवर्ग

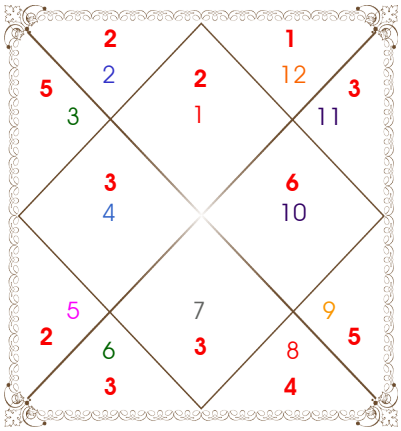

लग्न का अष्टकवर्ग

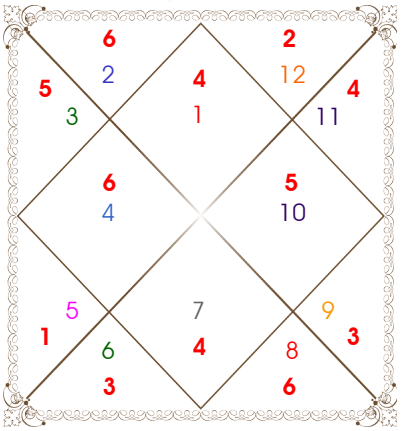

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

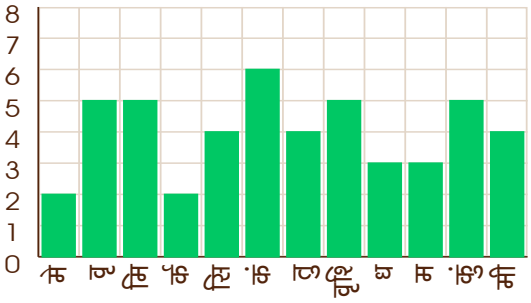

चन्द्र

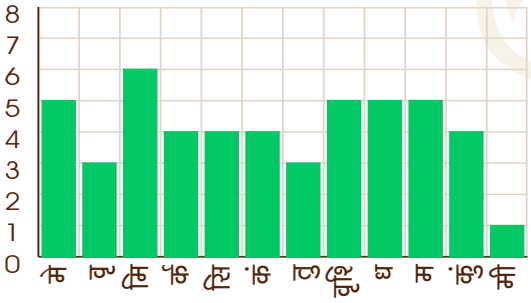

मंगल

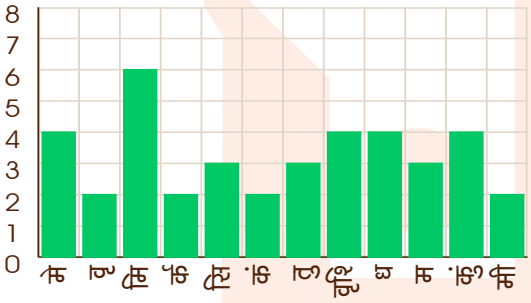

बुध

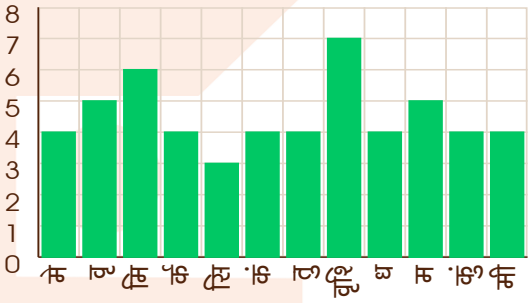

गुरु

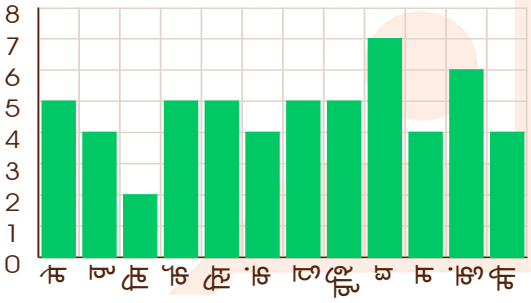

शुक्र

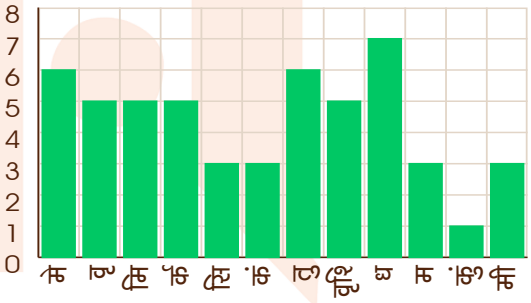

शनि

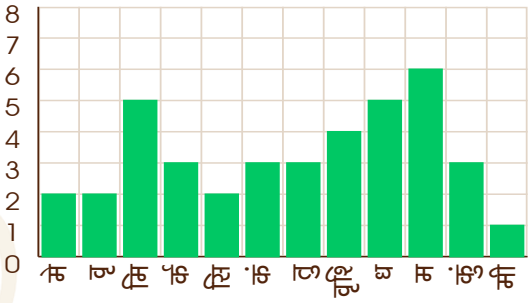

लग्न

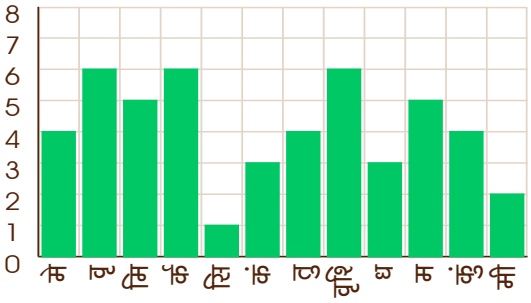

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

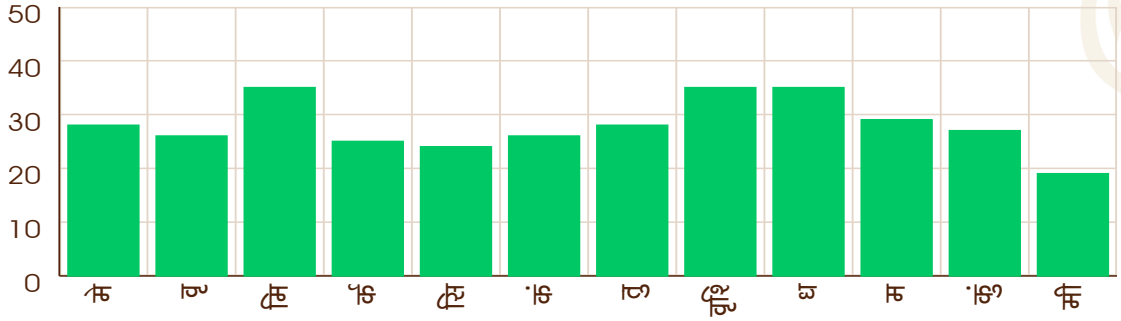

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

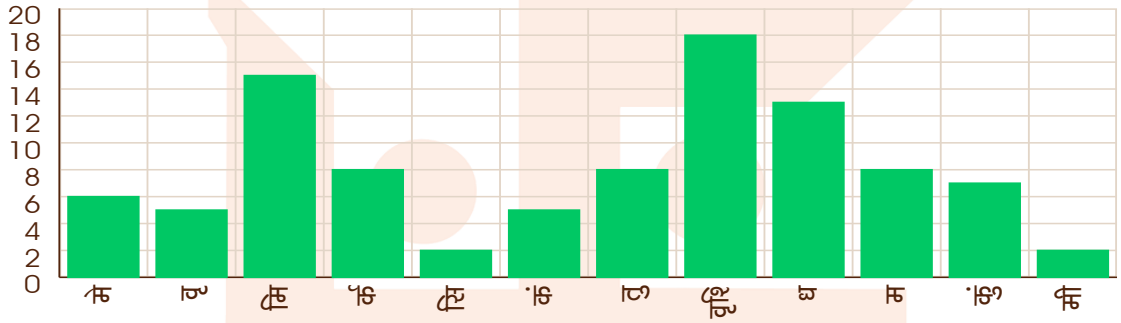

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

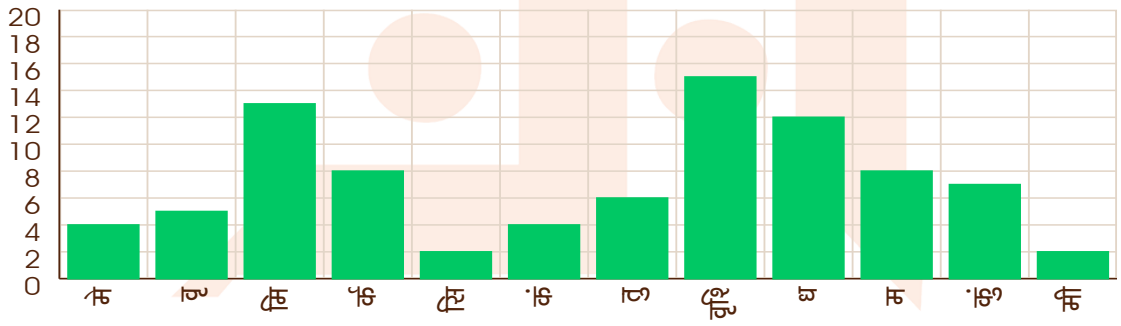

शोध्य पिंड

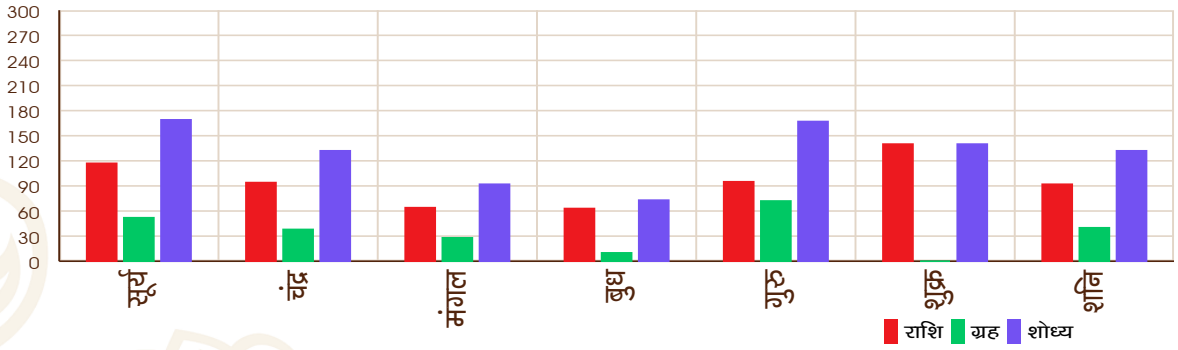

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 6 मास 25 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
11/03/2009		05/10/2014		05/10/2024		05/10/2031		05/10/2049	
05/10/2014		05/10/2024		05/10/2031		05/10/2049		05/10/2065	
	11/03/2009	चंद्र	06/08/2015	मंगल	03/03/2025	राहु	18/06/2034	गुरु	23/11/2051
चंद्र	24/07/2009	मंगल	06/03/2016	राहु	21/03/2026	गुरु	10/11/2036	शनि	05/06/2054
मंगल	29/11/2009	राहु	04/09/2017	गुरु	25/02/2027	शनि	17/09/2039	बुध	10/09/2056
राहु	23/10/2010	गुरु	04/01/2019	शनि	05/04/2028	बुध	06/04/2042	केतु	17/08/2057
गुरु	12/08/2011	शनि	05/08/2020	बुध	02/04/2029	केतु	24/04/2043	शुक्र	17/04/2060
शनि	24/07/2012	बुध	04/01/2022	केतु	29/08/2029	शुक्र	24/04/2046	सूर्य	03/02/2061
बुध	30/05/2013	केतु	05/08/2022	शुक्र	30/10/2030	सूर्य	19/03/2047	चंद्र	05/06/2062
केतु	05/10/2013	शुक्र	05/04/2024	सूर्य	06/03/2031	चंद्र	16/09/2048	मंगल	12/05/2063
शुक्र	05/10/2014	सूर्य	05/10/2024	चंद्र	05/10/2031	मंगल	05/10/2049	राहु	05/10/2065

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
05/10/2065		05/10/2084		06/10/2101		06/10/2108		06/10/2128	
05/10/2084		06/10/2101		06/10/2108		06/10/2128		00/00/0000	
शनि	08/10/2068	बुध	03/03/2087	केतु	04/03/2102	शुक्र	05/02/2112	सूर्य	23/01/2129
बुध	18/06/2071	केतु	29/02/2088	शुक्र	04/05/2103	सूर्य	04/02/2113	चंद्र	12/03/2129
केतु	27/07/2072	शुक्र	29/12/2090	सूर्य	09/09/2103	चंद्र	06/10/2114		00/00/0000
शुक्र	26/09/2075	सूर्य	05/11/2091	चंद्र	09/04/2104	मंगल	06/12/2115		00/00/0000
सूर्य	07/09/2076	चंद्र	05/04/2093	मंगल	05/09/2104	राहु	06/12/2118		00/00/0000
चंद्र	09/04/2078	मंगल	02/04/2094	राहु	24/09/2105	गुरु	06/08/2121		00/00/0000
मंगल	18/05/2079	राहु	20/10/2096	गुरु	31/08/2106	शनि	06/10/2124		00/00/0000
राहु	24/03/2082	गुरु	26/01/2099	शनि	09/10/2107	बुध	07/08/2127		00/00/0000
गुरु	05/10/2084	शनि	06/10/2101	बुध	06/10/2108	केतु	06/10/2128		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 5 वर्ष 6 मा 26 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
11/03/2009		24/07/2009		29/11/2009		23/10/2010		12/08/2011	
24/07/2009		29/11/2009		23/10/2010		12/08/2011		24/07/2012	
	00/00/0000	मंगल	31/07/2009	राहु	17/01/2010	गुरु	01/12/2010	शनि	06/10/2011
	11/03/2009	राहु	19/08/2009	गुरु	02/03/2010	शनि	17/01/2011	बुध	24/11/2011
राहु	17/03/2009	गुरु	06/09/2009	शनि	23/04/2010	बुध	27/02/2011	केतु	14/12/2011
गुरु	10/04/2009	शनि	26/09/2009	बुध	08/06/2010	केतु	16/03/2011	शुक्र	10/02/2012
शनि	09/05/2009	बुध	14/10/2009	केतु	28/06/2010	शुक्र	04/05/2011	सूर्य	27/02/2012
बुध	04/06/2009	केतु	21/10/2009	शुक्र	21/08/2010	सूर्य	18/05/2011	चंद्र	27/03/2012
केतु	14/06/2009	शुक्र	12/11/2009	सूर्य	07/09/2010	चंद्र	12/06/2011	मंगल	16/04/2012
शुक्र	15/07/2009	सूर्य	18/11/2009	चंद्र	04/10/2010	मंगल	29/06/2011	राहु	07/06/2012
सूर्य	24/07/2009	चंद्र	29/11/2009	मंगल	23/10/2010	राहु	12/08/2011	गुरु	24/07/2012

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
24/07/2012		30/05/2013		05/10/2013		05/10/2014		06/08/2015	
30/05/2013		05/10/2013		05/10/2014		06/08/2015		06/03/2016	
बुध	06/09/2012	केतु	07/06/2013	शुक्र	05/12/2013	चंद्र	31/10/2014	मंगल	18/08/2015
केतु	24/09/2012	शुक्र	28/06/2013	सूर्य	23/12/2013	मंगल	17/11/2014	राहु	19/09/2015
शुक्र	14/11/2012	सूर्य	04/07/2013	चंद्र	22/01/2014	राहु	02/01/2015	गुरु	17/10/2015
सूर्य	30/11/2012	चंद्र	15/07/2013	मंगल	13/02/2014	गुरु	12/02/2015	शनि	20/11/2015
चंद्र	26/12/2012	मंगल	22/07/2013	राहु	09/04/2014	शनि	01/04/2015	बुध	20/12/2015
मंगल	13/01/2013	राहु	11/08/2013	गुरु	27/05/2014	बुध	14/05/2015	केतु	02/01/2016
राहु	01/03/2013	गुरु	28/08/2013	शनि	24/07/2014	केतु	01/06/2015	शुक्र	06/02/2016
गुरु	11/04/2013	शनि	17/09/2013	बुध	14/09/2014	शुक्र	21/07/2015	सूर्य	17/02/2016
शनि	30/05/2013	बुध	05/10/2013	केतु	05/10/2014	सूर्य	06/08/2015	चंद्र	06/03/2016

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
06/03/2016		04/09/2017		04/01/2019		05/08/2020		04/01/2022	
04/09/2017		04/01/2019		05/08/2020		04/01/2022		05/08/2022	
राहु	27/05/2016	गुरु	08/11/2017	शनि	06/04/2019	बुध	17/10/2020	केतु	17/01/2022
गुरु	08/08/2016	शनि	25/01/2018	बुध	27/06/2019	केतु	16/11/2020	शुक्र	21/02/2022
शनि	03/11/2016	बुध	04/04/2018	केतु	31/07/2019	शुक्र	11/02/2021	सूर्य	04/03/2022
बुध	19/01/2017	केतु	02/05/2018	शुक्र	04/11/2019	सूर्य	08/03/2021	चंद्र	22/03/2022
केतु	20/02/2017	शुक्र	22/07/2018	सूर्य	03/12/2019	चंद्र	21/04/2021	मंगल	03/04/2022
शुक्र	22/05/2017	सूर्य	15/08/2018	चंद्र	20/01/2020	मंगल	21/05/2021	राहु	05/05/2022
सूर्य	19/06/2017	चंद्र	25/09/2018	मंगल	23/02/2020	राहु	06/08/2021	गुरु	02/06/2022
चंद्र	04/08/2017	मंगल	23/10/2018	राहु	20/05/2020	गुरु	14/10/2021	शनि	06/07/2022
मंगल	04/09/2017	राहु	04/01/2019	गुरु	05/08/2020	शनि	04/01/2022	बुध	05/08/2022

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
05/08/2022		05/04/2024		05/10/2024		03/03/2025		21/03/2026	
05/04/2024		05/10/2024		03/03/2025		21/03/2026		25/02/2027	
शुक्र	15/11/2022	सूर्य	14/04/2024	मंगल	13/10/2024	राहु	29/04/2025	गुरु	06/05/2026
सूर्य	15/12/2022	चंद्र	29/04/2024	राहु	05/11/2024	गुरु	19/06/2025	शनि	29/06/2026
चंद्र	04/02/2023	मंगल	10/05/2024	गुरु	25/11/2024	शनि	19/08/2025	बुध	16/08/2026
मंगल	11/03/2023	राहु	06/06/2024	शनि	18/12/2024	बुध	13/10/2025	केतु	05/09/2026
राहु	11/06/2023	गुरु	01/07/2024	बुध	08/01/2025	केतु	04/11/2025	शुक्र	01/11/2026
गुरु	31/08/2023	शनि	30/07/2024	केतु	17/01/2025	शुक्र	07/01/2026	सूर्य	18/11/2026
शनि	05/12/2023	बुध	25/08/2024	शुक्र	11/02/2025	सूर्य	26/01/2026	चंद्र	16/12/2026
बुध	01/03/2024	केतु	04/09/2024	सूर्य	18/02/2025	चंद्र	27/02/2026	मंगल	05/01/2027
केतु	05/04/2024	शुक्र	05/10/2024	चंद्र	03/03/2025	मंगल	21/03/2026	राहु	25/02/2027

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
25/02/2027		05/04/2028		02/04/2029		29/08/2029		30/10/2030	
05/04/2028		02/04/2029		29/08/2029		30/10/2030		06/03/2031	
शनि	30/04/2027	बुध	26/05/2028	केतु	11/04/2029	शुक्र	08/11/2029	सूर्य	05/11/2030
बुध	27/06/2027	केतु	16/06/2028	शुक्र	06/05/2029	सूर्य	30/11/2029	चंद्र	16/11/2030
केतु	20/07/2027	शुक्र	16/08/2028	सूर्य	13/05/2029	चंद्र	04/01/2030	मंगल	23/11/2030
शुक्र	26/09/2027	सूर्य	03/09/2028	चंद्र	26/05/2029	मंगल	29/01/2030	राहु	12/12/2030
सूर्य	16/10/2027	चंद्र	03/10/2028	मंगल	03/06/2029	राहु	03/04/2030	गुरु	29/12/2030
चंद्र	19/11/2027	मंगल	24/10/2028	राहु	26/06/2029	गुरु	30/05/2030	शनि	18/01/2031
मंगल	12/12/2027	राहु	18/12/2028	गुरु	16/07/2029	शनि	05/08/2030	बुध	06/02/2031
राहु	11/02/2028	गुरु	04/02/2029	शनि	08/08/2029	बुध	05/10/2030	केतु	13/02/2031
गुरु	05/04/2028	शनि	02/04/2029	बुध	29/08/2029	केतु	30/10/2030	शुक्र	06/03/2031

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
06/03/2031		05/10/2031		18/06/2034		10/11/2036		17/09/2039	
05/10/2031		18/06/2034		10/11/2036		17/09/2039		06/04/2042	
चंद्र	24/03/2031	राहु	01/03/2032	गुरु	12/10/2034	शनि	24/04/2037	बुध	27/01/2040
मंगल	06/04/2031	गुरु	11/07/2032	शनि	28/02/2035	बुध	18/09/2037	केतु	21/03/2040
राहु	07/05/2031	शनि	14/12/2032	बुध	02/07/2035	केतु	18/11/2037	शुक्र	24/08/2040
गुरु	05/06/2031	बुध	03/05/2033	केतु	23/08/2035	शुक्र	11/05/2038	सूर्य	09/10/2040
शनि	09/07/2031	केतु	29/06/2033	शुक्र	16/01/2036	सूर्य	02/07/2038	चंद्र	26/12/2040
बुध	08/08/2031	शुक्र	11/12/2033	सूर्य	29/02/2036	चंद्र	26/09/2038	मंगल	18/02/2041
केतु	20/08/2031	सूर्य	29/01/2034	चंद्र	12/05/2036	मंगल	26/11/2038	राहु	08/07/2041
शुक्र	25/09/2031	चंद्र	21/04/2034	मंगल	02/07/2036	राहु	01/05/2039	गुरु	09/11/2041
सूर्य	05/10/2031	मंगल	18/06/2034	राहु	10/11/2036	गुरु	17/09/2039	शनि	06/04/2042

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
06/04/2042		24/04/2043		24/04/2046		19/03/2047		16/09/2048	
24/04/2043		24/04/2046		19/03/2047		16/09/2048		05/10/2049	
केतु	28/04/2042	शुक्र	24/10/2043	सूर्य	10/05/2046	चंद्र	03/05/2047	मंगल	09/10/2048
शुक्र	01/07/2042	सूर्य	17/12/2043	चंद्र	07/06/2046	मंगल	04/06/2047	राहु	05/12/2048
सूर्य	20/07/2042	चंद्र	18/03/2044	मंगल	26/06/2046	राहु	25/08/2047	गुरु	25/01/2049
चंद्र	21/08/2042	मंगल	21/05/2044	राहु	14/08/2046	गुरु	06/11/2047	शनि	27/03/2049
मंगल	12/09/2042	राहु	01/11/2044	गुरु	27/09/2046	शनि	01/02/2048	बुध	20/05/2049
राहु	09/11/2042	गुरु	27/03/2045	शनि	18/11/2046	बुध	19/04/2048	केतु	12/06/2049
गुरु	30/12/2042	शनि	17/09/2045	बुध	04/01/2047	केतु	21/05/2048	शुक्र	15/08/2049
शनि	01/03/2043	बुध	19/02/2046	केतु	23/01/2047	शुक्र	20/08/2048	सूर्य	03/09/2049
बुध	24/04/2043	केतु	24/04/2046	शुक्र	19/03/2047	सूर्य	16/09/2048	चंद्र	05/10/2049

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
05/10/2049		23/11/2051		05/06/2054		10/09/2056		17/08/2057	
23/11/2051		05/06/2054		10/09/2056		17/08/2057		17/04/2060	
गुरु	17/01/2050	शनि	18/04/2052	बुध	01/10/2054	केतु	30/09/2056	शुक्र	27/01/2058
शनि	20/05/2050	बुध	27/08/2052	केतु	18/11/2054	शुक्र	26/11/2056	सूर्य	16/03/2058
बुध	08/09/2050	केतु	20/10/2052	शुक्र	05/04/2055	सूर्य	13/12/2056	चंद्र	05/06/2058
केतु	23/10/2050	शुक्र	23/03/2053	सूर्य	16/05/2055	चंद्र	10/01/2057	मंगल	01/08/2058
शुक्र	02/03/2051	सूर्य	08/05/2053	चंद्र	24/07/2055	मंगल	30/01/2057	राहु	25/12/2058
सूर्य	10/04/2051	चंद्र	24/07/2053	मंगल	11/09/2055	राहु	22/03/2057	गुरु	04/05/2059
चंद्र	14/06/2051	मंगल	16/09/2053	राहु	13/01/2056	गुरु	07/05/2057	शनि	05/10/2059
मंगल	29/07/2051	राहु	02/02/2054	गुरु	02/05/2056	शनि	30/06/2057	बुध	20/02/2060
राहु	23/11/2051	गुरु	05/06/2054	शनि	10/09/2056	बुध	17/08/2057	केतु	17/04/2060

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
17/04/2060		03/02/2061		05/06/2062		12/05/2063		05/10/2065	
03/02/2061		05/06/2062		12/05/2063		05/10/2065		08/10/2068	
सूर्य	02/05/2060	चंद्र	16/03/2061	मंगल	25/06/2062	राहु	21/09/2063	शनि	28/03/2066
चंद्र	26/05/2060	मंगल	13/04/2061	राहु	15/08/2062	गुरु	16/01/2064	बुध	31/08/2066
मंगल	12/06/2060	राहु	25/06/2061	गुरु	30/09/2062	शनि	02/06/2064	केतु	03/11/2066
राहु	26/07/2060	गुरु	29/08/2061	शनि	23/11/2062	बुध	05/10/2064	शुक्र	05/05/2067
गुरु	03/09/2060	शनि	14/11/2061	बुध	10/01/2063	केतु	25/11/2064	सूर्य	29/06/2067
शनि	19/10/2060	बुध	22/01/2062	केतु	30/01/2063	शुक्र	20/04/2065	चंद्र	28/09/2067
बुध	30/11/2060	केतु	20/02/2062	शुक्र	28/03/2063	सूर्य	03/06/2065	मंगल	01/12/2067
केतु	17/12/2060	शुक्र	12/05/2062	सूर्य	14/04/2063	चंद्र	15/08/2065	राहु	14/05/2068
शुक्र	03/02/2061	सूर्य	05/06/2062	चंद्र	12/05/2063	मंगल	05/10/2065	गुरु	08/10/2068

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
08/10/2068		18/06/2071		27/07/2072		26/09/2075		07/09/2076	
18/06/2071		27/07/2072		26/09/2075		07/09/2076		09/04/2078	
बुध	24/02/2069	केतु	11/07/2071	शुक्र	04/02/2073	सूर्य	14/10/2075	चंद्र	25/10/2076
केतु	22/04/2069	शुक्र	17/09/2071	सूर्य	03/04/2073	चंद्र	12/11/2075	मंगल	28/11/2076
शुक्र	03/10/2069	सूर्य	07/10/2071	चंद्र	09/07/2073	मंगल	02/12/2075	राहु	23/02/2077
सूर्य	21/11/2069	चंद्र	10/11/2071	मंगल	14/09/2073	राहु	23/01/2076	गुरु	11/05/2077
चंद्र	11/02/2070	मंगल	04/12/2071	राहु	07/03/2074	गुरु	09/03/2076	शनि	11/08/2077
मंगल	10/04/2070	राहु	02/02/2072	गुरु	08/08/2074	शनि	03/05/2076	बुध	01/11/2077
राहु	04/09/2070	गुरु	27/03/2072	शनि	07/02/2075	बुध	21/06/2076	केतु	04/12/2077
गुरु	13/01/2071	शनि	30/05/2072	बुध	21/07/2075	केतु	11/07/2076	शुक्र	11/03/2078
शनि	18/06/2071	बुध	27/07/2072	केतु	26/09/2075	शुक्र	07/09/2076	सूर्य	09/04/2078

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
09/04/2078		18/05/2079		24/03/2082		05/10/2084		03/03/2087	
18/05/2079		24/03/2082		05/10/2084		03/03/2087		29/02/2088	
मंगल	02/05/2078	राहु	22/10/2079	गुरु	26/07/2082	बुध	06/02/2085	केतु	24/03/2087
राहु	02/07/2078	गुरु	08/03/2080	शनि	19/12/2082	केतु	30/03/2085	शुक्र	24/05/2087
गुरु	25/08/2078	शनि	20/08/2080	बुध	29/04/2083	शुक्र	23/08/2085	सूर्य	11/06/2087
शनि	28/10/2078	बुध	15/01/2081	केतु	22/06/2083	सूर्य	06/10/2085	चंद्र	11/07/2087
बुध	24/12/2078	केतु	16/03/2081	शुक्र	24/11/2083	चंद्र	18/12/2085	मंगल	01/08/2087
केतु	17/01/2079	शुक्र	06/09/2081	सूर्य	09/01/2084	मंगल	08/02/2086	राहु	25/09/2087
शुक्र	25/03/2079	सूर्य	28/10/2081	चंद्र	26/03/2084	राहु	20/06/2086	गुरु	12/11/2087
सूर्य	15/04/2079	चंद्र	23/01/2082	मंगल	19/05/2084	गुरु	15/10/2086	शनि	08/01/2088
चंद्र	18/05/2079	मंगल	24/03/2082	राहु	05/10/2084	शनि	03/03/2087	बुध	29/02/2088

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
29/02/2088		29/12/2090		05/11/2091		05/04/2093		02/04/2094	
29/12/2090		05/11/2091		05/04/2093		02/04/2094		20/10/2096	
शुक्र	19/08/2088	सूर्य	14/01/2091	चंद्र	18/12/2091	मंगल	26/04/2093	राहु	20/08/2094
सूर्य	10/10/2088	चंद्र	09/02/2091	मंगल	17/01/2092	राहु	20/06/2093	गुरु	22/12/2094
चंद्र	04/01/2089	मंगल	27/02/2091	राहु	04/04/2092	गुरु	07/08/2093	शनि	19/05/2095
मंगल	05/03/2089	राहु	14/04/2091	गुरु	12/06/2092	शनि	03/10/2093	बुध	28/09/2095
राहु	08/08/2089	गुरु	26/05/2091	शनि	02/09/2092	बुध	24/11/2093	केतु	21/11/2095
गुरु	24/12/2089	शनि	14/07/2091	बुध	14/11/2092	केतु	15/12/2093	शुक्र	24/04/2096
शनि	05/06/2090	बुध	27/08/2091	केतु	14/12/2092	शुक्र	13/02/2094	सूर्य	10/06/2096
बुध	30/10/2090	केतु	14/09/2091	शुक्र	10/03/2093	सूर्य	03/03/2094	चंद्र	27/08/2096
केतु	29/12/2090	शुक्र	05/11/2091	सूर्य	05/04/2093	चंद्र	02/04/2094	मंगल	20/10/2096

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
20/10/2096		26/01/2099		06/10/2101		04/03/2102		04/05/2103	
26/01/2099		06/10/2101		04/03/2102		04/05/2103		09/09/2103	
गुरु	07/02/2097	शनि	30/06/2099	केतु	15/10/2101	शुक्र	14/05/2102	सूर्य	11/05/2103
शनि	18/06/2097	बुध	17/11/2099	शुक्र	08/11/2101	सूर्य	04/06/2102	चंद्र	21/05/2103
बुध	14/10/2097	केतु	13/01/2100	सूर्य	16/11/2101	चंद्र	10/07/2102	मंगल	29/05/2103
केतु	01/12/2097	शुक्र	26/06/2100	चंद्र	28/11/2101	मंगल	04/08/2102	राहु	17/06/2103
शुक्र	18/04/2098	सूर्य	14/08/2100	मंगल	07/12/2101	राहु	07/10/2102	गुरु	04/07/2103
सूर्य	29/05/2098	चंद्र	04/11/2100	राहु	29/12/2101	गुरु	02/12/2102	शनि	24/07/2103
चंद्र	06/08/2098	मंगल	31/12/2100	गुरु	18/01/2102	शनि	08/02/2103	बुध	11/08/2103
मंगल	24/09/2098	राहु	28/05/2101	शनि	11/02/2102	बुध	09/04/2103	केतु	19/08/2103
राहु	26/01/2099	गुरु	06/10/2101	बुध	04/03/2102	केतु	04/05/2103	शुक्र	09/09/2103

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
09/09/2103		09/04/2104		05/09/2104		24/09/2105		31/08/2106	
09/04/2104		05/09/2104		24/09/2105		31/08/2106		09/10/2107	
चंद्र	27/09/2103	मंगल	18/04/2104	राहु	02/11/2104	गुरु	08/11/2105	शनि	03/11/2106
मंगल	09/10/2103	राहु	10/05/2104	गुरु	23/12/2104	शनि	01/01/2106	बुध	30/12/2106
राहु	10/11/2103	गुरु	30/05/2104	शनि	22/02/2105	बुध	18/02/2106	केतु	23/01/2107
गुरु	09/12/2103	शनि	23/06/2104	बुध	17/04/2105	केतु	10/03/2106	शुक्र	31/03/2107
शनि	11/01/2104	बुध	14/07/2104	केतु	09/05/2105	शुक्र	06/05/2106	सूर्य	20/04/2107
बुध	10/02/2104	केतु	22/07/2104	शुक्र	12/07/2105	सूर्य	23/05/2106	चंद्र	24/05/2107
केतु	23/02/2104	शुक्र	16/08/2104	सूर्य	31/07/2105	चंद्र	21/06/2106	मंगल	17/06/2107
शुक्र	29/03/2104	सूर्य	24/08/2104	चंद्र	01/09/2105	मंगल	10/07/2106	राहु	16/08/2107
सूर्य	09/04/2104	चंद्र	05/09/2104	मंगल	24/09/2105	राहु	31/08/2106	गुरु	09/10/2107

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
09/10/2107		06/10/2108		05/02/2112		04/02/2113		06/10/2114	
06/10/2108		05/02/2112		04/02/2113		06/10/2114		06/12/2115	
बुध	30/11/2107	शुक्र	27/04/2109	सूर्य	23/02/2112	चंद्र	27/03/2113	मंगल	31/10/2114
केतु	21/12/2107	सूर्य	26/06/2109	चंद्र	25/03/2112	मंगल	02/05/2113	राहु	03/01/2115
शुक्र	19/02/2108	चंद्र	06/10/2109	मंगल	15/04/2112	राहु	01/08/2113	गुरु	01/03/2115
सूर्य	08/03/2108	मंगल	16/12/2109	राहु	09/06/2112	गुरु	21/10/2113	शनि	07/05/2115
चंद्र	08/04/2108	राहु	17/06/2110	गुरु	28/07/2112	शनि	26/01/2114	बुध	07/07/2115
मंगल	29/04/2108	गुरु	26/11/2110	शनि	23/09/2112	बुध	22/04/2114	केतु	31/07/2115
राहु	22/06/2108	शनि	07/06/2111	बुध	14/11/2112	केतु	27/05/2114	शुक्र	10/10/2115
गुरु	09/08/2108	बुध	26/11/2111	केतु	06/12/2112	शुक्र	06/09/2114	सूर्य	01/11/2115
शनि	06/10/2108	केतु	05/02/2112	शुक्र	04/02/2113	सूर्य	06/10/2114	चंद्र	06/12/2115

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - राहु - बुध		मंगल - राहु - केतु		मंगल - राहु - शुक्र		मंगल - राहु - सूर्य	
19/08/2025 16:31		13/10/2025 00:28		04/11/2025 09:23		07/01/2026 07:26	
13/10/2025 00:28		04/11/2025 09:23		07/01/2026 07:26		26/01/2026 11:39	
बुध	27/08/2025 09:15	केतु	14/10/2025 07:47	शुक्र	15/11/2025 01:03	सूर्य	08/01/2026 06:26
केतु	30/08/2025 13:18	शुक्र	18/10/2025 01:16	सूर्य	18/11/2025 05:45	चंद्र	09/01/2026 20:47
शुक्र	08/09/2025 14:38	सूर्य	19/10/2025 04:07	चंद्र	23/11/2025 13:36	मंगल	10/01/2026 23:38
सूर्य	11/09/2025 07:50	चंद्र	21/10/2025 00:51	मंगल	27/11/2025 07:05	राहु	13/01/2026 20:40
चंद्र	15/09/2025 20:29	मंगल	22/10/2025 08:11	राहु	06/12/2025 21:11	गुरु	16/01/2026 10:02
मंगल	19/09/2025 00:33	राहु	25/10/2025 16:43	गुरु	15/12/2025 09:44	शनि	19/01/2026 10:54
राहु	27/09/2025 04:09	गुरु	28/10/2025 16:18	शनि	25/12/2025 12:37	बुध	22/01/2026 04:06
गुरु	04/10/2025 10:00	शनि	01/11/2025 05:19	बुध	03/01/2026 13:56	केतु	23/01/2026 06:56
शनि	13/10/2025 00:28	बुध	04/11/2025 09:23	केतु	07/01/2026 07:26	शुक्र	26/01/2026 11:39

मंगल - राहु - चंद्र		मंगल - राहु - मंगल		मंगल - गुरु - गुरु		मंगल - गुरु - शनि	
26/01/2026 11:39		27/02/2026 10:40		21/03/2026 19:35		06/05/2026 06:28	
27/02/2026 10:40		21/03/2026 19:35		06/05/2026 06:28		29/06/2026 05:53	
चंद्र	29/01/2026 03:34	मंगल	28/02/2026 17:59	गुरु	27/03/2026 21:02	शनि	14/05/2026 19:34
मंगल	31/01/2026 00:18	राहु	04/03/2026 02:31	शनि	04/04/2026 01:45	बुध	22/05/2026 11:05
राहु	04/02/2026 19:21	गुरु	07/03/2026 02:07	बुध	10/04/2026 12:18	केतु	25/05/2026 14:39
गुरु	09/02/2026 01:38	शनि	10/03/2026 15:08	केतु	13/04/2026 03:56	शुक्र	03/06/2026 14:34
शनि	14/02/2026 03:04	बुध	13/03/2026 19:11	शुक्र	20/04/2026 17:45	सूर्य	06/06/2026 07:20
बुध	18/02/2026 15:44	केतु	15/03/2026 02:31	सूर्य	23/04/2026 00:17	चंद्र	10/06/2026 19:17
केतु	20/02/2026 12:29	शुक्र	18/03/2026 20:00	चंद्र	26/04/2026 19:12	मंगल	13/06/2026 22:51
शुक्र	25/02/2026 20:19	सूर्य	19/03/2026 22:50	मंगल	29/04/2026 10:50	राहु	22/06/2026 01:10
सूर्य	27/02/2026 10:40	चंद्र	21/03/2026 19:35	राहु	06/05/2026 06:28	गुरु	29/06/2026 05:53

मंगल - गुरु - बुध		मंगल - गुरु - केतु		मंगल - गुरु - शुक्र		मंगल - गुरु - सूर्य	
29/06/2026 05:53		16/08/2026 12:57		05/09/2026 10:12		01/11/2026 05:48	
16/08/2026 12:57		05/09/2026 10:12		01/11/2026 05:48		18/11/2026 06:53	
बुध	06/07/2026 02:05	केतु	17/08/2026 16:47	शुक्र	14/09/2026 21:28	सूर्य	02/11/2026 02:16
केतु	08/07/2026 21:42	शुक्र	21/08/2026 00:20	सूर्य	17/09/2026 17:39	चंद्र	03/11/2026 12:21
शुक्र	16/07/2026 22:52	सूर्य	22/08/2026 00:11	चंद्र	22/09/2026 11:17	मंगल	04/11/2026 12:13
सूर्य	19/07/2026 08:50	चंद्र	23/08/2026 15:58	मंगल	25/09/2026 18:50	राहु	07/11/2026 01:34
चंद्र	23/07/2026 09:25	मंगल	24/08/2026 19:48	राहु	04/10/2026 07:22	गुरु	09/11/2026 08:07
मंगल	26/07/2026 05:02	राहु	27/08/2026 19:24	गुरु	11/10/2026 21:11	शनि	12/11/2026 00:53
राहु	02/08/2026 10:53	गुरु	30/08/2026 11:02	शनि	20/10/2026 21:05	बुध	14/11/2026 10:50
गुरु	08/08/2026 21:26	शनि	02/09/2026 14:36	बुध	28/10/2026 22:16	केतु	15/11/2026 10:42
शनि	16/08/2026 12:57	बुध	05/09/2026 10:12	केतु	01/11/2026 05:48	शुक्र	18/11/2026 06:53

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - गुरु - चंद्र		मंगल - गुरु - मंगल		मंगल - गुरु - राहु		मंगल - शनि - शनि	
18/11/2026 06:53		16/12/2026 16:41		05/01/2027 13:57		25/02/2027 17:11	
16/12/2026 16:41		05/01/2027 13:57		25/02/2027 17:11		30/04/2027 19:30	
चंद्र	20/11/2026 15:42	मंगल	17/12/2026 20:31	राहु	13/01/2027 06:02	शनि	07/03/2027 20:45
मंगल	22/11/2026 07:28	राहु	20/12/2026 20:07	गुरु	20/01/2027 01:40	बुध	16/03/2027 22:41
राहु	26/11/2026 13:45	गुरु	23/12/2026 11:45	शनि	28/01/2027 03:59	केतु	20/03/2027 16:25
गुरु	30/11/2026 08:39	शनि	26/12/2026 15:19	बुध	04/02/2027 09:50	शुक्र	31/03/2027 08:48
शनि	04/12/2026 20:36	बुध	29/12/2026 10:56	केतु	07/02/2027 09:25	सूर्य	03/04/2027 13:43
बुध	08/12/2026 21:11	केतु	30/12/2026 14:46	शुक्र	15/02/2027 21:58	चंद्र	08/04/2027 21:54
केतु	10/12/2026 12:58	शुक्र	02/01/2027 22:19	सूर्य	18/02/2027 11:20	मंगल	12/04/2027 15:38
शुक्र	15/12/2026 06:36	सूर्य	03/01/2027 22:10	चंद्र	22/02/2027 17:36	राहु	22/04/2027 06:23
सूर्य	16/12/2026 16:41	चंद्र	05/01/2027 13:57	मंगल	25/02/2027 17:11	गुरु	30/04/2027 19:30

मंगल - शनि - बुध		मंगल - शनि - केतु		मंगल - शनि - शुक्र		मंगल - शनि - सूर्य	
30/04/2027 19:30		27/06/2027 03:53		20/07/2027 18:38		26/09/2027 05:54	
27/06/2027 03:53		20/07/2027 18:38		26/09/2027 05:54		16/10/2027 11:41	
बुध	08/05/2027 22:29	केतु	28/06/2027 12:56	शुक्र	01/08/2027 00:30	सूर्य	27/09/2027 06:11
केतु	12/05/2027 06:46	शुक्र	02/07/2027 11:24	सूर्य	04/08/2027 09:28	चंद्र	28/09/2027 22:40
शुक्र	21/05/2027 20:10	सूर्य	03/07/2027 15:44	चंद्र	10/08/2027 00:24	मंगल	30/09/2027 03:01
सूर्य	24/05/2027 16:59	चंद्र	05/07/2027 14:58	मंगल	13/08/2027 22:52	राहु	03/10/2027 03:53
चंद्र	29/05/2027 11:41	मंगल	07/07/2027 00:01	राहु	24/08/2027 01:45	गुरु	05/10/2027 20:39
मंगल	01/06/2027 19:59	राहु	10/07/2027 13:02	गुरु	02/09/2027 01:40	शनि	09/10/2027 01:34
राहु	10/06/2027 10:26	गुरु	13/07/2027 16:36	शनि	12/09/2027 18:03	बुध	11/10/2027 22:23
गुरु	18/06/2027 01:57	शनि	17/07/2027 10:20	बुध	22/09/2027 07:27	केतु	13/10/2027 02:43
शनि	27/06/2027 03:53	बुध	20/07/2027 18:38	केतु	26/09/2027 05:54	शुक्र	16/10/2027 11:41

मंगल - शनि - चंद्र		मंगल - शनि - मंगल		मंगल - शनि - राहु		मंगल - शनि - गुरु	
16/10/2027 11:41		19/11/2027 05:19		12/12/2027 20:04		11/02/2028 13:25	
19/11/2027 05:19		12/12/2027 20:04		11/02/2028 13:25		05/04/2028 12:50	
चंद्र	19/10/2027 07:09	मंगल	20/11/2027 14:23	राहु	21/12/2027 22:40	गुरु	18/02/2028 18:08
मंगल	21/10/2027 06:23	राहु	24/11/2027 03:24	गुरु	30/12/2027 00:59	शनि	27/02/2028 07:15
राहु	26/10/2027 07:50	गुरु	27/11/2027 06:58	शनि	08/01/2028 15:44	बुध	05/03/2028 22:46
गुरु	30/10/2027 19:47	शनि	01/12/2027 00:42	बुध	17/01/2028 06:11	केतु	09/03/2028 02:20
शनि	05/11/2027 03:58	बुध	04/12/2027 08:59	केतु	20/01/2028 19:12	शुक्र	18/03/2028 02:14
बुध	09/11/2027 22:40	केतु	05/12/2027 18:03	शुक्र	30/01/2028 22:05	सूर्य	20/03/2028 19:00
केतु	11/11/2027 21:54	शुक्र	09/12/2027 16:30	सूर्य	02/02/2028 22:57	चंद्र	25/03/2028 06:57
शुक्र	17/11/2027 12:50	सूर्य	10/12/2027 20:50	चंद्र	08/02/2028 00:24	मंगल	28/03/2028 10:31
सूर्य	19/11/2027 05:19	चंद्र	12/12/2027 20:04	मंगल	11/02/2028 13:25	राहु	05/04/2028 12:50

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - बुध - बुध	
05/04/2028 12:50	
26/05/2028 20:20	
बुध	12/04/2028 19:18
केतु	15/04/2028 19:08
शुक्र	24/04/2028 08:23
सूर्य	26/04/2028 21:58
चंद्र	01/05/2028 04:35
मंगल	04/05/2028 04:25
राहु	11/05/2028 21:09
गुरु	18/05/2028 17:21
शनि	26/05/2028 20:20

मंगल - बुध - केतु	
26/05/2028 20:20	
16/06/2028 23:25	
केतु	28/05/2028 01:55
शुक्र	31/05/2028 14:26
सूर्य	01/06/2028 15:47
चंद्र	03/06/2028 10:03
मंगल	04/06/2028 15:37
राहु	07/06/2028 19:41
गुरु	10/06/2028 15:18
शनि	13/06/2028 23:35
बुध	16/06/2028 23:25

मंगल - बुध - शुक्र	
16/06/2028 23:25	
16/08/2028 08:15	
शुक्र	27/06/2028 00:54
सूर्य	30/06/2028 01:20
चंद्र	05/07/2028 02:04
मंगल	08/07/2028 14:35
राहु	17/07/2028 15:55
गुरु	25/07/2028 17:05
शनि	04/08/2028 06:29
बुध	12/08/2028 19:44
केतु	16/08/2028 08:15

मंगल - बुध - सूर्य	
16/08/2028 08:15	
03/09/2028 10:54	
सूर्य	17/08/2028 05:59
चंद्र	18/08/2028 18:12
मंगल	19/08/2028 19:33
राहु	22/08/2028 12:45
गुरु	24/08/2028 22:42
शनि	27/08/2028 19:32
बुध	30/08/2028 09:06
केतु	31/08/2028 10:27
शुक्र	03/09/2028 10:54

मंगल - बुध - चंद्र	
03/09/2028 10:54	
03/10/2028 15:19	
चंद्र	05/09/2028 23:16
मंगल	07/09/2028 17:31
राहु	12/09/2028 06:11
गुरु	16/09/2028 06:46
शनि	21/09/2028 01:28
बुध	25/09/2028 08:06
केतु	27/09/2028 02:21
शुक्र	02/10/2028 03:05
सूर्य	03/10/2028 15:19

मंगल - बुध - मंगल	
03/10/2028 15:19	
24/10/2028 18:24	
मंगल	04/10/2028 20:53
राहु	08/10/2028 00:57
गुरु	10/10/2028 20:34
शनि	14/10/2028 04:51
बुध	17/10/2028 04:41
केतु	18/10/2028 10:16
शुक्र	21/10/2028 22:47
सूर्य	23/10/2028 00:08
चंद्र	24/10/2028 18:24

मंगल - बुध - राहु	
24/10/2028 18:24	
18/12/2028 02:20	
राहु	01/11/2028 21:59
गुरु	09/11/2028 03:51
शनि	17/11/2028 18:18
बुध	25/11/2028 11:02
केतु	28/11/2028 15:06
शुक्र	07/12/2028 16:25
सूर्य	10/12/2028 09:37
चंद्र	14/12/2028 22:17
मंगल	18/12/2028 02:20

मंगल - बुध - गुरु	
18/12/2028 02:20	
04/02/2029 09:24	
गुरु	24/12/2028 12:53
शनि	01/01/2029 04:24
बुध	08/01/2029 00:36
केतु	10/01/2029 20:13
शुक्र	18/01/2029 21:23
सूर्य	21/01/2029 07:20
चंद्र	25/01/2029 07:56
मंगल	28/01/2029 03:33
राहु	04/02/2029 09:24

मंगल - बुध - शनि	
04/02/2029 09:24	
02/04/2029 17:47	
शनि	13/02/2029 11:20
बुध	21/02/2029 14:19
केतु	24/02/2029 22:36
शुक्र	06/03/2029 12:00
सूर्य	09/03/2029 08:49
चंद्र	14/03/2029 03:31
मंगल	17/03/2029 11:49
राहु	26/03/2029 02:16
गुरु	02/04/2029 17:47

मंगल - केतु - केतु	
02/04/2029 17:47	
11/04/2029 10:35	
केतु	03/04/2029 05:58
शुक्र	04/04/2029 16:46
सूर्य	05/04/2029 03:12
चंद्र	05/04/2029 20:36
मंगल	06/04/2029 08:47
राहु	07/04/2029 16:06
गुरु	08/04/2029 19:57
शनि	10/04/2029 05:00
बुध	11/04/2029 10:35

मंगल - केतु - शुक्र	
11/04/2029 10:35	
06/05/2029 07:10	
शुक्र	15/04/2029 14:01
सूर्य	16/04/2029 19:51
चंद्र	18/04/2029 21:33
मंगल	20/04/2029 08:22
राहु	24/04/2029 01:51
गुरु	27/04/2029 09:23
शनि	01/05/2029 07:51
बुध	04/05/2029 20:22
केतु	06/05/2029 07:10

मंगल - केतु - सूर्य	
06/05/2029 07:10	
13/05/2029 18:08	
सूर्य	06/05/2029 16:07
चंद्र	07/05/2029 07:01
मंगल	07/05/2029 17:28
राहु	08/05/2029 20:19
गुरु	09/05/2029 20:10
शनि	11/05/2029 00:31
बुध	12/05/2029 01:52
केतु	12/05/2029 12:18
शुक्र	13/05/2029 18:08

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - केतु - चंद्र		मंगल - केतु - मंगल		मंगल - केतु - राहु		मंगल - केतु - गुरु	
13/05/2029 18:08		26/05/2029 04:25		03/06/2029 21:13		26/06/2029 06:08	
26/05/2029 04:25		03/06/2029 21:13		26/06/2029 06:08		16/07/2029 03:24	
चंद्र	14/05/2029 18:59	मंगल	26/05/2029 16:36	राहु	07/06/2029 05:46	गुरु	28/06/2029 21:46
मंगल	15/05/2029 12:23	राहु	27/05/2029 23:55	गुरु	10/06/2029 05:21	शनि	02/07/2029 01:20
राहु	17/05/2029 09:08	गुरु	29/05/2029 03:46	शनि	13/06/2029 18:22	बुध	04/07/2029 20:57
गुरु	19/05/2029 00:54	शनि	30/05/2029 12:49	बुध	16/06/2029 22:25	केतु	06/07/2029 00:48
शनि	21/05/2029 00:08	बुध	31/05/2029 18:24	केतु	18/06/2029 05:45	शुक्र	09/07/2029 08:20
बुध	22/05/2029 18:24	केतु	01/06/2029 06:35	शुक्र	21/06/2029 23:14	सूर्य	10/07/2029 08:12
केतु	23/05/2029 11:48	शुक्र	02/06/2029 17:23	सूर्य	23/06/2029 02:05	चंद्र	11/07/2029 23:58
शुक्र	25/05/2029 13:30	सूर्य	03/06/2029 03:49	चंद्र	24/06/2029 22:49	मंगल	13/07/2029 03:49
सूर्य	26/05/2029 04:25	चंद्र	03/06/2029 21:13	मंगल	26/06/2029 06:08	राहु	16/07/2029 03:24

मंगल - केतु - शनि		मंगल - केतु - बुध		मंगल - शुक्र - शुक्र		मंगल - शुक्र - सूर्य	
16/07/2029 03:24		08/08/2029 18:09		29/08/2029 21:14		08/11/2029 21:44	
08/08/2029 18:09		29/08/2029 21:14		08/11/2029 21:44		30/11/2029 05:05	
शनि	19/07/2029 21:08	बुध	11/08/2029 17:59	शुक्र	10/09/2029 17:19	सूर्य	09/11/2029 23:18
बुध	23/07/2029 05:25	केतु	12/08/2029 23:34	सूर्य	14/09/2029 06:33	चंद्र	11/11/2029 17:55
केतु	24/07/2029 14:29	शुक्र	16/08/2029 12:05	चंद्र	20/09/2029 04:35	मंगल	12/11/2029 23:45
शुक्र	28/07/2029 12:56	सूर्य	17/08/2029 13:26	मंगल	24/09/2029 08:01	राहु	16/11/2029 04:27
सूर्य	29/07/2029 17:17	चंद्र	19/08/2029 07:41	राहु	04/10/2029 23:41	गुरु	19/11/2029 00:38
चंद्र	31/07/2029 16:30	मंगल	20/08/2029 13:16	गुरु	14/10/2029 10:57	शनि	22/11/2029 09:35
मंगल	02/08/2029 01:34	राहु	23/08/2029 17:20	शनि	25/10/2029 16:50	बुध	25/11/2029 10:02
राहु	05/08/2029 14:35	गुरु	26/08/2029 12:57	बुध	04/11/2029 18:18	केतु	26/11/2029 15:52
गुरु	08/08/2029 18:09	शनि	29/08/2029 21:14	केतु	08/11/2029 21:44	शुक्र	30/11/2029 05:05

मंगल - शुक्र - चंद्र		मंगल - शुक्र - मंगल		मंगल - शुक्र - राहु		मंगल - शुक्र - गुरु	
30/11/2029 05:05		04/01/2030 17:20		29/01/2030 13:55		03/04/2030 11:58	
04/01/2030 17:20		29/01/2030 13:55		03/04/2030 11:58		30/05/2030 07:34	
चंद्र	03/12/2029 04:06	मंगल	06/01/2030 04:08	राहु	08/02/2030 04:01	गुरु	11/04/2030 01:46
मंगल	05/12/2029 05:49	राहु	09/01/2030 21:37	गुरु	16/02/2030 16:33	शनि	20/04/2030 01:41
राहु	10/12/2029 13:39	गुरु	13/01/2030 05:10	शनि	26/02/2030 19:27	बुध	28/04/2030 02:51
गुरु	15/12/2029 07:17	शनि	17/01/2030 03:37	बुध	07/03/2030 20:46	केतु	01/05/2030 10:24
शनि	20/12/2029 22:14	बुध	20/01/2030 16:08	केतु	11/03/2030 14:15	शुक्र	10/05/2030 21:40
बुध	25/12/2029 22:58	केतु	22/01/2030 02:56	शुक्र	22/03/2030 05:56	सूर्य	13/05/2030 17:51
केतु	28/12/2029 00:41	शुक्र	26/01/2030 06:22	सूर्य	25/03/2030 10:38	चंद्र	18/05/2030 11:29
शुक्र	02/01/2030 22:43	सूर्य	27/01/2030 12:12	चंद्र	30/03/2030 18:28	मंगल	21/05/2030 19:01
सूर्य	04/01/2030 17:20	चंद्र	29/01/2030 13:55	मंगल	03/04/2030 11:58	राहु	30/05/2030 07:34

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - राहु - बुध - शनि	
04/10/2025 10:00	
13/10/2025 00:28	
शनि	05/10/2025 18:41
बुध	06/10/2025 23:56
केतु	07/10/2025 11:59
शुक्र	08/10/2025 22:24
सूर्य	09/10/2025 08:43
चंद्र	10/10/2025 01:55
मंगल	10/10/2025 13:58
राहु	11/10/2025 20:56
गुरु	13/10/2025 00:28

मंगल - राहु - केतु - केतु	
13/10/2025 00:28	
14/10/2025 07:47	
केतु	13/10/2025 02:17
शुक्र	13/10/2025 07:30
सूर्य	13/10/2025 09:04
चंद्र	13/10/2025 11:41
मंगल	13/10/2025 13:31
राहु	13/10/2025 18:12
गुरु	13/10/2025 22:23
शनि	14/10/2025 03:21
बुध	14/10/2025 07:47

मंगल - राहु - केतु - शुक्र	
14/10/2025 07:47	
18/10/2025 01:16	
शुक्र	14/10/2025 22:42
सूर्य	15/10/2025 03:10
चंद्र	15/10/2025 10:38
मंगल	15/10/2025 15:51
राहु	16/10/2025 05:16
गुरु	16/10/2025 17:12
शनि	17/10/2025 07:22
बुध	17/10/2025 20:03
केतु	18/10/2025 01:16

मंगल - राहु - केतु - सूर्य	
18/10/2025 01:16	
19/10/2025 04:07	
सूर्य	18/10/2025 02:36
चंद्र	18/10/2025 04:51
मंगल	18/10/2025 06:25
राहु	18/10/2025 10:26
गुरु	18/10/2025 14:01
शनि	18/10/2025 18:16
बुध	18/10/2025 22:04
केतु	18/10/2025 23:38
शुक्र	19/10/2025 04:07

मंगल - राहु - केतु - चंद्र	
19/10/2025 04:07	
21/10/2025 00:51	
चंद्र	19/10/2025 07:50
मंगल	19/10/2025 10:27
राहु	19/10/2025 17:10
गुरु	19/10/2025 23:08
शनि	20/10/2025 06:13
बुध	20/10/2025 12:33
केतु	20/10/2025 15:10
शुक्र	20/10/2025 22:37
सूर्य	21/10/2025 00:51

मंगल - राहु - केतु - मंगल	
21/10/2025 00:51	
22/10/2025 08:11	
मंगल	21/10/2025 02:41
राहु	21/10/2025 07:23
गुरु	21/10/2025 11:33
शनि	21/10/2025 16:31
बुध	21/10/2025 20:57
केतु	21/10/2025 22:47
शुक्र	22/10/2025 04:00
सूर्य	22/10/2025 05:34
चंद्र	22/10/2025 08:11

मंगल - राहु - केतु - राहु	
22/10/2025 08:11	
25/10/2025 16:43	
राहु	22/10/2025 20:15
गुरु	23/10/2025 07:00
शनि	23/10/2025 19:45
बुध	24/10/2025 07:09
केतु	24/10/2025 11:51
शुक्र	25/10/2025 01:17
सूर्य	25/10/2025 05:18
चंद्र	25/10/2025 12:01
मंगल	25/10/2025 16:43

मंगल - राहु - केतु - गुरु	
25/10/2025 16:43	
28/10/2025 16:18	
गुरु	26/10/2025 02:15
शनि	26/10/2025 13:36
बुध	26/10/2025 23:44
केतु	27/10/2025 03:55
शुक्र	27/10/2025 15:51
सूर्य	27/10/2025 19:25
चंद्र	28/10/2025 01:23
मंगल	28/10/2025 05:34
राहु	28/10/2025 16:18

मंगल - राहु - केतु - शनि	
28/10/2025 16:18	
01/11/2025 05:19	
शनि	29/10/2025 05:46
बुध	29/10/2025 17:48
केतु	29/10/2025 22:46
शुक्र	30/10/2025 12:56
सूर्य	30/10/2025 17:11
चंद्र	31/10/2025 00:16
मंगल	31/10/2025 05:14
राहु	31/10/2025 17:59
गुरु	01/11/2025 05:19

मंगल - राहु - केतु - बुध	
01/11/2025 05:19	
04/11/2025 09:23	
बुध	01/11/2025 16:05
केतु	01/11/2025 20:32
शुक्र	02/11/2025 09:12
सूर्य	02/11/2025 13:00
चंद्र	02/11/2025 19:21
मंगल	02/11/2025 23:47
राहु	03/11/2025 11:12
गुरु	03/11/2025 21:20
शनि	04/11/2025 09:23

मंगल - राहु - शुक्र - शुक्र	
04/11/2025 09:23	
15/11/2025 01:03	
शुक्र	06/11/2025 03:59
सूर्य	06/11/2025 16:46
चंद्र	07/11/2025 14:05
मंगल	08/11/2025 05:00
राहु	09/11/2025 19:21
गुरु	11/11/2025 05:26
शनि	12/11/2025 21:55
बुध	14/11/2025 10:08
केतु	15/11/2025 01:03

मंगल - राहु - शुक्र - सूर्य	
15/11/2025 01:03	
18/11/2025 05:45	
सूर्य	15/11/2025 04:53
चंद्र	15/11/2025 11:17
मंगल	15/11/2025 15:45
राहु	16/11/2025 03:16
गुरु	16/11/2025 13:29
शनि	17/11/2025 01:38
बुध	17/11/2025 12:30
केतु	17/11/2025 16:58
शुक्र	18/11/2025 05:45

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - राहु - शुक्र - चंद्र	
18/11/2025 05:45	
23/11/2025 13:36	
चंद्र	18/11/2025 16:24
मंगल	18/11/2025 23:52
राहु	19/11/2025 19:02
गुरु	20/11/2025 12:05
शनि	21/11/2025 08:20
बुध	22/11/2025 02:26
केतु	22/11/2025 09:54
शुक्र	23/11/2025 07:12
सूर्य	23/11/2025 13:36

मंगल - राहु - शुक्र - मंगल	
23/11/2025 13:36	
27/11/2025 07:05	
मंगल	23/11/2025 18:49
राहु	24/11/2025 08:14
गुरु	24/11/2025 20:10
शनि	25/11/2025 10:20
बुध	25/11/2025 23:01
केतु	26/11/2025 04:14
शुक्र	26/11/2025 19:09
सूर्य	26/11/2025 23:37
चंद्र	27/11/2025 07:05

मंगल - राहु - शुक्र - राहु	
27/11/2025 07:05	
06/12/2025 21:11	
राहु	28/11/2025 17:36
गुरु	30/11/2025 00:17
शनि	01/12/2025 12:43
बुध	02/12/2025 21:18
केतु	03/12/2025 10:44
शुक्र	05/12/2025 01:05
सूर्य	05/12/2025 12:35
चंद्र	06/12/2025 07:46
मंगल	06/12/2025 21:11

मंगल - राहु - शुक्र - गुरु	
06/12/2025 21:11	
15/12/2025 09:44	
गुरु	08/12/2025 00:27
शनि	09/12/2025 08:51
बुध	10/12/2025 13:49
केतु	11/12/2025 01:45
शुक्र	12/12/2025 11:50
सूर्य	12/12/2025 22:04
चंद्र	13/12/2025 15:07
मंगल	14/12/2025 03:03
राहु	15/12/2025 09:44

मंगल - राहु - शुक्र - शनि	
15/12/2025 09:44	
25/12/2025 12:37	
शनि	17/12/2025 00:11
बुध	18/12/2025 10:36
केतु	19/12/2025 00:46
शुक्र	20/12/2025 17:15
सूर्य	21/12/2025 05:23
चंद्र	22/12/2025 01:38
मंगल	22/12/2025 15:48
राहु	24/12/2025 04:14
गुरु	25/12/2025 12:37

मंगल - राहु - शुक्र - बुध	
25/12/2025 12:37	
03/01/2026 13:56	
बुध	26/12/2025 19:24
केतु	27/12/2025 08:05
शुक्र	28/12/2025 20:18
सूर्य	29/12/2025 07:10
चंद्र	30/12/2025 01:17
मंगल	30/12/2025 13:57
राहु	31/12/2025 22:33
गुरु	02/01/2026 03:32
शनि	03/01/2026 13:56

मंगल - राहु - शुक्र - केतु	
03/01/2026 13:56	
07/01/2026 07:26	
केतु	03/01/2026 19:10
शुक्र	04/01/2026 10:05
सूर्य	04/01/2026 14:33
चंद्र	04/01/2026 22:00
मंगल	05/01/2026 03:14
राहु	05/01/2026 16:39
गुरु	06/01/2026 04:35
शनि	06/01/2026 18:45
बुध	07/01/2026 07:26

मंगल - राहु - सूर्य - सूर्य	
07/01/2026 07:26	
08/01/2026 06:26	
सूर्य	07/01/2026 08:35
चंद्र	07/01/2026 10:30
मंगल	07/01/2026 11:50
राहु	07/01/2026 15:17
गुरु	07/01/2026 18:21
शनि	07/01/2026 22:00
बुध	08/01/2026 01:16
केतु	08/01/2026 02:36
शुक्र	08/01/2026 06:26

मंगल - राहु - सूर्य - चंद्र	
08/01/2026 06:26	
09/01/2026 20:47	
चंद्र	08/01/2026 09:38
मंगल	08/01/2026 11:52
राहु	08/01/2026 17:37
गुरु	08/01/2026 22:44
शनि	09/01/2026 04:49
बुध	09/01/2026 10:15
केतु	09/01/2026 12:29
शुक्र	09/01/2026 18:52
सूर्य	09/01/2026 20:47

मंगल - राहु - सूर्य - मंगल	
09/01/2026 20:47	
10/01/2026 23:38	
मंगल	09/01/2026 22:21
राहु	10/01/2026 02:23
गुरु	10/01/2026 05:58
शनि	10/01/2026 10:13
बुध	10/01/2026 14:01
केतु	10/01/2026 15:35
शुक्र	10/01/2026 20:03
सूर्य	10/01/2026 21:24
चंद्र	10/01/2026 23:38

मंगल - राहु - सूर्य - राहु	
10/01/2026 23:38	
13/01/2026 20:40	
राहु	11/01/2026 09:59
गुरु	11/01/2026 19:12
शनि	12/01/2026 06:07
बुध	12/01/2026 15:54
केतु	12/01/2026 19:56
शुक्र	13/01/2026 07:26
सूर्य	13/01/2026 10:53
चंद्र	13/01/2026 16:38
मंगल	13/01/2026 20:40

मंगल - राहु - सूर्य - गुरु	
13/01/2026 20:40	
16/01/2026 10:02	
गुरु	14/01/2026 04:51
शनि	14/01/2026 14:34
बुध	14/01/2026 23:15
केतु	15/01/2026 02:50
शुक्र	15/01/2026 13:04
सूर्य	15/01/2026 16:08
चंद्र	15/01/2026 21:15
मंगल	16/01/2026 00:49
राहु	16/01/2026 10:02

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 13 वर्ष 11 मास 2 दिन

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
11/03/2009		12/02/2023		12/02/2039		12/02/2056		11/02/2074	
12/02/2023		12/02/2039		12/02/2056		11/02/2074		11/02/2085	
केतु	20/01/2010	चंद्र	28/04/2025	बुध	10/08/2041	शुक्र	28/11/2058	सूर्य	27/02/2075
चंद्र	15/02/2012	बुध	01/09/2027	शुक्र	30/03/2044	सूर्य	12/08/2060	मंगल	18/04/2076
बुध	28/04/2014	शुक्र	24/02/2030	सूर्य	09/11/2045	मंगल	24/06/2062	गुरु	12/07/2077
शुक्र	25/08/2016	सूर्य	01/09/2031	मंगल	13/08/2047	गुरु	29/06/2064	शनि	09/11/2078
सूर्य	27/01/2018	मंगल	28/04/2033	गुरु	09/07/2049	शनि	01/09/2066	केतु	12/04/2080
मंगल	16/08/2019	गुरु	12/02/2035	शनि	28/07/2051	केतु	29/12/2068	चंद्र	18/10/2081
गुरु	21/04/2021	शनि	17/01/2037	केतु	08/10/2053	चंद्र	24/06/2071	बुध	30/05/2083
शनि	12/02/2023	केतु	12/02/2039	चंद्र	12/02/2056	बुध	11/02/2074	शुक्र	11/02/2085

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
11/02/2085		11/02/2097		12/02/2110		13/02/2124	
11/02/2097		12/02/2110		13/02/2124		00/00/0000	
मंगल	10/05/2086	गुरु	28/07/2098	शनि	22/10/2111	केतु	12/03/2125
गुरु	14/09/2087	शनि	21/02/2100	केतु	14/08/2113		00/00/0000
शनि	24/02/2089	केतु	28/10/2101	चंद्र	20/07/2115		00/00/0000
केतु	13/09/2090	चंद्र	14/08/2103	बुध	07/08/2117		00/00/0000
चंद्र	10/05/2092	बुध	10/07/2105	शुक्र	10/10/2119		00/00/0000
बुध	11/02/2094	शुक्र	17/07/2107	सूर्य	06/02/2121		00/00/0000
शुक्र	23/12/2095	सूर्य	09/10/2108	मंगल	20/07/2122		00/00/0000
सूर्य	11/02/2097	मंगल	12/02/2110	गुरु	13/02/2124		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
11/03/2009		20/01/2010		15/02/2012		28/04/2014		25/08/2016	
20/01/2010		15/02/2012		28/04/2014		25/08/2016		27/01/2018	
	00/00/0000	चंद्र	04/05/2010	बुध	12/06/2012	शुक्र	07/09/2014	सूर्य	13/10/2016
	00/00/0000	बुध	23/08/2010	शुक्र	14/10/2012	सूर्य	26/11/2014	मंगल	06/12/2016
	11/03/2009	शुक्र	18/12/2010	सूर्य	29/12/2012	मंगल	22/02/2015	गुरु	02/02/2017
शुक्र	21/03/2009	सूर्य	28/02/2011	मंगल	22/03/2013	गुरु	29/05/2015	शनि	06/04/2017
सूर्य	27/05/2009	मंगल	17/05/2011	गुरु	20/06/2013	शनि	08/09/2015	केतु	12/06/2017
मंगल	08/08/2009	गुरु	10/08/2011	शनि	25/09/2013	केतु	27/12/2015	चंद्र	23/08/2017
गुरु	27/10/2009	शनि	09/11/2011	केतु	07/01/2014	चंद्र	22/04/2016	बुध	07/11/2017
शनि	20/01/2010	केतु	15/02/2012	चंद्र	28/04/2014	बुध	25/08/2016	शुक्र	27/01/2018

केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध	
27/01/2018		16/08/2019		21/04/2021		12/02/2023		28/04/2025	
16/08/2019		21/04/2021		12/02/2023		28/04/2025		01/09/2027	
मंगल	26/03/2018	गुरु	24/10/2019	शनि	10/07/2021	चंद्र	03/06/2023	बुध	31/08/2025
गुरु	29/05/2018	शनि	06/01/2020	केतु	04/10/2021	बुध	29/09/2023	शुक्र	11/01/2026
शनि	05/08/2018	केतु	26/03/2020	चंद्र	03/01/2022	शुक्र	01/02/2024	सूर्य	02/04/2026
केतु	17/10/2018	चंद्र	18/06/2020	बुध	10/04/2022	सूर्य	17/04/2024	मंगल	30/06/2026
चंद्र	04/01/2019	बुध	16/09/2020	शुक्र	21/07/2022	मंगल	10/07/2024	गुरु	04/10/2026
बुध	28/03/2019	शुक्र	21/12/2020	सूर्य	22/09/2022	गुरु	08/10/2024	शनि	15/01/2027
शुक्र	24/06/2019	सूर्य	17/02/2021	मंगल	29/11/2022	शनि	13/01/2025	केतु	06/05/2027
सूर्य	16/08/2019	मंगल	21/04/2021	गुरु	12/02/2023	केतु	28/04/2025	चंद्र	01/09/2027

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
01/09/2027		24/02/2030		01/09/2031		28/04/2033		12/02/2035	
24/02/2030		01/09/2031		28/04/2033		12/02/2035		17/01/2037	
शुक्र	20/01/2028	सूर्य	17/04/2030	मंगल	03/11/2031	गुरु	10/07/2033	शनि	08/05/2035
सूर्य	15/04/2028	मंगल	14/06/2030	गुरु	09/01/2032	शनि	27/09/2033	केतु	07/08/2035
मंगल	18/07/2028	गुरु	15/08/2030	शनि	22/03/2032	केतु	21/12/2033	चंद्र	12/11/2035
गुरु	27/10/2028	शनि	21/10/2030	केतु	08/06/2032	चंद्र	21/03/2034	बुध	24/02/2036
शनि	14/02/2029	केतु	31/12/2030	चंद्र	31/08/2032	बुध	25/06/2034	शुक्र	12/06/2036
केतु	11/06/2029	चंद्र	18/03/2031	बुध	27/11/2032	शुक्र	05/10/2034	सूर्य	18/08/2036
चंद्र	14/10/2029	बुध	07/06/2031	शुक्र	01/03/2033	सूर्य	06/12/2034	मंगल	30/10/2036
बुध	24/02/2030	शुक्र	01/09/2031	सूर्य	28/04/2033	मंगल	12/02/2035	गुरु	17/01/2037

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल	
17/01/2037		12/02/2039		10/08/2041		30/03/2044		09/11/2045	
12/02/2039		10/08/2041		30/03/2044		09/11/2045		13/08/2047	
केतु	25/04/2037	बुध	25/06/2039	शुक्र	06/01/2042	सूर्य	25/05/2044	मंगल	14/01/2046
चंद्र	07/08/2037	शुक्र	13/11/2039	सूर्य	07/04/2042	मंगल	25/07/2044	गुरु	27/03/2046
बुध	26/11/2037	सूर्य	07/02/2040	मंगल	16/07/2042	गुरु	29/09/2044	शनि	13/06/2046
शुक्र	23/03/2038	मंगल	12/05/2040	गुरु	01/11/2042	शनि	09/12/2044	केतु	04/09/2046
सूर्य	02/06/2038	गुरु	22/08/2040	शनि	25/02/2043	केतु	23/02/2045	चंद्र	01/12/2046
मंगल	20/08/2038	शनि	09/12/2040	केतु	30/06/2043	चंद्र	15/05/2045	बुध	06/03/2047
गुरु	12/11/2038	केतु	06/04/2041	चंद्र	10/11/2043	बुध	09/08/2045	शुक्र	13/06/2047
शनि	12/02/2039	चंद्र	10/08/2041	बुध	30/03/2044	शुक्र	09/11/2045	सूर्य	13/08/2047

बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र	
13/08/2047		09/07/2049		28/07/2051		08/10/2053		12/02/2056	
09/07/2049		28/07/2051		08/10/2053		12/02/2056		28/11/2058	
गुरु	30/10/2047	शनि	07/10/2049	केतु	09/11/2051	चंद्र	03/02/2054	शुक्र	19/07/2056
शनि	22/01/2048	केतु	12/01/2050	चंद्र	28/02/2052	बुध	09/06/2054	सूर्य	24/10/2056
केतु	21/04/2048	चंद्र	26/04/2050	बुध	25/06/2052	शुक्र	20/10/2054	मंगल	06/02/2057
चंद्र	26/07/2048	बुध	14/08/2050	शुक्र	27/10/2052	सूर्य	09/01/2055	गुरु	01/06/2057
बुध	05/11/2048	शुक्र	08/12/2050	सूर्य	11/01/2053	मंगल	08/04/2055	शनि	02/10/2057
शुक्र	21/02/2049	सूर्य	17/02/2051	मंगल	04/04/2053	गुरु	13/07/2055	केतु	11/02/2058
सूर्य	28/04/2049	मंगल	05/05/2051	गुरु	03/07/2053	शनि	24/10/2055	चंद्र	01/07/2058
मंगल	09/07/2049	गुरु	28/07/2051	शनि	08/10/2053	केतु	12/02/2056	बुध	28/11/2058

शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु	
28/11/2058		12/08/2060		24/06/2062		29/06/2064		01/09/2066	
12/08/2060		24/06/2062		29/06/2064		01/09/2066		29/12/2068	
सूर्य	26/01/2059	मंगल	22/10/2060	गुरु	14/09/2062	शनि	03/10/2064	केतु	20/12/2066
मंगल	01/04/2059	गुरु	06/01/2061	शनि	12/12/2062	केतु	14/01/2065	चंद्र	16/04/2067
गुरु	09/06/2059	शनि	29/03/2061	केतु	17/03/2063	चंद्र	03/05/2065	बुध	19/08/2067
शनि	24/08/2059	केतु	25/06/2061	चंद्र	27/06/2063	बुध	27/08/2065	शुक्र	29/12/2067
केतु	12/11/2059	चंद्र	27/09/2061	बुध	13/10/2063	शुक्र	29/12/2065	सूर्य	18/03/2068
चंद्र	06/02/2060	बुध	05/01/2062	शुक्र	04/02/2064	सूर्य	14/03/2066	मंगल	14/06/2068
बुध	08/05/2060	शुक्र	20/04/2062	सूर्य	14/04/2064	मंगल	04/06/2066	गुरु	17/09/2068
शुक्र	12/08/2060	सूर्य	24/06/2062	मंगल	29/06/2064	गुरु	01/09/2066	शनि	29/12/2068

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु	
29/12/2068		24/06/2071		11/02/2074		27/02/2075		18/04/2076	
24/06/2071		11/02/2074		27/02/2075		18/04/2076		12/07/2077	
चंद्र	03/05/2069	बुध	12/11/2071	सूर्य	19/03/2074	मंगल	11/04/2075	गुरु	07/06/2076
बुध	13/09/2069	शुक्र	09/04/2072	मंगल	28/04/2074	गुरु	28/05/2075	शनि	01/08/2076
शुक्र	01/02/2070	सूर्य	10/07/2072	गुरु	10/06/2074	शनि	17/07/2075	केतु	28/09/2076
सूर्य	28/04/2070	मंगल	18/10/2072	शनि	26/07/2074	केतु	09/09/2075	चंद्र	29/11/2076
मंगल	30/07/2070	गुरु	03/02/2073	केतु	13/09/2074	चंद्र	05/11/2075	बुध	03/02/2077
गुरु	09/11/2070	शनि	30/05/2073	चंद्र	04/11/2074	बुध	05/01/2076	शुक्र	14/04/2077
शनि	27/02/2071	केतु	01/10/2073	बुध	30/12/2074	शुक्र	09/03/2076	सूर्य	27/05/2077
केतु	24/06/2071	चंद्र	11/02/2074	शुक्र	27/02/2075	सूर्य	18/04/2076	मंगल	12/07/2077

सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र	
12/07/2077		09/11/2078		12/04/2080		18/10/2081		30/05/2083	
09/11/2078		12/04/2080		18/10/2081		30/05/2083		11/02/2085	
शनि	09/09/2077	केतु	15/01/2079	चंद्र	27/06/2080	बुध	12/01/2082	शुक्र	03/09/2083
केतु	10/11/2077	चंद्र	28/03/2079	बुध	16/09/2080	शुक्र	13/04/2082	सूर्य	01/11/2083
चंद्र	16/01/2078	बुध	12/06/2079	शुक्र	11/12/2080	सूर्य	08/06/2082	मंगल	05/01/2084
बुध	28/03/2078	शुक्र	01/09/2079	सूर्य	02/02/2081	मंगल	08/08/2082	गुरु	15/03/2084
शुक्र	12/06/2078	सूर्य	20/10/2079	मंगल	31/03/2081	गुरु	13/10/2082	शनि	29/05/2084
सूर्य	28/07/2078	मंगल	13/12/2079	गुरु	01/06/2081	शनि	23/12/2082	केतु	18/08/2084
मंगल	16/09/2078	गुरु	09/02/2080	शनि	07/08/2081	केतु	09/03/2083	चंद्र	12/11/2084
गुरु	09/11/2078	शनि	12/04/2080	केतु	18/10/2081	चंद्र	30/05/2083	बुध	11/02/2085

मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र	
11/02/2085		10/05/2086		14/09/2087		24/02/2089		13/09/2090	
10/05/2086		14/09/2087		24/02/2089		13/09/2090		10/05/2092	
मंगल	30/03/2085	गुरु	05/07/2086	शनि	16/11/2087	केतु	08/05/2089	चंद्र	06/12/2090
गुरु	20/05/2085	शनि	02/09/2086	केतु	24/01/2088	चंद्र	25/07/2089	बुध	04/03/2091
शनि	13/07/2085	केतु	04/11/2086	चंद्र	06/04/2088	बुध	16/10/2089	शुक्र	06/06/2091
केतु	10/09/2085	चंद्र	11/01/2087	बुध	22/06/2088	शुक्र	12/01/2090	सूर्य	03/08/2091
चंद्र	12/11/2085	बुध	24/03/2087	शुक्र	12/09/2088	सूर्य	07/03/2090	मंगल	04/10/2091
बुध	17/01/2086	शुक्र	08/06/2087	सूर्य	02/11/2088	मंगल	04/05/2090	गुरु	11/12/2091
शुक्र	28/03/2086	सूर्य	25/07/2087	मंगल	26/12/2088	गुरु	07/07/2090	शनि	22/02/2092
सूर्य	10/05/2086	मंगल	14/09/2087	गुरु	24/02/2089	शनि	13/09/2090	केतु	10/05/2092

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
10/05/2092		11/02/2094		23/12/2095		11/02/2097		28/07/2098	
11/02/2094		23/12/2095		11/02/2097		28/07/2098		21/02/2100	
बुध	12/08/2092	शुक्र	28/05/2094	सूर्य	01/02/2096	गुरु	12/04/2097	शनि	05/10/2098
शुक्र	20/11/2092	सूर्य	31/07/2094	मंगल	15/03/2096	शनि	15/06/2097	केतु	18/12/2098
सूर्य	20/01/2093	मंगल	10/10/2094	गुरु	30/04/2096	केतु	23/08/2097	चंद्र	07/03/2099
मंगल	27/03/2093	गुरु	25/12/2094	शनि	20/06/2096	चंद्र	04/11/2097	बुध	30/05/2099
गुरु	07/06/2093	शनि	17/03/2095	केतु	12/08/2096	बुध	21/01/2098	शुक्र	27/08/2099
शनि	24/08/2093	केतु	13/06/2095	चंद्र	09/10/2096	शुक्र	14/04/2098	सूर्य	21/10/2099
केतु	15/11/2093	चंद्र	15/09/2095	बुध	09/12/2096	सूर्य	03/06/2098	मंगल	19/12/2099
चंद्र	11/02/2094	बुध	23/12/2095	शुक्र	11/02/2097	मंगल	28/07/2098	गुरु	21/02/2100

गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
21/02/2100		28/10/2101		14/08/2103		10/07/2105		17/07/2107	
28/10/2101		14/08/2103		10/07/2105		17/07/2107		09/10/2108	
केतु	12/05/2100	चंद्र	27/01/2102	बुध	24/11/2103	शुक्र	01/11/2105	सूर्य	29/08/2107
चंद्र	04/08/2100	बुध	03/05/2102	शुक्र	11/03/2104	सूर्य	10/01/2106	मंगल	14/10/2107
बुध	02/11/2100	शुक्र	12/08/2102	सूर्य	16/05/2104	मंगल	27/03/2106	गुरु	04/12/2107
शुक्र	06/02/2101	सूर्य	13/10/2102	मंगल	27/07/2104	गुरु	18/06/2106	शनि	27/01/2108
सूर्य	05/04/2101	मंगल	20/12/2102	गुरु	13/10/2104	शनि	15/09/2106	केतु	25/03/2108
मंगल	07/06/2101	गुरु	03/03/2103	शनि	05/01/2105	केतु	19/12/2106	चंद्र	26/05/2108
गुरु	15/08/2101	शनि	21/05/2103	केतु	05/04/2105	चंद्र	31/03/2107	बुध	31/07/2108
शनि	28/10/2101	केतु	14/08/2103	चंद्र	10/07/2105	बुध	17/07/2107	शुक्र	09/10/2108

गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध	
09/10/2108		12/02/2110		22/10/2111		14/08/2113		20/07/2115	
12/02/2110		22/10/2111		14/08/2113		20/07/2115		07/08/2117	
मंगल	29/11/2108	शनि	28/04/2110	केतु	16/01/2112	चंद्र	19/11/2113	बुध	07/11/2115
गुरु	23/01/2109	केतु	17/07/2110	चंद्र	16/04/2112	बुध	02/03/2114	शुक्र	02/03/2116
शनि	23/03/2109	चंद्र	10/10/2110	बुध	22/07/2112	शुक्र	20/06/2114	सूर्य	12/05/2116
केतु	26/05/2109	बुध	08/01/2111	शुक्र	02/11/2112	सूर्य	26/08/2114	मंगल	29/07/2116
चंद्र	02/08/2109	शुक्र	14/04/2111	सूर्य	03/01/2113	मंगल	07/11/2114	गुरु	21/10/2116
बुध	12/10/2109	सूर्य	11/06/2111	मंगल	13/03/2113	गुरु	25/01/2115	शनि	19/01/2117
शुक्र	28/12/2109	मंगल	14/08/2111	गुरु	26/05/2113	शनि	20/04/2115	केतु	26/04/2117
सूर्य	12/02/2110	गुरु	22/10/2111	शनि	14/08/2113	केतु	20/07/2115	चंद्र	07/08/2117

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 8 मास 16 दिन

सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष	
11/03/2009		26/11/2012		28/07/2019		28/03/2024		28/03/2036	
26/11/2012		28/07/2019		28/03/2024		28/03/2036		27/11/2046	
	11/03/2009	चंद्र	17/06/2013	मंगल	05/11/2019	राहु	14/01/2026	गुरु	29/08/2037
चंद्र	09/06/2009	मंगल	06/11/2013	राहु	17/07/2020	गुरु	21/08/2027	शनि	08/05/2039
मंगल	02/09/2009	राहु	06/11/2014	गुरु	01/03/2021	शनि	15/07/2029	बुध	10/11/2040
राहु	09/04/2010	गुरु	27/09/2015	शनि	26/11/2021	बुध	28/03/2031	केतु	25/06/2041
गुरु	21/10/2010	शनि	16/10/2016	बुध	26/07/2022	केतु	09/12/2031	शुक्र	05/04/2043
शनि	09/06/2011	बुध	26/09/2017	केतु	02/11/2022	शुक्र	09/12/2033	सूर्य	17/10/2043
बुध	02/01/2012	केतु	15/02/2018	शुक्र	13/08/2023	सूर्य	16/07/2034	चंद्र	06/09/2044
केतु	28/03/2012	शुक्र	28/03/2019	सूर्य	07/11/2023	चंद्र	16/07/2035	मंगल	21/04/2045
शुक्र	26/11/2012	सूर्य	28/07/2019	चंद्र	28/03/2024	मंगल	28/03/2036	राहु	27/11/2046

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
27/11/2046		28/07/2059		27/11/2070		28/07/2075		26/11/2088	
28/07/2059		27/11/2070		28/07/2075		26/11/2088		00/00/0000	
शनि	28/11/2048	बुध	06/03/2061	केतु	06/03/2071	शुक्र	17/10/2077	सूर्य	07/02/2089
बुध	15/09/2050	केतु	02/11/2061	शुक्र	15/12/2071	सूर्य	17/06/2078	चंद्र	11/03/2089
केतु	11/06/2051	शुक्र	23/09/2063	सूर्य	09/03/2072	चंद्र	28/07/2079		00/00/0000
शुक्र	21/07/2053	सूर्य	17/04/2064	चंद्र	29/07/2072	मंगल	07/05/2080		00/00/0000
सूर्य	10/03/2054	चंद्र	28/03/2065	मंगल	06/11/2072	राहु	08/05/2082		00/00/0000
चंद्र	30/03/2055	मंगल	24/11/2065	राहु	19/07/2073	गुरु	16/02/2084		00/00/0000
मंगल	25/12/2055	राहु	07/08/2067	गुरु	04/03/2074	शनि	28/03/2086		00/00/0000
राहु	18/11/2057	गुरु	09/02/2069	शनि	29/11/2074	बुध	16/02/2088		00/00/0000
गुरु	28/07/2059	शनि	27/11/2070	बुध	28/07/2075	केतु	26/11/2088		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
11/03/2009		09/06/2009		02/09/2009		09/04/2010		21/10/2010	
09/06/2009		02/09/2009		09/04/2010		21/10/2010		09/06/2011	
	00/00/0000	मंगल	14/06/2009	राहु	05/10/2009	गुरु	05/05/2010	शनि	27/11/2010
	11/03/2009	राहु	27/06/2009	गुरु	03/11/2009	शनि	05/06/2010	बुध	29/12/2010
राहु	15/03/2009	गुरु	08/07/2009	शनि	08/12/2009	बुध	03/07/2010	केतु	12/01/2011
गुरु	31/03/2009	शनि	21/07/2009	बुध	08/01/2010	केतु	14/07/2010	शुक्र	19/02/2011
शनि	19/04/2009	बुध	03/08/2009	केतु	21/01/2010	शुक्र	15/08/2010	सूर्य	03/03/2011
बुध	06/05/2009	केतु	08/08/2009	शुक्र	26/02/2010	सूर्य	25/08/2010	चंद्र	22/03/2011
केतु	13/05/2009	शुक्र	22/08/2009	सूर्य	09/03/2010	चंद्र	10/09/2010	मंगल	05/04/2011
शुक्र	03/06/2009	सूर्य	26/08/2009	चंद्र	27/03/2010	मंगल	22/09/2010	राहु	10/05/2011
सूर्य	09/06/2009	चंद्र	02/09/2009	मंगल	09/04/2010	राहु	21/10/2010	गुरु	09/06/2011

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
09/06/2011		02/01/2012		28/03/2012		26/11/2012		17/06/2013	
02/01/2012		28/03/2012		26/11/2012		17/06/2013		06/11/2013	
बुध	09/07/2011	केतु	07/01/2012	शुक्र	07/05/2012	चंद्र	13/12/2012	मंगल	25/06/2013
केतु	21/07/2011	शुक्र	22/01/2012	सूर्य	19/05/2012	मंगल	25/12/2012	राहु	17/07/2013
शुक्र	24/08/2011	सूर्य	26/01/2012	चंद्र	09/06/2012	राहु	24/01/2013	गुरु	05/08/2013
सूर्य	04/09/2011	चंद्र	02/02/2012	मंगल	23/06/2012	गुरु	20/02/2013	शनि	27/08/2013
चंद्र	21/09/2011	मंगल	07/02/2012	राहु	29/07/2012	शनि	24/03/2013	बुध	16/09/2013
मंगल	03/10/2011	राहु	20/02/2012	गुरु	31/08/2012	बुध	22/04/2013	केतु	24/09/2013
राहु	03/11/2011	गुरु	02/03/2012	शनि	08/10/2012	केतु	04/05/2013	शुक्र	18/10/2013
गुरु	01/12/2011	शनि	16/03/2012	बुध	12/11/2012	शुक्र	07/06/2013	सूर्य	25/10/2013
शनि	02/01/2012	बुध	28/03/2012	केतु	26/11/2012	सूर्य	17/06/2013	चंद्र	06/11/2013

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
06/11/2013		06/11/2014		27/09/2015		16/10/2016		26/09/2017	
06/11/2014		27/09/2015		16/10/2016		26/09/2017		15/02/2018	
राहु	31/12/2013	गुरु	20/12/2014	शनि	27/11/2015	बुध	04/12/2016	केतु	05/10/2017
गुरु	18/02/2014	शनि	09/02/2015	बुध	21/01/2016	केतु	24/12/2016	शुक्र	28/10/2017
शनि	16/04/2014	बुध	27/03/2015	केतु	12/02/2016	शुक्र	20/02/2017	सूर्य	05/11/2017
बुध	07/06/2014	केतु	15/04/2015	शुक्र	16/04/2016	सूर्य	09/03/2017	चंद्र	16/11/2017
केतु	28/06/2014	शुक्र	08/06/2015	सूर्य	06/05/2016	चंद्र	07/04/2017	मंगल	25/11/2017
शुक्र	28/08/2014	सूर्य	24/06/2015	चंद्र	07/06/2016	मंगल	27/04/2017	राहु	16/12/2017
सूर्य	16/09/2014	चंद्र	21/07/2015	मंगल	29/06/2016	राहु	18/06/2017	गुरु	04/01/2018
चंद्र	16/10/2014	मंगल	09/08/2015	राहु	26/08/2016	गुरु	03/08/2017	शनि	26/01/2018
मंगल	06/11/2014	राहु	27/09/2015	गुरु	16/10/2016	शनि	26/09/2017	बुध	15/02/2018

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
15/02/2018		28/03/2019		28/07/2019		05/11/2019		17/07/2020	
28/03/2019		28/07/2019		05/11/2019		17/07/2020		01/03/2021	
शुक्र	24/04/2018	सूर्य	03/04/2019	मंगल	03/08/2019	राहु	13/12/2019	गुरु	16/08/2020
सूर्य	14/05/2018	चंद्र	14/04/2019	राहु	18/08/2019	गुरु	16/01/2020	शनि	21/09/2020
चंद्र	17/06/2018	मंगल	21/04/2019	गुरु	31/08/2019	शनि	25/02/2020	बुध	24/10/2020
मंगल	11/07/2018	राहु	09/05/2019	शनि	16/09/2019	बुध	02/04/2020	केतु	06/11/2020
राहु	10/09/2018	गुरु	25/05/2019	बुध	30/09/2019	केतु	17/04/2020	शुक्र	14/12/2020
गुरु	03/11/2018	शनि	13/06/2019	केतु	06/10/2019	शुक्र	29/05/2020	सूर्य	25/12/2020
शनि	06/01/2019	बुध	01/07/2019	शुक्र	22/10/2019	सूर्य	11/06/2020	चंद्र	13/01/2021
बुध	05/03/2019	केतु	08/07/2019	सूर्य	27/10/2019	चंद्र	02/07/2020	मंगल	26/01/2021
केतु	28/03/2019	शुक्र	28/07/2019	चंद्र	05/11/2019	मंगल	17/07/2020	राहु	01/03/2021

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
01/03/2021		26/11/2021		26/07/2022		02/11/2022		13/08/2023	
26/11/2021		26/07/2022		02/11/2022		13/08/2023		07/11/2023	
शनि	13/04/2021	बुध	31/12/2021	केतु	01/08/2022	शुक्र	20/12/2022	सूर्य	18/08/2023
बुध	21/05/2021	केतु	14/01/2022	शुक्र	17/08/2022	सूर्य	03/01/2023	चंद्र	25/08/2023
केतु	06/06/2021	शुक्र	23/02/2022	सूर्य	22/08/2022	चंद्र	26/01/2023	मंगल	30/08/2023
शुक्र	21/07/2021	सूर्य	07/03/2022	चंद्र	30/08/2022	मंगल	12/02/2023	राहु	11/09/2023
सूर्य	04/08/2021	चंद्र	27/03/2022	मंगल	05/09/2022	राहु	27/03/2023	गुरु	23/09/2023
चंद्र	26/08/2021	मंगल	10/04/2022	राहु	20/09/2022	गुरु	04/05/2023	शनि	06/10/2023
मंगल	11/09/2021	राहु	16/05/2022	गुरु	03/10/2022	शनि	17/06/2023	बुध	18/10/2023
राहु	21/10/2021	गुरु	18/06/2022	शनि	19/10/2022	बुध	28/07/2023	केतु	23/10/2023
गुरु	26/11/2021	शनि	26/07/2022	बुध	02/11/2022	केतु	13/08/2023	शुक्र	07/11/2023

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
07/11/2023		28/03/2024		14/01/2026		21/08/2027		15/07/2029	
28/03/2024		14/01/2026		21/08/2027		15/07/2029		28/03/2031	
चंद्र	18/11/2023	राहु	04/07/2024	गुरु	02/04/2026	शनि	09/12/2027	बुध	11/10/2029
मंगल	27/11/2023	गुरु	30/09/2024	शनि	03/07/2026	बुध	17/03/2028	केतु	17/11/2029
राहु	18/12/2023	शनि	12/01/2025	बुध	24/09/2026	केतु	26/04/2028	शुक्र	28/02/2030
गुरु	06/01/2024	बुध	15/04/2025	केतु	28/10/2026	शुक्र	20/08/2028	सूर्य	31/03/2030
शनि	28/01/2024	केतु	23/05/2025	शुक्र	03/02/2027	सूर्य	23/09/2028	चंद्र	22/05/2030
बुध	18/02/2024	शुक्र	10/09/2025	सूर्य	04/03/2027	चंद्र	20/11/2028	मंगल	27/06/2030
केतु	26/02/2024	सूर्य	13/10/2025	चंद्र	22/04/2027	मंगल	31/12/2028	राहु	28/09/2030
शुक्र	20/03/2024	चंद्र	07/12/2025	मंगल	26/05/2027	राहु	14/04/2029	गुरु	20/12/2030
सूर्य	28/03/2024	मंगल	14/01/2026	राहु	21/08/2027	गुरु	15/07/2029	शनि	28/03/2031

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
28/03/2031		09/12/2031		09/12/2033		16/07/2034		16/07/2035	
09/12/2031		09/12/2033		16/07/2034		16/07/2035		28/03/2036	
केतु	12/04/2031	शुक्र	09/04/2032	सूर्य	19/12/2033	चंद्र	15/08/2034	मंगल	31/07/2035
शुक्र	25/05/2031	सूर्य	15/05/2032	चंद्र	07/01/2034	मंगल	05/09/2034	राहु	07/09/2035
सूर्य	07/06/2031	चंद्र	15/07/2032	मंगल	20/01/2034	राहु	30/10/2034	गुरु	11/10/2035
चंद्र	28/06/2031	मंगल	27/08/2032	राहु	21/02/2034	गुरु	18/12/2034	शनि	21/11/2035
मंगल	13/07/2031	राहु	14/12/2032	गुरु	23/03/2034	शनि	14/02/2035	बुध	27/12/2035
राहु	20/08/2031	गुरु	22/03/2033	शनि	26/04/2034	बुध	06/04/2035	केतु	11/01/2036
गुरु	23/09/2031	शनि	15/07/2033	बुध	27/05/2034	केतु	28/04/2035	शुक्र	22/02/2036
शनि	03/11/2031	बुध	27/10/2033	केतु	09/06/2034	शुक्र	28/06/2035	सूर्य	06/03/2036
बुध	09/12/2031	केतु	09/12/2033	शुक्र	16/07/2034	सूर्य	16/07/2035	चंद्र	28/03/2036

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
28/03/2036		29/08/2037		08/05/2039		10/11/2040		25/06/2041	
29/08/2037		08/05/2039		10/11/2040		25/06/2041		05/04/2043	
गुरु	05/06/2036	शनि	05/12/2037	बुध	25/07/2039	केतु	23/11/2040	शुक्र	11/10/2041
शनि	26/08/2036	बुध	02/03/2038	केतु	26/08/2039	शुक्र	31/12/2040	सूर्य	13/11/2041
बुध	08/11/2036	केतु	07/04/2038	शुक्र	26/11/2039	सूर्य	11/01/2041	चंद्र	06/01/2042
केतु	08/12/2036	शुक्र	19/07/2038	सूर्य	24/12/2039	चंद्र	30/01/2041	मंगल	13/02/2042
शुक्र	05/03/2037	सूर्य	19/08/2038	चंद्र	08/02/2040	मंगल	13/02/2041	राहु	21/05/2042
सूर्य	31/03/2037	चंद्र	09/10/2038	मंगल	11/03/2040	राहु	19/03/2041	गुरु	16/08/2042
चंद्र	13/05/2037	मंगल	14/11/2038	राहु	02/06/2040	गुरु	18/04/2041	शनि	27/11/2042
मंगल	12/06/2037	राहु	15/02/2039	गुरु	14/08/2040	शनि	24/05/2041	बुध	27/02/2043
राहु	29/08/2037	गुरु	08/05/2039	शनि	10/11/2040	बुध	25/06/2041	केतु	05/04/2043

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
05/04/2043		17/10/2043		06/09/2044		21/04/2045		27/11/2046	
17/10/2043		06/09/2044		21/04/2045		27/11/2046		28/11/2048	
सूर्य	15/04/2043	चंद्र	13/11/2043	मंगल	19/09/2044	राहु	18/07/2045	शनि	23/03/2047
चंद्र	01/05/2043	मंगल	02/12/2043	राहु	23/10/2044	गुरु	04/10/2045	बुध	04/07/2047
मंगल	13/05/2043	राहु	20/01/2044	गुरु	23/11/2044	शनि	04/01/2046	केतु	16/08/2047
राहु	11/06/2043	गुरु	03/03/2044	शनि	29/12/2044	बुध	28/03/2046	शुक्र	16/12/2047
गुरु	07/07/2043	शनि	24/04/2044	बुध	30/01/2045	केतु	01/05/2046	सूर्य	22/01/2048
शनि	07/08/2043	बुध	09/06/2044	केतु	12/02/2045	शुक्र	07/08/2046	चंद्र	23/03/2048
बुध	03/09/2043	केतु	28/06/2044	शुक्र	22/03/2045	सूर्य	05/09/2046	मंगल	05/05/2048
केतु	15/09/2043	शुक्र	21/08/2044	सूर्य	02/04/2045	चंद्र	23/10/2046	राहु	22/08/2048
शुक्र	17/10/2043	सूर्य	06/09/2044	चंद्र	21/04/2045	मंगल	27/11/2046	गुरु	28/11/2048

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
28/11/2048		15/09/2050		11/06/2051		21/07/2053		10/03/2054	
15/09/2050		11/06/2051		21/07/2053		10/03/2054		30/03/2055	
बुध	01/03/2049	केतु	30/09/2050	शुक्र	18/10/2051	सूर्य	02/08/2053	चंद्र	11/04/2054
केतु	08/04/2049	शुक्र	14/11/2050	सूर्य	25/11/2051	चंद्र	21/08/2053	मंगल	03/05/2054
शुक्र	26/07/2049	सूर्य	28/11/2050	चंद्र	29/01/2052	मंगल	04/09/2053	राहु	30/06/2054
सूर्य	28/08/2049	चंद्र	20/12/2050	मंगल	14/03/2052	राहु	09/10/2053	गुरु	21/08/2054
चंद्र	22/10/2049	मंगल	05/01/2051	राहु	07/07/2052	गुरु	08/11/2053	शनि	21/10/2054
मंगल	29/11/2049	राहु	14/02/2051	गुरु	18/10/2052	शनि	15/12/2053	बुध	14/12/2054
राहु	07/03/2050	गुरु	22/03/2051	शनि	17/02/2053	बुध	17/01/2054	केतु	06/01/2055
गुरु	03/06/2050	शनि	04/05/2051	बुध	07/06/2053	केतु	30/01/2054	शुक्र	11/03/2055
शनि	15/09/2050	बुध	11/06/2051	केतु	21/07/2053	शुक्र	10/03/2054	सूर्य	30/03/2055

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
30/03/2055		25/12/2055		18/11/2057		28/07/2059		06/03/2061	
25/12/2055		18/11/2057		28/07/2059		06/03/2061		02/11/2061	
मंगल	15/04/2055	राहु	07/04/2056	गुरु	08/02/2058	बुध	19/10/2059	केतु	20/03/2061
राहु	26/05/2055	गुरु	09/07/2056	शनि	17/05/2058	केतु	22/11/2059	शुक्र	29/04/2061
गुरु	01/07/2055	शनि	27/10/2056	बुध	13/08/2058	शुक्र	28/02/2060	सूर्य	11/05/2061
शनि	12/08/2055	बुध	02/02/2057	केतु	18/09/2058	सूर्य	28/03/2060	चंद्र	31/05/2061
बुध	20/09/2055	केतु	15/03/2057	शुक्र	29/12/2058	चंद्र	16/05/2060	मंगल	14/06/2061
केतु	05/10/2055	शुक्र	08/07/2057	सूर्य	29/01/2059	मंगल	19/06/2060	राहु	20/07/2061
शुक्र	19/11/2055	सूर्य	12/08/2057	चंद्र	22/03/2059	राहु	15/09/2060	गुरु	22/08/2061
सूर्य	03/12/2055	चंद्र	09/10/2057	मंगल	27/04/2059	गुरु	03/12/2060	शनि	29/09/2061
चंद्र	25/12/2055	मंगल	18/11/2057	राहु	28/07/2059	शनि	06/03/2061	बुध	02/11/2061

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
02/11/2061		23/09/2063		17/04/2064		28/03/2065		24/11/2065	
23/09/2063		17/04/2064		28/03/2065		24/11/2065		07/08/2067	
शुक्र	25/02/2062	सूर्य	03/10/2063	चंद्र	16/05/2064	मंगल	11/04/2065	राहु	25/02/2066
सूर्य	31/03/2062	चंद्र	20/10/2063	मंगल	05/06/2064	राहु	17/05/2065	गुरु	19/05/2066
चंद्र	28/05/2062	मंगल	02/11/2063	राहु	26/07/2064	गुरु	18/06/2065	शनि	26/08/2066
मंगल	07/07/2062	राहु	03/12/2063	गुरु	10/09/2064	शनि	27/07/2065	बुध	22/11/2066
राहु	19/10/2062	गुरु	30/12/2063	शनि	04/11/2064	बुध	30/08/2065	केतु	28/12/2066
गुरु	19/01/2063	शनि	01/02/2064	बुध	23/12/2064	केतु	13/09/2065	शुक्र	10/04/2067
शनि	08/05/2063	बुध	01/03/2064	केतु	12/01/2065	शुक्र	23/10/2065	सूर्य	11/05/2067
बुध	14/08/2063	केतु	13/03/2064	शुक्र	11/03/2065	सूर्य	04/11/2065	चंद्र	02/07/2067
केतु	23/09/2063	शुक्र	17/04/2064	सूर्य	28/03/2065	चंद्र	24/11/2065	मंगल	07/08/2067

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
07/08/2067		09/02/2069		27/11/2070		06/03/2071		15/12/2071	
09/02/2069		27/11/2070		06/03/2071		15/12/2071		09/03/2072	
गुरु	20/10/2067	शनि	24/05/2069	केतु	02/12/2070	शुक्र	22/04/2071	सूर्य	19/12/2071
शनि	15/01/2068	बुध	25/08/2069	शुक्र	19/12/2070	सूर्य	07/05/2071	चंद्र	26/12/2071
बुध	02/04/2068	केतु	02/10/2069	सूर्य	24/12/2070	चंद्र	30/05/2071	मंगल	31/12/2071
केतु	05/05/2068	शुक्र	19/01/2070	चंद्र	01/01/2071	मंगल	16/06/2071	राहु	13/01/2072
शुक्र	05/08/2068	सूर्य	21/02/2070	मंगल	07/01/2071	राहु	28/07/2071	गुरु	25/01/2072
सूर्य	01/09/2068	चंद्र	17/04/2070	राहु	22/01/2071	गुरु	04/09/2071	शनि	07/02/2072
चंद्र	17/10/2068	मंगल	25/05/2070	गुरु	04/02/2071	शनि	19/10/2071	बुध	19/02/2072
मंगल	18/11/2068	राहु	31/08/2070	शनि	20/02/2071	बुध	29/11/2071	केतु	24/02/2072
राहु	09/02/2069	गुरु	27/11/2070	बुध	06/03/2071	केतु	15/12/2071	शुक्र	09/03/2072

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
09/03/2072		29/07/2072		06/11/2072		19/07/2073		04/03/2074	
29/07/2072		06/11/2072		19/07/2073		04/03/2074		29/11/2074	
चंद्र	21/03/2072	मंगल	04/08/2072	राहु	14/12/2072	गुरु	19/08/2073	शनि	15/04/2074
मंगल	29/03/2072	राहु	19/08/2072	गुरु	17/01/2073	शनि	24/09/2073	बुध	24/05/2074
राहु	20/04/2072	गुरु	01/09/2072	शनि	27/02/2073	बुध	26/10/2073	केतु	08/06/2074
गुरु	09/05/2072	शनि	17/09/2072	बुध	04/04/2073	केतु	08/11/2073	शुक्र	23/07/2074
शनि	31/05/2072	बुध	01/10/2072	केतु	19/04/2073	शुक्र	16/12/2073	सूर्य	06/08/2074
बुध	20/06/2072	केतु	07/10/2072	शुक्र	31/05/2073	सूर्य	27/12/2073	चंद्र	28/08/2074
केतु	29/06/2072	शुक्र	24/10/2072	सूर्य	13/06/2073	चंद्र	15/01/2074	मंगल	13/09/2074
शुक्र	22/07/2072	सूर्य	28/10/2072	चंद्र	05/07/2073	मंगल	29/01/2074	राहु	24/10/2074
सूर्य	29/07/2072	चंद्र	06/11/2072	मंगल	19/07/2073	राहु	04/03/2074	गुरु	29/11/2074

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
29/11/2074		28/07/2075		17/10/2077		17/06/2078		28/07/2079	
28/07/2075		17/10/2077		17/06/2078		28/07/2079		07/05/2080	
बुध	02/01/2075	शुक्र	10/12/2075	सूर्य	29/10/2077	चंद्र	21/07/2078	मंगल	14/08/2079
केतु	16/01/2075	सूर्य	20/01/2076	चंद्र	18/11/2077	मंगल	14/08/2078	राहु	25/09/2079
शुक्र	25/02/2075	चंद्र	28/03/2076	मंगल	02/12/2077	राहु	14/10/2078	गुरु	02/11/2079
सूर्य	09/03/2075	मंगल	14/05/2076	राहु	08/01/2078	गुरु	07/12/2078	शनि	17/12/2079
चंद्र	29/03/2075	राहु	13/09/2076	गुरु	09/02/2078	शनि	09/02/2079	बुध	26/01/2080
मंगल	12/04/2075	गुरु	30/12/2076	शनि	20/03/2078	बुध	07/04/2079	केतु	12/02/2080
राहु	19/05/2075	शनि	07/05/2077	बुध	23/04/2078	केतु	01/05/2079	शुक्र	30/03/2080
गुरु	20/06/2075	बुध	30/08/2077	केतु	08/05/2078	शुक्र	08/07/2079	सूर्य	13/04/2080
शनि	28/07/2075	केतु	17/10/2077	शुक्र	17/06/2078	सूर्य	28/07/2079	चंद्र	07/05/2080

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 2 वर्ष 5 मास 21 दिन

मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
11/03/2009		01/09/2011		31/08/2028		01/09/2038		01/09/2057	
01/09/2011		31/08/2028		01/09/2038		01/09/2057		01/09/2069	
	00/00/0000	बुध	05/05/2014	शनि	04/08/2029	गुरु	04/01/2042	राहु	01/01/2059
	00/00/0000	शनि	01/12/2015	गुरु	09/05/2031	राहु	14/02/2044	शुक्र	02/05/2061
	00/00/0000	गुरु	28/11/2018	राहु	18/06/2032	शुक्र	25/10/2047	सूर्य	31/12/2061
	00/00/0000	राहु	18/10/2020	शुक्र	29/05/2034	सूर्य	14/11/2048	चंद्र	01/09/2063
	11/03/2009	शुक्र	07/02/2024	सूर्य	18/12/2034	चंद्र	06/07/2051	मंगल	22/07/2064
शुक्र	10/02/2010	सूर्य	17/01/2025	चंद्र	08/05/2036	मंगल	01/12/2052	बुध	12/06/2066
सूर्य	22/07/2010	चंद्र	29/05/2027	मंगल	03/02/2037	बुध	28/11/2055	शनि	22/07/2067
चंद्र	01/09/2011	मंगल	31/08/2028	बुध	01/09/2038	शनि	01/09/2057	गुरु	01/09/2069

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष	
01/09/2069		01/09/2090		31/08/2096		02/09/2111	
01/09/2090		31/08/2096		02/09/2111		00/00/0000	
शुक्र	01/10/2073	सूर्य	01/01/2091	चंद्र	01/10/2098	मंगल	05/04/2112
सूर्य	01/12/2074	चंद्र	01/11/2091	मंगल	11/11/2099	बुध	09/07/2113
चंद्र	31/10/2077	मंगल	11/04/2092	बुध	23/03/2102	शनि	06/04/2114
मंगल	23/05/2079	बुध	22/03/2093	शनि	13/08/2103	गुरु	02/09/2115
बुध	11/09/2082	शनि	11/10/2093	गुरु	03/04/2106	राहु	23/07/2116
शनि	21/08/2084	गुरु	01/11/2094	राहु	02/12/2107	शुक्र	12/03/2117
गुरु	02/05/2088	राहु	02/07/2095	शुक्र	02/11/2110		00/00/0000
राहु	01/09/2090	शुक्र	31/08/2096	सूर्य	02/09/2111		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि	
11/03/2009		10/02/2010		22/07/2010		01/09/2011		05/05/2014	
10/02/2010		22/07/2010		01/09/2011		05/05/2014		01/12/2015	
	00/00/0000	सूर्य	19/02/2010	चंद्र	17/09/2010	बुध	02/02/2012	शनि	28/06/2014
	00/00/0000	चंद्र	13/03/2010	मंगल	17/10/2010	शनि	02/05/2012	गुरु	07/10/2014
	11/03/2009	मंगल	25/03/2010	बुध	19/12/2010	गुरु	21/10/2012	राहु	10/12/2014
मंगल	11/04/2009	बुध	20/04/2010	शनि	26/01/2011	राहु	07/02/2013	शुक्र	31/03/2015
बुध	09/07/2009	शनि	05/05/2010	गुरु	07/04/2011	शुक्र	16/08/2013	सूर्य	02/05/2015
शनि	31/08/2009	गुरु	03/06/2010	राहु	23/05/2011	सूर्य	09/10/2013	चंद्र	21/07/2015
गुरु	09/12/2009	राहु	21/06/2010	शुक्र	09/08/2011	चंद्र	22/02/2014	मंगल	02/09/2015
राहु	10/02/2010	शुक्र	22/07/2010	सूर्य	01/09/2011	मंगल	05/05/2014	बुध	01/12/2015

बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
01/12/2015		28/11/2018		18/10/2020		07/02/2024		17/01/2025	
28/11/2018		18/10/2020		07/02/2024		17/01/2025		29/05/2027	
गुरु	11/06/2016	राहु	12/02/2019	शुक्र	09/06/2021	सूर्य	26/02/2024	चंद्र	17/05/2025
राहु	10/10/2016	शुक्र	27/06/2019	सूर्य	15/08/2021	चंद्र	14/04/2024	मंगल	20/07/2025
शुक्र	10/05/2017	सूर्य	04/08/2019	चंद्र	30/01/2022	मंगल	10/05/2024	बुध	02/12/2025
सूर्य	10/07/2017	चंद्र	08/11/2019	मंगल	30/04/2022	बुध	03/07/2024	शनि	20/02/2026
चंद्र	09/12/2017	मंगल	29/12/2019	बुध	06/11/2022	शनि	04/08/2024	गुरु	22/07/2026
मंगल	28/02/2018	बुध	15/04/2020	शनि	25/02/2023	गुरु	04/10/2024	राहु	26/10/2026
बुध	19/08/2018	शनि	18/06/2020	गुरु	26/09/2023	राहु	11/11/2024	शुक्र	11/04/2027
शनि	28/11/2018	गुरु	18/10/2020	राहु	07/02/2024	शुक्र	17/01/2025	सूर्य	29/05/2027

बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र	
29/05/2027		31/08/2028		04/08/2029		09/05/2031		18/06/2032	
31/08/2028		04/08/2029		09/05/2031		18/06/2032		29/05/2034	
मंगल	02/07/2027	शनि	02/10/2028	गुरु	26/11/2029	राहु	23/06/2031	शुक्र	03/11/2032
बुध	13/09/2027	गुरु	30/11/2028	राहु	05/02/2030	शुक्र	10/09/2031	सूर्य	12/12/2032
शनि	25/10/2027	राहु	07/01/2029	शुक्र	10/06/2030	सूर्य	03/10/2031	चंद्र	21/03/2033
गुरु	14/01/2028	शुक्र	13/03/2029	सूर्य	16/07/2030	चंद्र	28/11/2031	मंगल	13/05/2033
राहु	05/03/2028	सूर्य	01/04/2029	चंद्र	13/10/2030	मंगल	28/12/2031	बुध	01/09/2033
शुक्र	03/06/2028	चंद्र	18/05/2029	मंगल	29/11/2030	बुध	01/03/2032	शनि	06/11/2033
सूर्य	28/06/2028	मंगल	12/06/2029	बुध	11/03/2031	शनि	07/04/2032	गुरु	11/03/2034
चंद्र	31/08/2028	बुध	04/08/2029	शनि	09/05/2031	गुरु	18/06/2032	राहु	29/05/2034

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु	
29/05/2034		18/12/2034		08/05/2036		03/02/2037		01/09/2038	
18/12/2034		08/05/2036		03/02/2037		01/09/2038		04/01/2042	
सूर्य	09/06/2034	चंद्र	26/02/2035	मंगल	28/05/2036	बुध	04/05/2037	गुरु	04/04/2039
चंद्र	08/07/2034	मंगल	05/04/2035	बुध	10/07/2036	शनि	27/06/2037	राहु	17/08/2039
मंगल	23/07/2034	बुध	24/06/2035	शनि	04/08/2036	गुरु	06/10/2037	शुक्र	11/04/2040
बुध	24/08/2034	शनि	10/08/2035	गुरु	21/09/2036	राहु	09/12/2037	सूर्य	17/06/2040
शनि	11/09/2034	गुरु	07/11/2035	राहु	21/10/2036	शुक्र	30/03/2038	चंद्र	04/12/2040
गुरु	17/10/2034	राहु	02/01/2036	शुक्र	12/12/2036	सूर्य	01/05/2038	मंगल	04/03/2041
राहु	09/11/2034	शुक्र	10/04/2036	सूर्य	27/12/2036	चंद्र	20/07/2038	बुध	13/09/2041
शुक्र	18/12/2034	सूर्य	08/05/2036	चंद्र	03/02/2037	मंगल	01/09/2038	शनि	04/01/2042

गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
04/01/2042		14/02/2044		25/10/2047		14/11/2048		06/07/2051	
14/02/2044		25/10/2047		14/11/2048		06/07/2051		01/12/2052	
राहु	30/03/2042	शुक्र	02/11/2044	सूर्य	16/11/2047	चंद्र	28/03/2049	मंगल	13/08/2051
शुक्र	27/08/2042	सूर्य	16/01/2045	चंद्र	08/01/2048	मंगल	07/06/2049	बुध	02/11/2051
सूर्य	09/10/2042	चंद्र	22/07/2045	मंगल	06/02/2048	बुध	06/11/2049	शनि	19/12/2051
चंद्र	24/01/2043	मंगल	30/10/2045	बुध	06/04/2048	शनि	03/02/2050	गुरु	19/03/2052
मंगल	22/03/2043	बुध	31/05/2046	शनि	12/05/2048	गुरु	22/07/2050	राहु	15/05/2052
बुध	22/07/2043	शनि	03/10/2046	गुरु	19/07/2048	राहु	07/11/2050	शुक्र	23/08/2052
शनि	01/10/2043	गुरु	28/05/2047	राहु	31/08/2048	शुक्र	13/05/2051	सूर्य	20/09/2052
गुरु	14/02/2044	राहु	25/10/2047	शुक्र	14/11/2048	सूर्य	06/07/2051	चंद्र	01/12/2052

गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
01/12/2052		28/11/2055		01/09/2057		01/01/2059		02/05/2061	
28/11/2055		01/09/2057		01/01/2059		02/05/2061		31/12/2061	
बुध	22/05/2053	शनि	26/01/2056	राहु	25/10/2057	शुक्र	15/06/2059	सूर्य	15/05/2061
शनि	31/08/2053	गुरु	18/05/2056	शुक्र	27/01/2058	सूर्य	02/08/2059	चंद्र	18/06/2061
गुरु	11/03/2054	राहु	29/07/2056	सूर्य	23/02/2058	चंद्र	28/11/2059	मंगल	06/07/2061
राहु	10/07/2054	शुक्र	01/12/2056	चंद्र	02/05/2058	मंगल	30/01/2060	बुध	13/08/2061
शुक्र	08/02/2055	सूर्य	06/01/2057	मंगल	07/06/2058	बुध	12/06/2060	शनि	05/09/2061
सूर्य	09/04/2055	चंद्र	05/04/2057	बुध	23/08/2058	शनि	30/08/2060	गुरु	18/10/2061
चंद्र	08/09/2055	मंगल	22/05/2057	शनि	07/10/2058	गुरु	27/01/2061	राहु	14/11/2061
मंगल	28/11/2055	बुध	01/09/2057	गुरु	01/01/2059	राहु	02/05/2061	शुक्र	31/12/2061

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु	
31/12/2061		01/09/2063		22/07/2064		12/06/2066		22/07/2067	
01/09/2063		22/07/2064		12/06/2066		22/07/2067		01/09/2069	
चंद्र	26/03/2062	मंगल	25/09/2063	बुध	07/11/2064	शनि	19/07/2066	गुरु	05/12/2067
मंगल	10/05/2062	बुध	15/11/2063	शनि	10/01/2065	गुरु	29/09/2066	राहु	29/02/2068
बुध	14/08/2062	शनि	15/12/2063	गुरु	12/05/2065	राहु	13/11/2066	शुक्र	28/07/2068
शनि	09/10/2062	गुरु	10/02/2064	राहु	27/07/2065	शुक्र	31/01/2067	सूर्य	09/09/2068
गुरु	24/01/2063	राहु	17/03/2064	शुक्र	08/12/2065	सूर्य	22/02/2067	चंद्र	25/12/2068
राहु	02/04/2063	शुक्र	20/05/2064	सूर्य	16/01/2066	चंद्र	19/04/2067	मंगल	20/02/2069
शुक्र	29/07/2063	सूर्य	07/06/2064	चंद्र	21/04/2066	मंगल	20/05/2067	बुध	21/06/2069
सूर्य	01/09/2063	चंद्र	22/07/2064	मंगल	12/06/2066	बुध	22/07/2067	शनि	01/09/2069

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध	
01/09/2069		01/10/2073		01/12/2074		31/10/2077		23/05/2079	
01/10/2073		01/12/2074		31/10/2077		23/05/2079		11/09/2082	
शुक्र	18/06/2070	सूर्य	25/10/2073	चंद्र	28/04/2075	मंगल	12/12/2077	बुध	29/11/2079
सूर्य	08/09/2070	चंद्र	23/12/2073	मंगल	16/07/2075	बुध	12/03/2078	शनि	19/03/2080
चंद्र	04/04/2071	मंगल	23/01/2074	बुध	31/12/2075	शनि	04/05/2078	गुरु	18/10/2080
मंगल	23/07/2071	बुध	31/03/2074	शनि	07/04/2076	गुरु	11/08/2078	राहु	01/03/2081
बुध	14/03/2072	शनि	10/05/2074	गुरु	12/10/2076	राहु	14/10/2078	शुक्र	22/10/2081
शनि	30/07/2072	गुरु	24/07/2074	राहु	07/02/2077	शुक्र	01/02/2079	सूर्य	28/12/2081
गुरु	18/04/2073	राहु	09/09/2074	शुक्र	02/09/2077	सूर्य	05/03/2079	चंद्र	13/06/2082
राहु	01/10/2073	शुक्र	01/12/2074	सूर्य	31/10/2077	चंद्र	23/05/2079	मंगल	11/09/2082

शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
11/09/2082		21/08/2084		02/05/2088		01/09/2090		01/01/2091	
21/08/2084		02/05/2088		01/09/2090		01/01/2091		01/11/2091	
शनि	16/11/2082	गुरु	16/04/2085	राहु	04/08/2088	सूर्य	08/09/2090	चंद्र	12/02/2091
गुरु	21/03/2083	राहु	12/09/2085	शुक्र	17/01/2089	चंद्र	24/09/2090	मंगल	06/03/2091
राहु	08/06/2083	शुक्र	02/06/2086	सूर्य	05/03/2089	मंगल	03/10/2090	बुध	23/04/2091
शुक्र	24/10/2083	सूर्य	16/08/2086	चंद्र	02/07/2089	बुध	23/10/2090	शनि	21/05/2091
सूर्य	02/12/2083	चंद्र	19/02/2087	मंगल	03/09/2089	शनि	03/11/2090	गुरु	14/07/2091
चंद्र	10/03/2084	मंगल	30/05/2087	बुध	15/01/2090	गुरु	24/11/2090	राहु	17/08/2091
मंगल	01/05/2084	बुध	29/12/2087	शनि	04/04/2090	राहु	08/12/2090	शुक्र	15/10/2091
बुध	21/08/2084	शनि	02/05/2088	गुरु	01/09/2090	शुक्र	01/01/2091	सूर्य	01/11/2091

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु	
01/11/2091		11/04/2092		22/03/2093		11/10/2093		01/11/2094	
11/04/2092		22/03/2093		11/10/2093		01/11/2094		02/07/2095	
मंगल	13/11/2091	बुध	05/06/2092	शनि	10/04/2093	गुरु	18/12/2093	राहु	28/11/2094
बुध	08/12/2091	शनि	06/07/2092	गुरु	16/05/2093	राहु	30/01/2094	शुक्र	14/01/2095
शनि	24/12/2091	गुरु	05/09/2092	राहु	07/06/2093	शुक्र	15/04/2094	सूर्य	28/01/2095
गुरु	21/01/2092	राहु	13/10/2092	शुक्र	17/07/2093	सूर्य	06/05/2094	चंद्र	02/03/2095
राहु	08/02/2092	शुक्र	20/12/2092	सूर्य	28/07/2093	चंद्र	29/06/2094	मंगल	20/03/2095
शुक्र	11/03/2092	सूर्य	08/01/2093	चंद्र	25/08/2093	मंगल	27/07/2094	बुध	28/04/2095
सूर्य	20/03/2092	चंद्र	25/02/2093	मंगल	09/09/2093	बुध	26/09/2094	शनि	20/05/2095
चंद्र	11/04/2092	मंगल	22/03/2093	बुध	11/10/2093	शनि	01/11/2094	गुरु	02/07/2095

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि	
02/07/2095		31/08/2096		01/10/2098		11/11/2099		23/03/2102	
31/08/2096		01/10/2098		11/11/2099		23/03/2102		13/08/2103	
शुक्र	23/09/2095	चंद्र	15/12/2096	मंगल	31/10/2098	बुध	27/03/2100	शनि	09/05/2102
सूर्य	17/10/2095	मंगल	09/02/2097	बुध	03/01/2099	शनि	15/06/2100	गुरु	07/08/2102
चंद्र	15/12/2095	बुध	09/06/2097	शनि	10/02/2099	गुरु	13/11/2100	राहु	02/10/2102
मंगल	15/01/2096	शनि	19/08/2097	गुरु	22/04/2099	राहु	17/02/2101	शुक्र	09/01/2103
बुध	22/03/2096	गुरु	30/12/2097	राहु	06/06/2099	शुक्र	04/08/2101	सूर्य	06/02/2103
शनि	01/05/2096	राहु	25/03/2098	शुक्र	24/08/2099	सूर्य	21/09/2101	चंद्र	17/04/2103
गुरु	15/07/2096	शुक्र	20/08/2098	सूर्य	16/09/2099	चंद्र	19/01/2102	मंगल	25/05/2103
राहु	31/08/2096	सूर्य	01/10/2098	चंद्र	11/11/2099	मंगल	23/03/2102	बुध	13/08/2103

चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
13/08/2103		03/04/2106		02/12/2107		02/11/2110		02/09/2111	
03/04/2106		02/12/2107		02/11/2110		02/09/2111		05/04/2112	
गुरु	29/01/2104	राहु	09/06/2106	शुक्र	26/06/2108	सूर्य	19/11/2110	मंगल	18/09/2111
राहु	15/05/2104	शुक्र	06/10/2106	सूर्य	25/08/2108	चंद्र	31/12/2110	बुध	22/10/2111
शुक्र	19/11/2104	सूर्य	08/11/2106	चंद्र	20/01/2109	मंगल	22/01/2111	शनि	11/11/2111
सूर्य	11/01/2105	चंद्र	01/02/2107	मंगल	09/04/2109	बुध	11/03/2111	गुरु	19/12/2111
चंद्र	25/05/2105	मंगल	18/03/2107	बुध	23/09/2109	शनि	08/04/2111	राहु	12/01/2112
मंगल	05/08/2105	बुध	22/06/2107	शनि	31/12/2109	गुरु	01/06/2111	शुक्र	23/02/2112
बुध	03/01/2106	शनि	17/08/2107	गुरु	06/07/2110	राहु	05/07/2111	सूर्य	06/03/2112
शनि	03/04/2106	गुरु	02/12/2107	राहु	02/11/2110	शुक्र	02/09/2111	चंद्र	05/04/2112

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 6 वर्ष 5 मास 29 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
11/03/2009		09/09/2015		09/09/2023		08/09/2024		09/09/2026	
09/09/2015		09/09/2023		08/09/2024		09/09/2026		09/09/2029	
सिद्ध	19/01/2010	संक	20/06/2017	मंग	19/09/2023	पिंग	19/10/2024	धांय	09/12/2026
संक	10/08/2011	मंग	09/09/2017	पिंग	10/10/2023	धांय	19/12/2024	भ्राम	10/04/2027
मंग	20/10/2011	पिंग	18/02/2018	धांय	09/11/2023	भ्राम	10/03/2025	भद्रि	09/09/2027
पिंग	10/03/2012	धांय	20/10/2018	भ्राम	20/12/2023	भद्रि	20/06/2025	उल्क	10/03/2028
धांय	09/10/2012	भ्राम	09/09/2019	भद्रि	08/02/2024	उल्क	19/10/2025	सिद्ध	09/10/2028
भ्राम	20/07/2013	भद्रि	19/10/2020	उल्क	09/04/2024	सिद्ध	10/03/2026	संक	09/06/2029
भद्रि	10/07/2014	उल्क	18/02/2022	सिद्ध	19/06/2024	संक	20/08/2026	मंग	10/07/2029
उल्क	09/09/2015	सिद्ध	09/09/2023	संक	08/09/2024	मंग	09/09/2026	पिंग	09/09/2029

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
09/09/2029		09/09/2033		09/09/2038		08/09/2044		09/09/2051	
09/09/2033		09/09/2038		08/09/2044		09/09/2051		09/09/2059	
भ्राम	18/02/2030	भद्रि	20/05/2034	उल्क	09/09/2039	सिद्ध	19/01/2046	संक	20/06/2053
भद्रि	09/09/2030	उल्क	21/03/2035	सिद्ध	08/11/2040	संक	10/08/2047	मंग	09/09/2053
उल्क	10/05/2031	सिद्ध	10/03/2036	संक	10/03/2042	मंग	20/10/2047	पिंग	18/02/2054
सिद्ध	19/02/2032	संक	20/04/2037	मंग	10/05/2042	पिंग	10/03/2048	धांय	20/10/2054
संक	08/01/2033	मंग	09/06/2037	पिंग	09/09/2042	धांय	09/10/2048	भ्राम	09/09/2055
मंग	18/02/2033	पिंग	19/09/2037	धांय	11/03/2043	भ्राम	20/07/2049	भद्रि	19/10/2056
पिंग	10/05/2033	धांय	18/02/2038	भ्राम	09/11/2043	भद्रि	10/07/2050	उल्क	18/02/2058
धांय	09/09/2033	भ्राम	09/09/2038	भद्रि	08/09/2044	उल्क	09/09/2051	सिद्ध	09/09/2059

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
09/09/2059		08/09/2060		09/09/2062		09/09/2065		09/09/2069	
08/09/2060		09/09/2062		09/09/2065		09/09/2069		09/09/2074	
मंग	19/09/2059	पिंग	19/10/2060	धांय	09/12/2062	भ्राम	18/02/2066	भद्रि	20/05/2070
पिंग	10/10/2059	धांय	19/12/2060	भ्राम	10/04/2063	भद्रि	09/09/2066	उल्क	21/03/2071
धांय	09/11/2059	भ्राम	10/03/2061	भद्रि	09/09/2063	उल्क	10/05/2067	सिद्ध	10/03/2072
भ्राम	20/12/2059	भद्रि	20/06/2061	उल्क	10/03/2064	सिद्ध	19/02/2068	संक	20/04/2073
भद्रि	08/02/2060	उल्क	19/10/2061	सिद्ध	09/10/2064	संक	08/01/2069	मंग	09/06/2073
उल्क	09/04/2060	सिद्ध	10/03/2062	संक	09/06/2065	मंग	18/02/2069	पिंग	19/09/2073
सिद्ध	19/06/2060	संक	20/08/2062	मंग	10/07/2065	पिंग	10/05/2069	धांय	18/02/2074
संक	08/09/2060	मंग	09/09/2062	पिंग	09/09/2065	धांय	09/09/2069	भ्राम	09/09/2074

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
09/09/2074		08/09/2080		09/09/2087		09/09/2095		08/09/2096	
08/09/2080		09/09/2087		09/09/2095		08/09/2096		09/09/2098	
उल्क	09/09/2075	सिद्ध	19/01/2082	संक	20/06/2089	मंग	19/09/2095	पिंग	19/10/2096
सिद्ध	08/11/2076	संक	10/08/2083	मंग	09/09/2089	पिंग	10/10/2095	धांय	19/12/2096
संक	10/03/2078	मंग	20/10/2083	पिंग	18/02/2090	धांय	09/11/2095	भ्राम	10/03/2097
मंग	10/05/2078	पिंग	10/03/2084	धांय	20/10/2090	भ्राम	20/12/2095	भद्रि	20/06/2097
पिंग	09/09/2078	धांय	09/10/2084	भ्राम	09/09/2091	भद्रि	08/02/2096	उल्क	19/10/2097
धांय	11/03/2079	भ्राम	20/07/2085	भद्रि	19/10/2092	उल्क	09/04/2096	सिद्ध	10/03/2098
भ्राम	09/11/2079	भद्रि	10/07/2086	उल्क	18/02/2094	सिद्ध	19/06/2096	संक	20/08/2098
भद्रि	08/09/2080	उल्क	09/09/2087	सिद्ध	09/09/2095	संक	08/09/2096	मंग	09/09/2098

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
09/09/2098		10/09/2101		10/09/2105		10/09/2110		09/09/2116	
10/09/2101		10/09/2105		10/09/2110		09/09/2116		00/00/0000	
धांय	09/12/2098	भ्राम	19/02/2102	भद्रि	21/05/2106	उल्क	10/09/2111	सिद्ध	12/03/2117
भ्राम	10/04/2099	भद्रि	10/09/2102	उल्क	22/03/2107	सिद्ध	09/11/2112		00/00/0000
भद्रि	09/09/2099	उल्क	11/05/2103	सिद्ध	11/03/2108	संक	11/03/2114		00/00/0000
उल्क	11/03/2100	सिद्ध	20/02/2104	संक	21/04/2109	मंग	11/05/2114		00/00/0000
सिद्ध	10/10/2100	संक	09/01/2105	मंग	10/06/2109	पिंग	10/09/2114		00/00/0000
संक	10/06/2101	मंग	19/02/2105	पिंग	20/09/2109	धांय	12/03/2115		00/00/0000
मंग	11/07/2101	पिंग	11/05/2105	धांय	19/02/2110	भ्राम	10/11/2115		00/00/0000
पिंग	10/09/2101	धांय	10/09/2105	भ्राम	10/09/2110	भद्रि	09/09/2116		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय	
20/06/2025		19/10/2025		10/03/2026		20/08/2026		09/09/2026	
19/10/2025		10/03/2026		20/08/2026		09/09/2026		09/12/2026	
उल्क	10/07/2025	सिद्ध	16/11/2025	संक	15/04/2026	मंग	20/08/2026	धांय	17/09/2026
सिद्ध	03/08/2025	संक	17/12/2025	मंग	20/04/2026	पिंग	21/08/2026	भ्राम	27/09/2026
संक	30/08/2025	मंग	21/12/2025	पिंग	29/04/2026	धांय	23/08/2026	भद्रि	09/10/2026
मंग	02/09/2025	पिंग	29/12/2025	धांय	12/05/2026	भ्राम	25/08/2026	उल्क	25/10/2026
पिंग	09/09/2025	धांय	10/01/2026	भ्राम	30/05/2026	भद्रि	28/08/2026	सिद्ध	11/11/2026
धांय	19/09/2025	भ्राम	26/01/2026	भद्रि	22/06/2026	उल्क	31/08/2026	संक	02/12/2026
भ्राम	02/10/2025	भद्रि	15/02/2026	उल्क	19/07/2026	सिद्ध	04/09/2026	मंग	04/12/2026
भद्रि	19/10/2025	उल्क	10/03/2026	सिद्ध	20/08/2026	संक	09/09/2026	पिंग	09/12/2026

धांय - भ्राम		धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक	
09/12/2026		10/04/2027		09/09/2027		10/03/2028		09/10/2028	
10/04/2027		09/09/2027		10/03/2028		09/10/2028		09/06/2029	
भ्राम	23/12/2026	भद्रि	01/05/2027	उल्क	10/10/2027	सिद्ध	20/04/2028	संक	02/12/2028
भद्रि	09/01/2027	उल्क	27/05/2027	सिद्ध	14/11/2027	संक	07/06/2028	मंग	09/12/2028
उल्क	29/01/2027	सिद्ध	25/06/2027	संक	25/12/2027	मंग	13/06/2028	पिंग	22/12/2028
सिद्ध	22/02/2027	संक	29/07/2027	मंग	30/12/2027	पिंग	24/06/2028	धांय	12/01/2029
संक	21/03/2027	मंग	02/08/2027	पिंग	09/01/2028	धांय	12/07/2028	भ्राम	08/02/2029
मंग	24/03/2027	पिंग	11/08/2027	धांय	24/01/2028	भ्राम	05/08/2028	भद्रि	13/03/2029
पिंग	31/03/2027	धांय	23/08/2027	भ्राम	13/02/2028	भद्रि	03/09/2028	उल्क	23/04/2029
धांय	10/04/2027	भ्राम	09/09/2027	भद्रि	10/03/2028	उल्क	09/10/2028	सिद्ध	09/06/2029

धांय - मंग		धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क	
09/06/2029		10/07/2029		09/09/2029		18/02/2030		09/09/2030	
10/07/2029		09/09/2029		18/02/2030		09/09/2030		10/05/2031	
मंग	10/06/2029	पिंग	13/07/2029	भ्राम	27/09/2029	भद्रि	18/03/2030	उल्क	20/10/2030
पिंग	12/06/2029	धांय	18/07/2029	भद्रि	19/10/2029	उल्क	21/04/2030	सिद्ध	06/12/2030
धांय	14/06/2029	भ्राम	25/07/2029	उल्क	15/11/2029	सिद्ध	30/05/2030	संक	29/01/2031
भ्राम	18/06/2029	भद्रि	03/08/2029	सिद्ध	17/12/2029	संक	15/07/2030	मंग	05/02/2031
भद्रि	22/06/2029	उल्क	13/08/2029	संक	22/01/2030	मंग	20/07/2030	पिंग	18/02/2031
उल्क	27/06/2029	सिद्ध	24/08/2029	मंग	26/01/2030	पिंग	31/07/2030	धांय	11/03/2031
सिद्ध	03/07/2029	संक	07/09/2029	पिंग	05/02/2030	धांय	17/08/2030	भ्राम	07/04/2031
संक	10/07/2029	मंग	09/09/2029	धांय	18/02/2030	भ्राम	09/09/2030	भद्रि	10/05/2031

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भ्राम - सिद्ध		भ्राम - संक		भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय	
10/05/2031		19/02/2032		08/01/2033		18/02/2033		10/05/2033	
19/02/2032		08/01/2033		18/02/2033		10/05/2033		09/09/2033	
सिद्ध	05/07/2031	संक	01/05/2032	मंग	09/01/2033	पिंग	22/02/2033	धांय	20/05/2033
संक	06/09/2031	मंग	10/05/2032	पिंग	12/01/2033	धांय	01/03/2033	भ्राम	03/06/2033
मंग	14/09/2031	पिंग	28/05/2032	धांय	15/01/2033	भ्राम	10/03/2033	भद्रि	20/06/2033
पिंग	29/09/2031	धांय	24/06/2032	भ्राम	19/01/2033	भद्रि	21/03/2033	उल्क	10/07/2033
धांय	23/10/2031	भ्राम	30/07/2032	भद्रि	25/01/2033	उल्क	04/04/2033	सिद्ध	03/08/2033
भ्राम	24/11/2031	भद्रि	13/09/2032	उल्क	01/02/2033	सिद्ध	20/04/2033	संक	30/08/2033
भद्रि	02/01/2032	उल्क	06/11/2032	सिद्ध	09/02/2033	संक	08/05/2033	मंग	02/09/2033
उल्क	19/02/2032	सिद्ध	08/01/2033	संक	18/02/2033	मंग	10/05/2033	पिंग	09/09/2033

भद्रि - भद्रि		भद्रि - उल्क		भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग	
09/09/2033		20/05/2034		21/03/2035		10/03/2036		20/04/2037	
20/05/2034		21/03/2035		10/03/2036		20/04/2037		09/06/2037	
भद्रि	14/10/2033	उल्क	10/07/2034	सिद्ध	29/05/2035	संक	08/06/2036	मंग	21/04/2037
उल्क	25/11/2033	सिद्ध	07/09/2034	संक	16/08/2035	मंग	19/06/2036	पिंग	24/04/2037
सिद्ध	14/01/2034	संक	14/11/2034	मंग	26/08/2035	पिंग	12/07/2036	धांय	28/04/2037
संक	11/03/2034	मंग	22/11/2034	पिंग	14/09/2035	धांय	15/08/2036	भ्राम	04/05/2037
मंग	18/03/2034	पिंग	09/12/2034	धांय	14/10/2035	भ्राम	29/09/2036	भद्रि	11/05/2037
पिंग	01/04/2034	धांय	04/01/2035	भ्राम	22/11/2035	भद्रि	24/11/2036	उल्क	19/05/2037
धांय	22/04/2034	भ्राम	06/02/2035	भद्रि	11/01/2036	उल्क	31/01/2037	सिद्ध	29/05/2037
भ्राम	20/05/2034	भद्रि	21/03/2035	उल्क	10/03/2036	सिद्ध	20/04/2037	संक	09/06/2037

भद्रि - पिंग		भद्रि - धांय		भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध	
09/06/2037		19/09/2037		18/02/2038		09/09/2038		09/09/2039	
19/09/2037		18/02/2038		09/09/2038		09/09/2039		08/11/2040	
पिंग	15/06/2037	धांय	02/10/2037	भ्राम	13/03/2038	उल्क	09/11/2038	सिद्ध	01/12/2039
धांय	23/06/2037	भ्राम	18/10/2037	भद्रि	10/04/2038	सिद्ध	19/01/2039	संक	05/03/2040
भ्राम	05/07/2037	भद्रि	09/11/2037	उल्क	14/05/2038	संक	10/04/2039	मंग	17/03/2040
भद्रि	19/07/2037	उल्क	04/12/2037	सिद्ध	22/06/2038	मंग	20/04/2039	पिंग	09/04/2040
उल्क	05/08/2037	सिद्ध	03/01/2038	संक	06/08/2038	पिंग	10/05/2039	धांय	15/05/2040
सिद्ध	24/08/2037	संक	05/02/2038	मंग	12/08/2038	धांय	10/06/2039	भ्राम	01/07/2040
संक	16/09/2037	मंग	10/02/2038	पिंग	23/08/2038	भ्राम	20/07/2039	भद्रि	29/08/2040
मंग	19/09/2037	पिंग	18/02/2038	धांय	09/09/2038	भद्रि	09/09/2039	उल्क	08/11/2040

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : धनु 3 वर्ष 3 मास 24 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : उ०फाल्गुनी - 1 अपसव्य
देह : कर्क जीव : धनु

धनु 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष	
11/03/2009		04/07/2012		05/07/2019		05/07/2035		04/07/2044	
04/07/2012		05/07/2019		05/07/2035		04/07/2044		05/07/2049	
	00/00/0000	वृश्चि	29/01/2013	तुला	26/06/2022	कन्या	13/06/2036	सिंह	19/10/2044
	00/00/0000	तुला	19/05/2014	कन्या	28/02/2024	सिंह	21/12/2036	कर्क	08/01/2046
	00/00/0000	कन्या	11/02/2015	सिंह	02/02/2025	कर्क	04/03/2039	मीन	08/08/2046
	00/00/0000	सिंह	09/07/2015	कर्क	30/12/2028	मीन	20/03/2040	कुंभ	01/11/2046
	11/03/2009	कर्क	25/03/2017	मीन	09/11/2030	कुंभ	20/08/2040	मक	25/01/2047
कर्क	01/06/2010	मीन	16/01/2018	कुंभ	08/08/2031	मक	20/01/2041	धनु	25/08/2047
मीन	31/07/2011	कुंभ	15/05/2018	मक	06/05/2032	धनु	06/02/2042	वृश्चि	21/01/2048
कुंभ	17/01/2012	मक	11/09/2018	धनु	16/03/2034	वृश्चि	01/11/2042	तुला	26/12/2048
मक	04/07/2012	धनु	05/07/2019	वृश्चि	05/07/2035	तुला	04/07/2044	कन्या	05/07/2049

कर्क 21 वर्ष		मीन 10 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
05/07/2049		05/07/2070		04/07/2080		04/07/2084		04/07/2088	
05/07/2070		04/07/2080		04/07/2084		04/07/2088		00/00/0000	
कर्क	21/08/2054	मीन	03/09/2071	कुंभ	10/09/2080	मक	10/09/2084	धनु	02/09/2089
मीन	29/01/2057	कुंभ	19/02/2072	मक	17/11/2080	धनु	27/02/2085	वृश्चि	26/06/2090
कुंभ	20/01/2058	मक	07/08/2072	धनु	06/05/2081	वृश्चि	26/06/2085	तुला	06/05/2092
मक	12/01/2059	धनु	06/10/2073	वृश्चि	02/09/2081	तुला	25/03/2086	कन्या	23/05/2093
धनु	22/06/2061	वृश्चि	30/07/2074	तुला	01/06/2082	कन्या	25/08/2086	सिंह	22/12/2093
वृश्चि	08/03/2063	तुला	09/06/2076	कन्या	01/11/2082	सिंह	18/11/2086	कर्क	11/03/2095
तुला	02/02/2067	कन्या	26/06/2077	सिंह	25/01/2083	कर्क	10/11/2087		00/00/0000
कन्या	15/04/2069	सिंह	25/01/2078	कर्क	17/01/2084	मीन	27/04/2088		00/00/0000
सिंह	05/07/2070	कर्क	04/07/2080	मीन	04/07/2084	कुंभ	04/07/2088		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - कर्क		तुला - मीन		तुला - कुंभ		तुला - मक		तुला - धनु	
02/02/2025		30/12/2028		09/11/2030		08/08/2031		06/05/2032	
30/12/2028		09/11/2030		08/08/2031		06/05/2032		16/03/2034	
कर्क	16/01/2026	मीन	19/03/2029	कुंभ	22/11/2030	मक	21/08/2031	धनु	24/07/2032
मीन	01/07/2026	कुंभ	19/04/2029	मक	05/12/2030	धनु	21/09/2031	वृश्चि	17/09/2032
कुंभ	06/09/2026	मक	21/05/2029	धनु	05/01/2031	वृश्चि	14/10/2031	तुला	22/01/2033
मक	11/11/2026	धनु	08/08/2029	वृश्चि	27/01/2031	तुला	03/12/2031	कन्या	03/04/2033
धनु	26/04/2027	वृश्चि	02/10/2029	तुला	19/03/2031	कन्या	01/01/2032	सिंह	12/05/2033
वृश्चि	20/08/2027	तुला	06/02/2030	कन्या	16/04/2031	सिंह	16/01/2032	कर्क	25/10/2033
तुला	11/05/2028	कन्या	18/04/2030	सिंह	02/05/2031	कर्क	23/03/2032	मीन	12/01/2034
कन्या	08/10/2028	सिंह	27/05/2030	कर्क	08/07/2031	मीन	23/04/2032	कुंभ	13/02/2034
सिंह	30/12/2028	कर्क	09/11/2030	मीन	08/08/2031	कुंभ	06/05/2032	मक	16/03/2034

तुला - वृश्चि		कन्या - कन्या		कन्या - सिंह		कन्या - कर्क		कन्या - मीन	
16/03/2034		05/07/2035		13/06/2036		21/12/2036		04/03/2039	
05/07/2035		13/06/2036		21/12/2036		04/03/2039		20/03/2040	
वृश्चि	24/04/2034	कन्या	10/08/2035	सिंह	24/06/2036	कर्क	05/07/2037	मीन	17/04/2039
तुला	22/07/2034	सिंह	30/08/2035	कर्क	10/08/2036	मीन	07/10/2037	कुंभ	05/05/2039
कन्या	09/09/2034	कर्क	22/11/2035	मीन	01/09/2036	कुंभ	13/11/2037	मक	23/05/2039
सिंह	07/10/2034	मीन	01/01/2036	कुंभ	10/09/2036	मक	20/12/2037	धनु	06/07/2039
कर्क	31/01/2035	कुंभ	17/01/2036	मक	19/09/2036	धनु	24/03/2038	वृश्चि	07/08/2039
मीन	28/03/2035	मक	02/02/2036	धनु	11/10/2036	वृश्चि	28/05/2038	तुला	17/10/2039
कुंभ	19/04/2035	धनु	13/03/2036	वृश्चि	27/10/2036	तुला	24/10/2038	कन्या	26/11/2039
मक	11/05/2035	वृश्चि	10/04/2036	तुला	01/12/2036	कन्या	16/01/2039	सिंह	18/12/2039
धनु	05/07/2035	तुला	13/06/2036	कन्या	21/12/2036	सिंह	04/03/2039	कर्क	20/03/2040

कन्या - कुंभ		कन्या - मक		कन्या - धनु		कन्या - वृश्चि		कन्या - तुला	
20/03/2040		20/08/2040		20/01/2041		06/02/2042		01/11/2042	
20/08/2040		20/01/2041		06/02/2042		01/11/2042		04/07/2044	
कुंभ	27/03/2040	मक	27/08/2040	धनु	05/03/2041	वृश्चि	28/02/2042	तुला	23/02/2043
मक	03/04/2040	धनु	14/09/2040	वृश्चि	06/04/2041	तुला	19/04/2042	कन्या	28/04/2043
धनु	21/04/2040	वृश्चि	26/09/2040	तुला	16/06/2041	कन्या	17/05/2042	सिंह	02/06/2043
वृश्चि	04/05/2040	तुला	25/10/2040	कन्या	26/07/2041	सिंह	01/06/2042	कर्क	30/10/2043
तुला	01/06/2040	कन्या	10/11/2040	सिंह	17/08/2041	कर्क	06/08/2042	मीन	09/01/2044
कन्या	17/06/2040	सिंह	19/11/2040	कर्क	18/11/2041	मीन	06/09/2042	कुंभ	06/02/2044
सिंह	26/06/2040	कर्क	26/12/2040	मीन	02/01/2042	कुंभ	18/09/2042	मक	06/03/2044
कर्क	02/08/2040	मीन	13/01/2041	कुंभ	19/01/2042	मक	01/10/2042	धनु	16/05/2044
मीन	20/08/2040	कुंभ	20/01/2041	मक	06/02/2042	धनु	01/11/2042	वृश्चि	04/07/2044

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - सिंह		सिंह - कर्क		सिंह - मीन		सिंह - कुंभ		सिंह - मक	
04/07/2044		19/10/2044		08/01/2046		08/08/2046		01/11/2046	
19/10/2044		08/01/2046		08/08/2046		01/11/2046		25/01/2047	
सिंह	11/07/2044	कर्क	04/02/2045	मीन	01/02/2046	कुंभ	12/08/2046	मक	05/11/2046
कर्क	06/08/2044	मीन	28/03/2045	कुंभ	11/02/2046	मक	16/08/2046	धनु	15/11/2046
मीन	18/08/2044	कुंभ	18/04/2045	मक	21/02/2046	धनु	26/08/2046	वृश्चि	22/11/2046
कुंभ	23/08/2044	मक	09/05/2045	धनु	18/03/2046	वृश्चि	02/09/2046	तुला	07/12/2046
मक	28/08/2044	धनु	30/06/2045	वृश्चि	04/04/2046	तुला	17/09/2046	कन्या	16/12/2046
धनु	09/09/2044	वृश्चि	05/08/2045	तुला	13/05/2046	कन्या	26/09/2046	सिंह	21/12/2046
वृश्चि	18/09/2044	तुला	27/10/2045	कन्या	05/06/2046	सिंह	01/10/2046	कर्क	11/01/2047
तुला	07/10/2044	कन्या	13/12/2045	सिंह	17/06/2046	कर्क	22/10/2046	मीन	21/01/2047
कन्या	19/10/2044	सिंह	08/01/2046	कर्क	08/08/2046	मीन	01/11/2046	कुंभ	25/01/2047

सिंह - धनु		सिंह - वृश्चि		सिंह - तुला		सिंह - कन्या		कर्क - कर्क	
25/01/2047		25/08/2047		21/01/2048		26/12/2048		05/07/2049	
25/08/2047		21/01/2048		26/12/2048		05/07/2049		21/08/2054	
धनु	18/02/2047	वृश्चि	06/09/2047	तुला	24/03/2048	कन्या	15/01/2049	कर्क	05/10/2050
वृश्चि	08/03/2047	तुला	04/10/2047	कन्या	29/04/2048	सिंह	26/01/2049	मीन	11/05/2051
तुला	16/04/2047	कन्या	19/10/2047	सिंह	18/05/2048	कर्क	13/03/2049	कुंभ	06/08/2051
कन्या	08/05/2047	सिंह	28/10/2047	कर्क	09/08/2048	मीन	05/04/2049	मक	01/11/2051
सिंह	21/05/2047	कर्क	03/12/2047	मीन	18/09/2048	कुंभ	13/04/2049	धनु	06/06/2052
कर्क	12/07/2047	मीन	21/12/2047	कुंभ	04/10/2048	मक	22/04/2049	वृश्चि	05/11/2052
मीन	05/08/2047	कुंभ	28/12/2047	मक	19/10/2048	धनु	15/05/2049	तुला	20/10/2053
कुंभ	15/08/2047	मक	03/01/2048	धनु	28/11/2048	वृश्चि	30/05/2049	कन्या	04/05/2054
मक	25/08/2047	धनु	21/01/2048	वृश्चि	26/12/2048	तुला	05/07/2049	सिंह	21/08/2054

कर्क - मीन		कर्क - कुंभ		कर्क - मक		कर्क - धनु		कर्क - वृश्चि	
21/08/2054		29/01/2057		20/01/2058		12/01/2059		22/06/2061	
29/01/2057		20/01/2058		12/01/2059		22/06/2061		08/03/2063	
मीन	02/12/2054	कुंभ	14/02/2057	मक	06/02/2058	धनु	26/04/2059	वृश्चि	12/08/2061
कुंभ	13/01/2055	मक	03/03/2057	धनु	19/03/2058	वृश्चि	07/07/2059	तुला	06/12/2061
मक	23/02/2055	धनु	13/04/2057	वृश्चि	17/04/2058	तुला	20/12/2059	कन्या	09/02/2062
धनु	07/06/2055	वृश्चि	12/05/2057	तुला	23/06/2058	कन्या	23/03/2060	सिंह	18/03/2062
वृश्चि	19/08/2055	तुला	18/07/2057	कन्या	30/07/2058	सिंह	13/05/2060	कर्क	17/08/2062
तुला	01/02/2056	कन्या	24/08/2057	सिंह	20/08/2058	कर्क	17/12/2060	मीन	29/10/2062
कन्या	04/05/2056	सिंह	14/09/2057	कर्क	15/11/2058	मीन	31/03/2061	कुंभ	27/11/2062
सिंह	25/06/2056	कर्क	10/12/2057	मीन	26/12/2058	कुंभ	11/05/2061	मक	26/12/2062
कर्क	29/01/2057	मीन	20/01/2058	कुंभ	12/01/2059	मक	22/06/2061	धनु	08/03/2063

चर दशा

भोग्य दशा काल : मेष 10 वर्ष 0 मास 0 दिन

मेष 10 वर्ष	
11/03/2009	
11/03/2019	
वृष	09/01/2010
मिथु	10/11/2010
कर्क	10/09/2011
सिंह	10/07/2012
कन्या	11/05/2013
तुला	11/03/2014
वृश्चि	10/01/2015
धनु	10/11/2015
मक	09/09/2016
कुंभ	11/07/2017
मीन	11/05/2018
मेष	11/03/2019

वृष 10 वर्ष	
11/03/2019	
11/03/2029	
मेष	10/01/2020
मीन	09/11/2020
कुंभ	10/09/2021
मक	11/07/2022
धनु	11/05/2023
वृश्चि	11/03/2024
तुला	09/01/2025
कन्या	09/11/2025
सिंह	10/09/2026
कर्क	11/07/2027
मिथु	11/05/2028
वृष	11/03/2029

मिथुन 8 वर्ष	
11/03/2029	
11/03/2037	
वृष	09/11/2029
मेष	11/07/2030
मीन	11/03/2031
कुंभ	10/11/2031
मक	10/07/2032
धनु	11/03/2033
वृश्चि	09/11/2033
तुला	11/07/2034
कन्या	11/03/2035
सिंह	10/11/2035
कर्क	10/07/2036
मिथु	11/03/2037

कर्क 11 वर्ष	
11/03/2037	
11/03/2048	
मिथु	09/02/2038
वृष	10/01/2039
मेष	10/12/2039
मीन	09/11/2040
कुंभ	10/10/2041
मक	10/09/2042
धनु	11/08/2043
वृश्चि	10/07/2044
तुला	10/06/2045
कन्या	11/05/2046
सिंह	11/04/2047
कर्क	11/03/2048

सिंह 6 वर्ष	
11/03/2048	
11/03/2054	
कन्या	09/09/2048
तुला	11/03/2049
वृश्चि	10/09/2049
धनु	11/03/2050
मक	10/09/2050
कुंभ	11/03/2051
मीन	10/09/2051
मेष	11/03/2052
वृष	09/09/2052
मिथु	11/03/2053
कर्क	10/09/2053
सिंह	11/03/2054

कन्या 7 वर्ष	
11/03/2054	
11/03/2061	
तुला	10/10/2054
वृश्चि	11/05/2055
धनु	10/12/2055
मक	10/07/2056
कुंभ	08/02/2057
मीन	10/09/2057
मेष	11/04/2058
वृष	10/11/2058
मिथु	11/06/2059
कर्क	10/01/2060
सिंह	10/08/2060
कन्या	11/03/2061

तुला 5 वर्ष	
11/03/2061	
11/03/2066	
वृश्चि	10/08/2061
धनु	09/01/2062
मक	10/06/2062
कुंभ	10/11/2062
मीन	11/04/2063
मेष	10/09/2063
वृष	09/02/2064
मिथु	10/07/2064
कर्क	10/12/2064
सिंह	11/05/2065
कन्या	10/10/2065
तुला	11/03/2066

वृश्चिक 3 वर्ष	
11/03/2066	
11/03/2069	
तुला	10/06/2066
कन्या	10/09/2066
सिंह	10/12/2066
कर्क	11/03/2067
मिथु	11/06/2067
वृष	10/09/2067
मेष	10/12/2067
मीन	11/03/2068
कुंभ	10/06/2068
मक	09/09/2068
धनु	10/12/2068
वृश्चि	11/03/2069

धनु 1 वर्ष	
11/03/2069	
11/03/2070	
वृश्चि	10/04/2069
तुला	11/05/2069
कन्या	10/06/2069
सिंह	11/07/2069
कर्क	10/08/2069
मिथु	10/09/2069
वृष	10/10/2069
मेष	09/11/2069
मीन	10/12/2069
कुंभ	09/01/2070
मक	09/02/2070
धनु	11/03/2070

मकर 5 वर्ष	
11/03/2070	
11/03/2075	
धनु	10/08/2070
वृश्चि	10/01/2071
तुला	11/06/2071
कन्या	10/11/2071
सिंह	10/04/2072
कर्क	09/09/2072
मिथु	08/02/2073
वृष	11/07/2073
मेष	10/12/2073
मीन	11/05/2074
कुंभ	10/10/2074
मक	11/03/2075

कुम्भ 6 वर्ष	
11/03/2075	
11/03/2081	
मीन	10/09/2075
मेष	11/03/2076
वृष	09/09/2076
मिथु	11/03/2077
कर्क	10/09/2077
सिंह	11/03/2078
कन्या	10/09/2078
तुला	11/03/2079
वृश्चि	10/09/2079
धनु	11/03/2080
मक	09/09/2080
कुंभ	11/03/2081

मीन 2 वर्ष	
11/03/2081	
11/03/2083	
मेष	11/05/2081
वृष	11/07/2081
मिथु	10/09/2081
कर्क	09/11/2081
सिंह	09/01/2082
कन्या	11/03/2082
तुला	11/05/2082
वृश्चि	11/07/2082
धनु	10/09/2082
मक	10/11/2082
कुंभ	10/01/2083
मीन	11/03/2083

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - कन्या		वृष - सिंह		वृष - कर्क		वृष - मिथु		वृष - वृष	
09/01/2025		09/11/2025		10/09/2026		11/07/2027		11/05/2028	
09/11/2025		10/09/2026		11/07/2027		11/05/2028		11/03/2029	
तुला	03/02/2025	कन्या	05/12/2025	मिथु	05/10/2026	वृष	06/08/2027	मेष	05/06/2028
वृश्चि	01/03/2025	तुला	30/12/2025	वृष	31/10/2026	मेष	31/08/2027	मीन	30/06/2028
धनु	26/03/2025	वृश्चि	25/01/2026	मेष	25/11/2026	मीन	25/09/2027	कुंभ	26/07/2028
मक	20/04/2025	धनु	19/02/2026	मीन	20/12/2026	कुंभ	21/10/2027	मक	20/08/2028
कुंभ	16/05/2025	मक	16/03/2026	कुंभ	15/01/2027	मक	15/11/2027	धनु	14/09/2028
मीन	10/06/2025	कुंभ	11/04/2026	मक	09/02/2027	धनु	10/12/2027	वृश्चि	10/10/2028
मेष	06/07/2025	मीन	06/05/2026	धनु	06/03/2027	वृश्चि	05/01/2028	तुला	04/11/2028
वृष	31/07/2025	मेष	31/05/2026	वृश्चि	01/04/2027	तुला	30/01/2028	कन्या	29/11/2028
मिथु	25/08/2025	वृष	26/06/2026	तुला	26/04/2027	कन्या	24/02/2028	सिंह	25/12/2028
कर्क	20/09/2025	मिथु	21/07/2026	कन्या	21/05/2027	सिंह	21/03/2028	कर्क	19/01/2029
सिंह	15/10/2025	कर्क	15/08/2026	सिंह	16/06/2027	कर्क	15/04/2028	मिथु	14/02/2029
कन्या	09/11/2025	सिंह	10/09/2026	कर्क	11/07/2027	मिथु	11/05/2028	वृष	11/03/2029

मिथु - वृष		मिथु - मेष		मिथु - मीन		मिथु - कुंभ		मिथु - मक	
11/03/2029		09/11/2029		11/07/2030		11/03/2031		10/11/2031	
09/11/2029		11/07/2030		11/03/2031		10/11/2031		10/07/2032	
मेष	31/03/2029	वृष	30/11/2029	मेष	31/07/2030	मीन	01/04/2031	धनु	30/11/2031
मीन	20/04/2029	मिथु	20/12/2029	वृष	20/08/2030	मेष	21/04/2031	वृश्चि	20/12/2031
कुंभ	11/05/2029	कर्क	09/01/2030	मिथु	10/09/2030	वृष	11/05/2031	तुला	10/01/2032
मक	31/05/2029	सिंह	30/01/2030	कर्क	30/09/2030	मिथु	01/06/2031	कन्या	30/01/2032
धनु	20/06/2029	कन्या	19/02/2030	सिंह	20/10/2030	कर्क	21/06/2031	सिंह	19/02/2032
वृश्चि	11/07/2029	तुला	11/03/2030	कन्या	10/11/2030	सिंह	11/07/2031	कर्क	11/03/2032
तुला	31/07/2029	वृश्चि	31/03/2030	तुला	30/11/2030	कन्या	31/07/2031	मिथु	31/03/2032
कन्या	20/08/2029	धनु	21/04/2030	वृश्चि	20/12/2030	तुला	21/08/2031	वृष	20/04/2032
सिंह	10/09/2029	मक	11/05/2030	धनु	10/01/2031	वृश्चि	10/09/2031	मेष	11/05/2032
कर्क	30/09/2029	कुंभ	31/05/2030	मक	30/01/2031	धनु	30/09/2031	मीन	31/05/2032
मिथु	20/10/2029	मीन	21/06/2030	कुंभ	19/02/2031	मक	21/10/2031	कुंभ	20/06/2032
वृष	09/11/2029	मेष	11/07/2030	मीन	11/03/2031	कुंभ	10/11/2031	मक	10/07/2032

मिथु - धनु		मिथु - वृश्चि		मिथु - तुला		मिथु - कन्या		मिथु - सिंह	
10/07/2032		11/03/2033		09/11/2033		11/07/2034		11/03/2035	
11/03/2033		09/11/2033		11/07/2034		11/03/2035		10/11/2035	
वृश्चि	31/07/2032	तुला	31/03/2033	वृश्चि	30/11/2033	तुला	31/07/2034	कन्या	01/04/2035
तुला	20/08/2032	कन्या	20/04/2033	धनु	20/12/2033	वृश्चि	20/08/2034	तुला	21/04/2035
कन्या	09/09/2032	सिंह	11/05/2033	मक	09/01/2034	धनु	10/09/2034	वृश्चि	11/05/2035
सिंह	30/09/2032	कर्क	31/05/2033	कुंभ	30/01/2034	मक	30/09/2034	धनु	01/06/2035
कर्क	20/10/2032	मिथु	20/06/2033	मीन	19/02/2034	कुंभ	20/10/2034	मक	21/06/2035
मिथु	09/11/2032	वृष	11/07/2033	मेष	11/03/2034	मीन	10/11/2034	कुंभ	11/07/2035
वृष	29/11/2032	मेष	31/07/2033	वृष	31/03/2034	मेष	30/11/2034	मीन	31/07/2035
मेष	20/12/2032	मीन	20/08/2033	मिथु	21/04/2034	वृष	20/12/2034	मेष	21/08/2035
मीन	09/01/2033	कुंभ	10/09/2033	कर्क	11/05/2034	मिथु	10/01/2035	वृष	10/09/2035
कुंभ	29/01/2033	मक	30/09/2033	सिंह	31/05/2034	कर्क	30/01/2035	मिथु	30/09/2035
मक	19/02/2033	धनु	20/10/2033	कन्या	21/06/2034	सिंह	19/02/2035	कर्क	21/10/2035
धनु	11/03/2033	वृश्चि	09/11/2033	तुला	11/07/2034	कन्या	11/03/2035	सिंह	10/11/2035

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - कर्क		मिथु - मिथु		कर्क - मिथु		कर्क - वृष		कर्क - मेष	
10/11/2035		10/07/2036		11/03/2037		09/02/2038		10/01/2039	
10/07/2036		11/03/2037		09/02/2038		10/01/2039		10/12/2039	
मिथु	30/11/2035	वृष	31/07/2036	वृष	08/04/2037	मेष	09/03/2038	वृष	06/02/2039
वृष	20/12/2035	मेष	20/08/2036	मेष	06/05/2037	मीन	06/04/2038	मिथु	06/03/2039
मेष	10/01/2036	मीन	09/09/2036	मीन	03/06/2037	कुंभ	03/05/2038	कर्क	03/04/2039
मीन	30/01/2036	कुंभ	30/09/2036	कुंभ	01/07/2037	मक	31/05/2038	सिंह	01/05/2039
कुंभ	19/02/2036	मक	20/10/2036	मक	28/07/2037	धनु	28/06/2038	कन्या	29/05/2039
मक	11/03/2036	धनु	09/11/2036	धनु	25/08/2037	वृश्चि	26/07/2038	तुला	26/06/2039
धनु	31/03/2036	वृश्चि	29/11/2036	वृश्चि	22/09/2037	तुला	23/08/2038	वृश्चि	24/07/2039
वृश्चि	20/04/2036	तुला	20/12/2036	तुला	20/10/2037	कन्या	20/09/2038	धनु	21/08/2039
तुला	11/05/2036	कन्या	09/01/2037	कन्या	17/11/2037	सिंह	18/10/2038	मक	18/09/2039
कन्या	31/05/2036	सिंह	29/01/2037	सिंह	15/12/2037	कर्क	15/11/2038	कुंभ	16/10/2039
सिंह	20/06/2036	कर्क	19/02/2037	कर्क	12/01/2038	मिथु	13/12/2038	मीन	12/11/2039
कर्क	10/07/2036	मिथु	11/03/2037	मिथु	09/02/2038	वृष	10/01/2039	मेष	10/12/2039

कर्क - मीन		कर्क - कुंभ		कर्क - मक		कर्क - धनु		कर्क - वृश्चि	
10/12/2039		09/11/2040		10/10/2041		10/09/2042		11/08/2043	
09/11/2040		10/10/2041		10/09/2042		11/08/2043		10/07/2044	
मेष	07/01/2040	मीन	07/12/2040	धनु	07/11/2041	वृश्चि	08/10/2042	तुला	07/09/2043
वृष	04/02/2040	मेष	04/01/2041	वृश्चि	05/12/2041	तुला	05/11/2042	कन्या	05/10/2043
मिथु	03/03/2040	वृष	01/02/2041	तुला	02/01/2042	कन्या	02/12/2042	सिंह	02/11/2043
कर्क	31/03/2040	मिथु	01/03/2041	कन्या	30/01/2042	सिंह	30/12/2042	कर्क	30/11/2043
सिंह	28/04/2040	कर्क	29/03/2041	सिंह	26/02/2042	कर्क	27/01/2043	मिथु	28/12/2043
कन्या	26/05/2040	सिंह	26/04/2041	कर्क	26/03/2042	मिथु	24/02/2043	वृष	25/01/2044
तुला	23/06/2040	कन्या	23/05/2041	मिथु	23/04/2042	वृष	24/03/2043	मेष	22/02/2044
वृश्चि	21/07/2040	तुला	20/06/2041	वृष	21/05/2042	मेष	21/04/2043	मीन	21/03/2044
धनु	17/08/2040	वृश्चि	18/07/2041	मेष	18/06/2042	मीन	19/05/2043	कुंभ	18/04/2044
मक	14/09/2040	धनु	15/08/2041	मीन	16/07/2042	कुंभ	16/06/2043	मक	16/05/2044
कुंभ	12/10/2040	मक	12/09/2041	कुंभ	13/08/2042	मक	14/07/2043	धनु	13/06/2044
मीन	09/11/2040	कुंभ	10/10/2041	मक	10/09/2042	धनु	11/08/2043	वृश्चि	10/07/2044

कर्क - तुला		कर्क - कन्या		कर्क - सिंह		कर्क - कर्क		सिंह - कन्या	
10/07/2044		10/06/2045		11/05/2046		11/04/2047		11/03/2048	
10/06/2045		11/05/2046		11/04/2047		11/03/2048		09/09/2048	
वृश्चि	07/08/2044	तुला	08/07/2045	कन्या	08/06/2046	मिथु	09/05/2047	तुला	26/03/2048
धनु	04/09/2044	वृश्चि	05/08/2045	तुला	06/07/2046	वृष	06/06/2047	वृश्चि	10/04/2048
मक	02/10/2044	धनु	02/09/2045	वृश्चि	03/08/2046	मेष	04/07/2047	धनु	25/04/2048
कुंभ	30/10/2044	मक	30/09/2045	धनु	31/08/2046	मीन	31/07/2047	मक	11/05/2048
मीन	27/11/2044	कुंभ	28/10/2045	मक	28/09/2046	कुंभ	28/08/2047	कुंभ	26/05/2048
मेष	25/12/2044	मीन	25/11/2045	कुंभ	25/10/2046	मक	25/09/2047	मीन	10/06/2048
वृष	22/01/2045	मेष	23/12/2045	मीन	22/11/2046	धनु	23/10/2047	मेष	25/06/2048
मिथु	19/02/2045	वृष	19/01/2046	मेष	20/12/2046	वृश्चि	20/11/2047	वृष	10/07/2048
कर्क	19/03/2045	मिथु	16/02/2046	वृष	17/01/2047	तुला	18/12/2047	मिथु	26/07/2048
सिंह	15/04/2045	कर्क	16/03/2046	मिथु	14/02/2047	कन्या	15/01/2048	कर्क	10/08/2048
कन्या	13/05/2045	सिंह	13/04/2046	कर्क	14/03/2047	सिंह	12/02/2048	सिंह	25/08/2048
तुला	10/06/2045	कन्या	11/05/2046	सिंह	11/04/2047	कर्क	11/03/2048	कन्या	09/09/2048

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	80%	धनार्जन, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	80%	सन्तति सुख, सुख
गोमेद	राहु	77%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	73%	सुख, सन्तति सुख
नीलम	शनि	72%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
पुखराज	गुरु	70%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, कम खर्च
मूंगा	मंगल	69%	धनार्जन, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
पन्ना	बुध	31%	हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	19%	व्यय, धन हानि, दाम्पत्य कष्ट

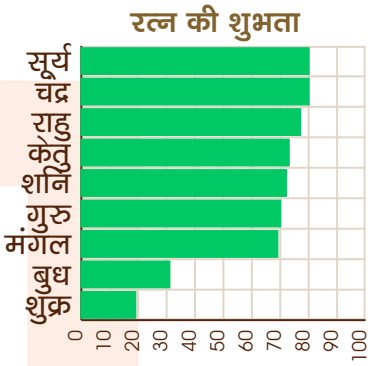

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	05/10/2014	92%	86%	75%	31%	77%	0%	59%	64%	61%
चंद्र	05/10/2024	86%	92%	69%	44%	70%	19%	72%	64%	61%
मंगल	05/10/2031	86%	86%	81%	6%	77%	19%	72%	64%	80%
राहु	05/10/2049	67%	67%	56%	31%	70%	31%	78%	89%	61%
गुरु	05/10/2065	86%	86%	75%	6%	83%	0%	72%	77%	73%
शनि	05/10/2084	67%	67%	56%	44%	70%	31%	84%	83%	61%
बुध	06/10/2101	86%	67%	69%	53%	70%	31%	72%	77%	73%
केतु	06/10/2108	67%	67%	75%	31%	70%	31%	59%	64%	86%
शुक्र	06/10/2128	67%	67%	69%	44%	70%	44%	78%	83%	80%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए माणिक्य, मोती व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य, मोती व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, नीलम, पुखराज एवं मूंगा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

हीरा पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप धनवान, बलवान और सुखी बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप स्वाभिमानी बनेंगे। रत्न धारण से आप तपस्वी और योगी समान बनेंगे। आपका जीवन सदाचार युक्त होगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। माणिक्य रत्न आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। उच्च अधिकारियों से आपके संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आपको महत्त्वाकांक्षी बनाएगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को प्रबल कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, यश-मान, ज्ञान, योग्यता एवं बुद्धि का विकास हो सकता है। सूर्य पंचमेश है और पंचमेश का रत्न होने के कारण माणिक्य आपके संतान सुख में भी वृद्धि करने में भी सक्षम है। इसके अलावा सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सरकार द्वारा लाभ प्राप्त कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र पंचम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न आपको खुशमिजाज बनाएगा। आप मनोरंजन और सुख सुविधाओं की तरफ आकृष्ट होंगे और इन्हें पाने का प्रयास भी करेंगे। रत्न की शुभता से आपकी संतान बहुत अधिक संतुष्ट और प्रसन्नता देने वाले साबित होगी। गुप्त विद्याओं और धार्मिक कार्यो में आपकी रुचि जागृत होगी। दान-पुण्य में आप की सहभागिता बनेंगी। मनोरंजन, खेल और कला से आपका गहरा लगाव रहेगा। मोती रत्न आपका भाग्योदय करेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चंद्र लग्नेश मंगल का मित्र है। चंद्र रत्न मोती की शुभता आपको सौम्य सरल स्वभाव, स्वाभिमानी, आत्मसम्मानी, महत्वकांक्षा का गुण दे सकती है। इसके अतिरिक्त मोती आपको धन, प्रतिष्ठा, यात्रा ऐश्वर्य से

परिपूर्ण जीवन प्राप्त, कल्पना और प्रगतिशील विचारधारा भी प्रदान कर रहा है। चतुर्थेश का रत्न होने के कारण चंद्र रत्न मोती आपको माता सुख, कर्तव्यनिष्ठा, वाहन, जमीन-जायदाद से सुखी कर सकता है। इसलिए चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि पंचम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया या इसके उपरत्न धारण करने चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको धन-धान्य से समृद्ध करेगा। आप अपने दायित्वों का निर्वाह कुशलता के साथ करेंगे। आपका उत्साह भाव देखते ही बनेगा। माता सुख में कुछ कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप चंचल स्वभाव के हो सकते है। देश विदेश से धनार्जन योगा। पैतृक धन में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। घर भूमि भवन के विषयों से सुख की प्राप्ति होगी। लहसुनिया रत्न धारण से केतु ग्रह की शुभता बढ़ती है और अशुभता कम होती है।

केतु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र पंचम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यो में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि पंचम भाव में स्थित है। शनि रत्न नीलम आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। नीलम रत्न अद्भुत और अचूक प्रभावशाली रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आप परिश्रमी, भ्रमणशील, प्रसन्न और सुखी रखेगा। रत्न शुभता से आप दीर्घायु होंगे। आपको अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। नीलम रत्न आपके शैक्षिक व्यवधानों को दूर करेगा। धर्म

क्रियाओं की ओर उन्मुख होंगे। आपकी धन संपति में बढ़ोतरी होगी। धीरे धीरे आपकी प्रसिद्धि का विस्तार होगा। रत्न प्रभाव से आपके व्यवहार में मधुरता आयेगी।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शनि कर्मेश एवं आयेश है। कर्मेश शनि का रत्न नीलम आपके कार्यक्षेत्र की समस्याओं का निवारण कर सकता है। यह रत्न आपकी योग्यता के अनुसार सफलता दिला सकता है। आत्मबल और मनोबल की वृद्धि कर सकता है। इसके अतिरिक्त नीलम रत्न आपके कार्य क्षेत्र को अनुकूल कर आपको उन्नति और विकास के अवसर प्राप्त करने में सहयोग करेंगे। शनि आयेश भी है इसलिए शनि रत्न नीलम धारण करने से आपकी आजीविका और आय दोनों क्षेत्रों से सुखद परिणाम प्राप्त हो सकते है। आप आय और कार्यक्षेत्र को सौहार्दपूर्ण बनाने के लिए शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंड़ली में गुरु दशम भाव में स्थित है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करना आपके लिए शुभदायक रहेगा। यह रत्न आपको चरित्रवान और स्वतंत्र विचारक बनाएगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको विवेकी, न्यायी और सत्यवादी भी बनाएगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको शास्त्रों का विधिवत ज्ञान होगा। पुखराज रत्न आपको उत्तम वाहनों का सुख देगा। भूमि सुख और भूमि के माध्यम से खूब लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने माता-पिता का अत्यधिक आदर करने वाले बनेंगे। आप खूब धन कमाकर, ऐश्वर्यवान, सुखी और समृद्ध बनेंगे। आप सुंदर वस्त्र और आभूषणों से युक्त होंगे।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में गुरु भाग्येश एवं व्ययेश है। भाग्येश होने के कारण बृहस्पति ग्रह आपके लिए शुभ ग्रह है। भाग्येश गुरु का रत्न पुखराज धारण कर आप अपने भाग्य की बाधाओं को दूर कर सकते है। प्रयास करने पर भी यदि आपके कार्य पूर्ण नहीं हो रहे है तो गुरु रत्न पुखराज धारण करने से भाग्योदय होकर कार्यो में सफलता प्राप्त हो सकती है। यह रत्न धर्म, ज्ञान एवं विवेक भाव की वृद्धि के लिए अनुकूल रत्न है। पुखराज द्वादशेश का रत्न होने के कारण विदेश यात्रा और विदेश गमन, शयन सुख को बढ़ाया सकता है। अतः आप पुखराज रत्न धारण कर सकते है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा। आपको साहसपूर्ण कार्यो से लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न शुभता से आपकी वाणी में मिठास और महत्वकांक्षाओं की वृद्धि होगी। रत्न प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का बहुत सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान, स्फूर्तिदायक रख आपके जोश को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और अष्टमेश के रूप में शुभ फल देने वाला ग्रह है। यद्दिप अष्टम भाव का स्वामी शुभ नहीं होता, परन्तु लग्नेश भी होने के कारण मंगल अष्टम दोष से मुक्त है। मंगल रत्न मूंगा शुभ ग्रह होकर आपके स्वास्थ्य, शक्ति, ऊर्जा, आरोग्यता, स्वाभिमान, अधिकार, प्रभुत्व और नेतृत्व शक्ति का विकास कर सकता है। मंगल अष्ट्मेश भी है इसलिए मंगल रत्न मूंगा धारण करने से आपके जीवन की बाधाओं में भी कमी आ सकती है। आप मूंगा धारण कर अपने स्वास्थ्य सुख को बढ़ा सकते है। मूंगा धारण करने से आपके आत्मविश्वास, दृढ़निश्चयता और साहस भाव में वृद्धि हो सकती है। लग्नेश का रत्न होने के कारण मूंगा आपके लिए जीवन रत्न भी है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में

आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंड्ली में बुध एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना आपको सेवकों से कष्ट प्राप्त हो सकते है। सेवकों के द्वारा अवज्ञा हो सकती है। पन्ना रत्न धारण करने पर अपने बुद्धि बल पर आपको अंहकार हो सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यवहारिक गुणों में कमी आ सकती है। निर्णयों में देरी के कारण आप स्वर्णिम अवसरों का लाभ नहीं उठा पाएंगे। आय और लाभ वृद्धि की चिंताओं से आप के आनंद भाव में कमी के योग बन सकते है। पन्ना रत्न आपको नियोजन और गणना संबंधी कार्यो में सुरुचि की कमी देगा। आपकी प्रतिबद्धता के प्रति लोगों में संशय का भाव ला सकती है। आपको अपनी बुद्धि कुण्ठित होने से बचाना होगा। शत्रुओं के माध्यम से आपके लाभ कम हो सकते है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में बुध तीसरे एवं षष्ठ भाव का स्वामी है। पराक्रमेश एवं ऋणेश बुध अपने शुभ फल नहीं दे पाएंगे। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आप रोगग्रस्त हो सकते है। आपके परिश्रम भाव में कमी हो सकती है। पन्ना रत्न धारण करने पर बौद्धिक योग्यता, शिक्षा का सुख प्राप्त करने में कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपके भाई-बंधुओं से प्राप्त होने वाले सुख-सहयोग को भी बाधित कर सकता है। शत्रुओं की अधिकता आपके जीवन की प्रगति को मन्द कर सकती है। पन्ना रत्न आपको सेवकों, सहोदरों आलोचनात्मक लेख लेखन का स्वभाव दे सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा बुद्धि युक्त विषयों में त्रुटि हो सकती है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आपका वैवाहिक जीवन तनाव युक्त हो सकता है। हीरा रत्न आपके व्ययों को सौंदर्य विषयों पर केन्द्रित कर सकता है। इसके साथ ही रत्न प्रभाव से आपके व्यय ग्रहस्थ जीवन के सुख प्राप्ति से संबंधी हो सकते है। विदेश गमन, शयन सुख को भी यह रत्न प्रभावित कर रहा है। हीरा रत्न आपके मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को बाधित कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हो सकता है कि आपका धन-धान्य, आय एवं उन्नति आशातीत न हों। यह भी संभावित है कि आप अपने जीवन साथी का समय पर साथ न दे पाएं। दायित्वों के निर्वाह में आपसे कहीं कुछ त्रुटि हो सकती है। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ कमजोर हो सकता है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तम भाव के स्वामी होकर परम मारकेश हो जाते है। अतः इस ग्रह का हीरा रत्न धारण करने से आपको धन हानि, पारिवारिक मतभेद एवं वैवाहिक जीवन में कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। हीरा रत्न के प्रभाव से आप भ्रमणकारी, व्यसनी और चंचल स्वभाव के हो सकते है। रत्न की अनुकूलता कम होने के कारण इस रत्न को पहनने के बाद आप की सत्यवादिता में कमी आ सकती है। आपके परिवारिक स्नेह में भी कमी के योग बन सकते है। हीरा सप्तमेश का रत्न है इसलिए इस रत्न

धारण से आपके ग्रहस्थ सुख में अत्यधिक उतार चढ़ाव आ सकते है। भाईयों से वियोग, स्वजनों से विरोध और कलह उत्पन्न हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

मंगल
(05/10/2024 - 05/10/2031)

मंगल की दशा में आपका माणिक्य, मोती, मूंगा, लहसुनिया व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(05/10/2031 - 05/10/2049)

राहु की दशा में आपका गोमेद व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य, मोती, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(05/10/2049 - 05/10/2065)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य, मोती, पुखराज, गोमेद व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(05/10/2065 - 05/10/2084)

शनि की दशा में आपका नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य, मोती, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(05/10/2084 - 06/10/2101)

बुध की दशा में आपका माणिक्य व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, नीलम, पुखराज, मूंगा, मोती व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(06/10/2101 - 06/10/2108)

केतु की दशा में आपका लहसुनिया व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य, मोती, गोमेद व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(06/10/2108 - 06/10/2128)

शुक्र की दशा में आपका गोमेद, लहसुनिया व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, मूंगा, माणिक्य व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने

हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

सूर्य - 05/10/2014

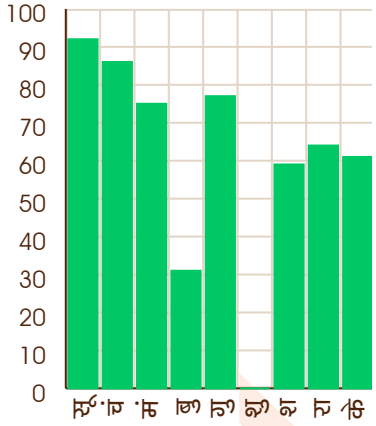

चन्द्र - 05/10/2024

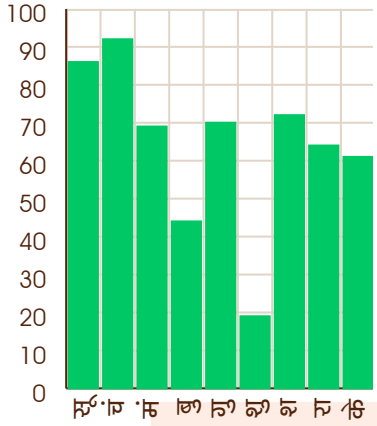

मंगल - 05/10/2031

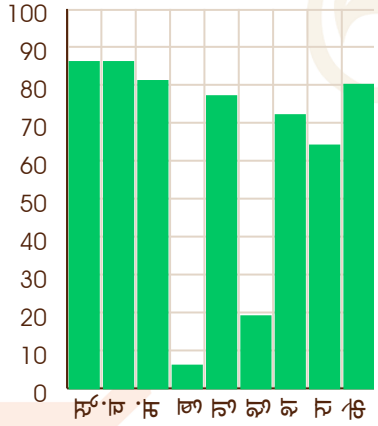

राहु - 05/10/2049

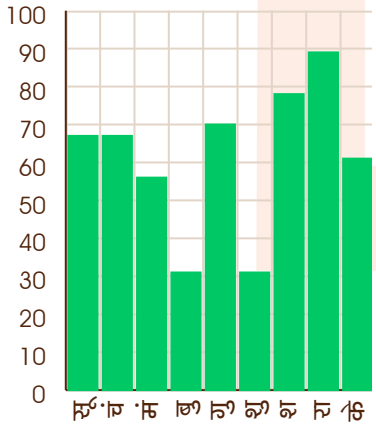

गुरु - 05/10/2065

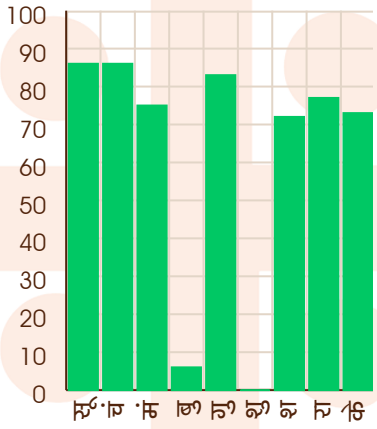

शनि - 05/10/2084

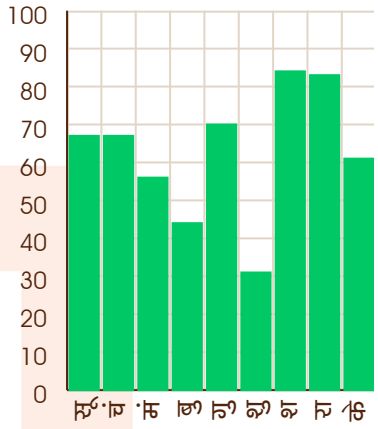

बुध - 06/10/2101

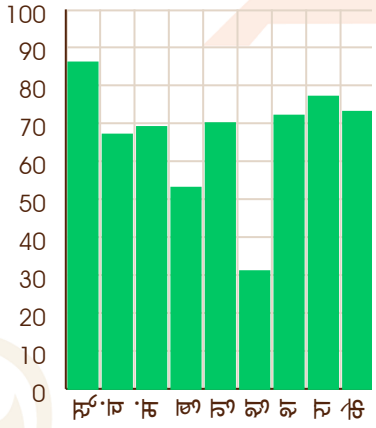

केतु - 06/10/2108

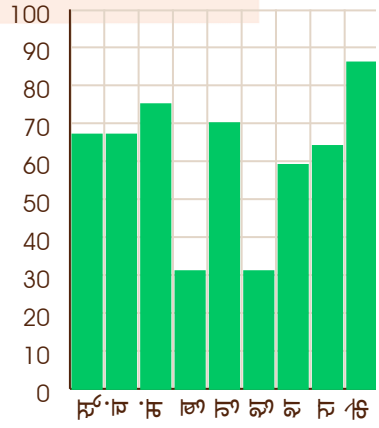

शुक्र - 06/10/2128

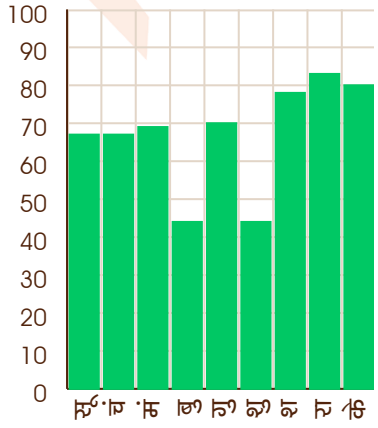

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गारनेट

आपका जन्म मेष राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी मंगल होता है। मंगल सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह चंद्र के पश्चात पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मेष राशि के लग्न वाले जातकों को मेष राशि के स्वामी ग्रह मंगल को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। मंगल ग्रह के लिये गारनेट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी मंगल सेनापति पद व ऊर्जा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को लीडरशिप गुण की प्राप्ति तथा अपनी टीम में नायक का गुण व टीम से सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को छोटे भाई का सहयोग भी प्राप्त होता है। मंगल ग्रह शक्ति एवं छोटे भाई का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको रक्त से संबंधित रोग जैसे उच्च रक्तचाप या निम्न रक्तचाप या रक्त संबंधी संक्रमण जैसे रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जातक में साहस व शक्ति का संचार होता है।

गारनेट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्यकी अंगुली मानी जाती है तथा सूर्य ग्रह मंगल को अपना मित्र ग्रह मानता है। गारनेट रत्न मंगल का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात मंगलवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल मंगल की होरा में श्रेष्ठ होता है। मंगलवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय मंगल की होरा का होता है। गारनेट को यदि मंगलवार के साथ-साथ मंगल के नक्षत्र अर्थात् मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गारनेट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर लाल रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, मंगल के 108 मंत्रों का जाप करते हुए अभिमंत्रित करके माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

मंगल का मंत्र - ऊँ अं अंगारकाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि मंगल से संबंधित पदार्थ जैसे गेहूं, तांबा, गुड़, सवा मीटर लाल कपड़े का दान करें तो गारनेट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन मंगल का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें तो यह गारनेट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाना इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

मेष लग्न वाले जातक यदि गारनेट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की हैं। मेष लग्न आपको प्रखरबुद्धि प्रदान कर रहा हैं। मेष राशि अग्नि तत्व, चर राशि होने के कारण आप दृढ निश्चयी व व्यवहार कुशल है। आपका अंतः तथा वाह्य मनोभाव एक से होते है। आप में नेताओं के गुण विद्यमान हैं, दूसरों के अधीन रहना आपको रास नहीं आता। आप जीवन में पुरूषार्थ तथा उद्यम से उन्नति कर लेते हैं। कुण्डली में मंगल, सूर्य, चन्द्र अशुभ हों, तो पिता-माता व भाई बहिनों का सुख कम प्राप्त होता है। परिवर्तनशील स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित होकर प्रचण्ड रूप धारण कर लेने का गुण भी आपमें पाया जाता है। अत्यधिक क्रोधावेश में कई बार आप अपनी हानि भी करवा बैठते हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भावों के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें

बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। जिसमें षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का बोध होता हैं। इसका स्वामी जिस भाव में जाता हैं उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश होता हैं। जिससे मनुष्य को षष्ठ भाव के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में रोग, ऋण और शात्रुओं के द्वारा दैहिक मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। त्रिक भावों में अष्टम भाव सर्वाधिक दुष्ट/अशुभ माना जाने वाला स्थान हैं। इस भाव का स्वामी अर्थात अष्टमेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता हैं। अष्टम स्थान में बैठने वाले ग्रहों के फलों में पापत्व बढ़ जाता हैं। और अशुभ फलों में वृद्धि होती हैं। त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव हैं। इस भाव से अनेक प्रकार के व्यय का विचार करते हैं। इसलिए इसे व्यय भाव भी कहते हैं। यह हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग,कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष स्थान हैं। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव से संबंधित विषयों की अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध विशेष अशुभ ग्रह हैं। क्योंकि वह षष्ठ व तृतीय भाव का स्वामी है। इसी तरह शुक्र भी द्वितीयेश व सप्तमेश होने के कारण आपके लिए मारकेश हो गए हैं। शनि दशमेश होकर शुभ मगर आयेश होकर फिर पापी हो जाता हैं। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी हो सकते हैं।

इसमें छठे भाव व तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं, षष्ठेश बुध के परिणाम स्वरूप आपके अपने सम्बन्धियों से शत्रुवत सम्बन्ध हो सकते हैं। अन्य जाति के व्यक्तियों से आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता होने से आपके मानसिक और शारीरिक कष्ट समय समय पर आपको परेशान कर सकते हैं। रोगों की अधिकता भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती हैं। धन का व्यय रोग और शत्रु सम्बन्धी विषयों का समाधान करने पर लग सकता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए आपको चतुरता से काम लेना होगा। यह योग आपको अल्प पराक्रमी, भाई बहनों से मतभेद और व्ययों की अधिकता दे सकता हैं। इस भाव में बुध रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर अनेक क्षेत्रों में सफलता देता हैं।

अष्टमेश मंगल दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता और शत्रुता का प्रतिनिधि हैं। इसके परिणाम से आप के आत्मविश्वास भाव में वृद्धि हो रही हैं। आप आक्रामक रुख रखते हुए, प्रयास भाव से अपने बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा-अन्तर्दशा में लड़ाई-झगड़े, दुर्घटना और शत्रुओं के द्वारा धन, पद, प्रतिष्ठा की हानि हो सकती हैं। इस दशा अवधि में मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण, कटु वचन का त्याग और स्वयं की दुर्घटनाओं से रक्षा करनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किये हुए सभी कार्य पूर्ण होंगे। परन्तु स्वास्थ्य के पक्ष से यह अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान हैं। इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि हैं। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होने से घर, जमीन-जायदाद और माता सुख की प्राप्ति होगी तथा दीर्घकालीन धन विनियोजन, विदेश स्थानों पर आपके व्ययों को बढ़ाएगा। वितीय विषयों के लिए गुरु की यह स्थिति अनुकूल नहीं

हैं।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते है, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखे। जीवन साथी की भावनाओँ को आहात करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	11/03/2009-10/09/2009	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

तृतीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	सन्तति कष्ट
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	सुख हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में स्थित है अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। चूंकि आपकी कुंडली में मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में भी उग्रता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन ये अल्पकालिक रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप पित या गर्मी आदि से यदा कदा परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध उत्पन्न हो सकता है लेकिन अंततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन सामान्यतया संतोषप्रद रहेगा।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी भी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य क्षेत्र में परिश्रम तथा पराक्रम से सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा क्रोध के भाव की प्रबलता दृष्टि गोचर होगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति भी प्रभावित होगी परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव आपके पारिवारिक जीवन में नहीं होगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक खुशहाल एवं सुखी बनाने के लिए आपको किसी ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसके द्वारा आपका मंगली दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार दोष के भंग होने

पर आपके अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होगी। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य, चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ॐ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 11 है। एक एवं एक का जोड़ दो आपका मूलांक है। एक का स्वामी सूर्य एवं दो स्वामी चन्द्र है। इन दोंनो ग्रहों के गुण-अवगुण आपके व्यक्तित्व में रहेंगे। आप अनुशासन पसन्द व्यक्ति रहेंगे एवं अपने नाम पर धब्बा नहीं लगायेंगे। समाज में आपकी इज्जत होगी। नाम एवं यश प्राप्त करेंगे। सूर्य प्रभाव से नियमितता रहेगी। चन्द्र प्रभाव कभी-कभी मनको चंचल भी करेगा उससे बचना हितकर रहेगा अन्यथा सफलता के स्थान पर कई बार चन्द्र प्रभाव असफलता भी दे देगा। संघर्ष करना आपकी आदत बन जायेगी। अतः कभी आप एकदम उच्चता प्राप्त करेंगे तो कभी आपको थोड़ा झुकना भी पड़ेगा।

बौद्धिक स्तर आपका अच्छा रहेगा एवं ऐसे कार्य जिनमें बुद्धि का प्रयोग अधिक होता हो आपके लिये शुभ रहेगा। असफलताओं से आप निराश नहीं होंगे, क्षीण तो होंगे फिर भी हिम्मत नहीं हारेंगे और एक दिन फिर सूर्य की तरह प्रकाशित होंगे।

स्वभाव में आपके थोड़ा हठीपन रहेगा एवं क्रोध भी आ जाया करेगा। इन अवगुणों से बचना आपके लिये हितकर रहेगा, आपको ऐसे क्षेत्रों का चुनाव करना हितकर रहेगा जहाँ अत्यधिक परिवर्तनशीलता न हो। सामान्य कार्यकाज जिन क्षेत्रों में रहे, वह आपके लिये शुभ रहेंगे। विशेष कर बुद्धि विवेक के कार्य अधिक योगप्रद रहेंगे।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगे। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 2 है तथा भाग्यांक 7 है। मूलांक 2 के स्वामी चंद्र का भाग्यांक 7 के स्वामी नेपच्यून के साथ मैत्री संबंध है। इसके प्रभाववश आपके अंदर कल्पना शक्ति अत्यधिक विकसित होगी। मूलांक एवं भाग्यांक के आपस में मैत्री संबंध होने से आपको मूलांक एवं भाग्यांक के अंकों का अच्छा प्रभाव प्राप्त होगा। आप रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में परिवर्तनशील विचारधारा के होंगे तथा पुरानी परिस्थितियों में आमूल चूल परिवर्तन करते रहेंगे। आपके रोजगार में ललित कलाओं का समावेश होगा और आप ऐसा रोजगार पसंद करेंगे, जिनमें चौंसठ कलाओं में से किसी एकाध कला का समावेश हो। आप ऐसा भी रोजगार पसंद कर सकते हैं, जिसमें यात्रा, पर्यटन अधिक रहे। संगीत, साहित्य, लेखन एवं ललित कलाओं में

आपकी अच्छी रुचि रहेगी। रोजगार में आप कम मात्रा में धन संग्रह कर पाएंगे या धन संग्रह करने में कठिनाइयां आएंगी। फिर भी आप संपत्ति अर्जित करने में सफल होंगे।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 34 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति करेगा तथा 43 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 7 की मित्रता 2 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 2, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इससे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 2 एवं भाग्यांक 7 के प्रभाववश, ईस्वी सन् जिनका योग 2, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। कर्क राशि चंद्रमा की स्वयं की राशि है। 13 मई से 14 जून तक सूर्य वृष राशि में होता है, जो कि चंद्रमा की उच्च राशि है। अतः यह समय मूलांक दो के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए कोई भी नया या शुभ कार्य करने हेतु सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार के दिन अच्छे सिद्ध हो सकते हैं। यदि इन्ही वारों में आपके मूलांक की तारीख भी हो तो ऐसा दिन सभी कार्यों के लिये अच्छा रहेगा।

शुभ तारीखें

जब कभी आपको कोई महत्वपूर्ण कार्य करना हो, नया कार्य या व्यापार प्रारंभ करना हो, अथवा किसी को विशेष पत्र लिखना हो या किसी से विशेष कार्यवश मिलने जाना हो तो आप किसी भी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को ये सारे कार्य करें। यदि इन तारीखों में आपका अनुकूल वार भी रहता है तो ऐसा दिन आपके कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी मास की 5, 8, 14, 17, 23 एवं 26 तारीखें कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए ठीक नहीं रहेंगी। अतः इन तारीखों में सोच-समझ कर ही कोई शुभ कार्य करें।

मित्रता या साझेदारी

किसी से भी मित्रता करते समय यह देखना आपके हित में रहेगा कि यदि उसका जन्म अंग्रेजी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति आपके लिऐ हितकारी सिद्ध हो सकते हैं।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपके लिऐ मूलांक 2, 7 एवं 9 प्रभावित महिलाएं अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। आपको चाहिए कि आप इन्हीं मूलांक वाली महिलाओं से मित्रता इत्यादि रखें, या ऐसी महिलाएं जिनका जन्म किसी भी मास की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसी महिलाएं हमेशा आपके अनुकूल रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपको अपने वस्त्रों का चुनाव करते समय सफेद, काफूरी, हरा एवं अंगूरी रंगों का उपयोग अधिक मात्रा में करने पर वांछित लाभ प्राप्त होंगे। हो सके तो आप अपने कमरे के पर्दे, चादर, तकिया इत्यादि में इन रंगो का इस्तेमाल कर सकते हैं। इन रंगों का रुमाल तो हमेशा अपने पास रखना आपके लिए विशेष लाभप्रद रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उत्तर-पश्चिम में वायव्य कोण स्थान में रहना शुभ रहेगा। जिस क्षेत्र में आप रहते हों, यदि वह वायव्य कोण में स्थित होगा तो अधिक अनुकूल रहेगा। मकान के नंबर का योग यदि 2, 7, या 9 आता हो तो ऐसा भवन आपके लिए अधिक सुविधाजनक रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपके वाहन के पंजीकरण हेतु अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना अच्छा रहेगा। आपका मूलांक 2 होने से आपके शुभ अंक 2,7,9 रहेंगे। यहां आपके वाहन इत्यादि के पंजीकरण क्रमांक के शुभ अंक भी रहेंगे, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5231=2 इत्यादि। यात्रा के वाहनों में भी इन अंकों का उपयोग करें, जिसके फलस्वरूप आपकी यात्रा सुखमय रहेगी। अगर आप होटल आदि में कमरा इत्यादि लेते हैं तो उसके लिए भी यही नंबर 2,7,9 इत्यादि लें, जैसे कमरा 101 = 2। तभी आपके लिए वह कमरा अच्छा साबित होगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको कमजोरी, क्षीणता, उद्वेग, मस्तक पीड़ा, छोटी-छोटी दुर्घटना, हृदय रोग, संवेदनशीलता, भावुकता, स्नायु दुर्बलता, कब्ज, आंत रोग, मूत्र रोग, गैस रोग इत्यादि होंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शिव उपासना पर बल देना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए रोजगार-व्यापार हेतु ये क्षेत्र अनुकूल रहेंगे, जैसे द्रव्य पदार्थ, तैलीय कार्य, समुद्र यात्रा, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, पशु व्यवसाय, चीनी मिल, अन्न का व्यवसाय, तैराकी, रसपूर्ण पदार्थ, दूध, दही, घृत, कागज, जल, कृषि एवं चीनी के व्यवसाय एवं औषधि विक्रेता, भ्रमण कार्य, एजेंन्ट, प्रतिनिधित्व, संपादन, लेखन, संगीत, अभिनय, नृत्य, भूप्रबंध, मकानों की ठेकेदारी, चिकित्सा, मोती, हार, मणि, माणिक्य, रत्न इत्यादि का क्रय विक्रय, पत्थर व भूगर्भ इत्यादि के कार्य।

व्रतोपवास

जिस दिन सोमवार को चित्रा नक्षत्र हो उस दिन से चंद्रमा का व्रत प्रारम्भ करें। विधान के अनुसार 54 सोमवार तक अथवा न्यूनतम सात सोमवार व्रत आवश्यक है। व्रत के

दिन श्वेत वस्त्र धारण करें एवं श्वेत वस्तुओं का दान करें तथा चंद्रमा के मंत्र का यथा शक्ति, मोती की माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पांच रत्ती मोती आपके लिए प्रमुख रत्न है। यदि आप मोती धारण ना कर सकें तो मूनस्टोन, चंद्रमणि, दूधिया हकीक, सोमवार की सुबह दायें हाथ की कनिष्ठा अंगुलि में, चांदी की अंगूठी में जड़वा कर लाभ के चौघड़िया मुहूर्त्त में धारण करें।

अनुकूल देवता

आप चंद्रोपासना करें अथवा भगवान शिव की आराधना करें। भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र ओम् नमः शिवाय का नित्य जप करें। प्रति सोमवार को कम से कम इक्कीस या एक सौ आठ बेल पत्र भगवान शिव को अर्पित करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों से समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान शिव के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपको चंद्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु चंद्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

चंद्र गायत्री मंत्र - अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप चंद्र का ध्यान करें, मन में चंद्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोमुकुटभूषणम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ चंद्र को अनुकूल बनाने हेतु चंद्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सो तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ श्राँ श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः।। जप संख्या 13000।।

वनस्पति धारण

आप सोमवार के दिन एक इंच लंबी खिरनी की जड़ ला कर, सफेद ऊन के धागे में लपेट कर, गले या दाहिने हाथ में बांधे, स्वर्ण या तांबे ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे चंद्र ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके प्रत्येक सोमवार को एक बाल्टी या बर्तन में पंच गव्य-चांदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ चंद्र का प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

चंद्र की शांति हेतु योग्य व्यक्ति के लिए चंद्र के पदार्थ, चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

चंद्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु चंद्र यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, चांदी की जंजीर या लाल धागे में, सोमवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

ज्योतिष गणना के अनुसार आपका जन्म उस समय हुआ जबकि मेदिनीय क्षितिज पर मेष लग्न उदित था। आपका जन्म भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वृश्चिक राशि के नवमांश तथा धनु राशि के द्रेष्काण में हुआ था। गणना के संकेतों से आपके जीवन का वास्तविक चित्र स्पष्ट हो रहा है कि यदि आप अपने जीवन के कार्यकलापों का निष्पादन अपनी योजना के पक्ष में पूर्ण आश्वस्त होकर समयानुकूल कर सके तो आप निश्चित रूप से अपने उद्देश्य को सफल कर सकेंगे।

सामान्यतः स्पष्ट रूप से यह अभिप्राय प्रकट हो रहा है कि आप दीर्घजीवी होकर सुख पूर्वक स्वस्थ जीवन का आनंद प्राप्त करेंगे। आप निरोग एवं पश्चाताप रहित जीवन बिताएंगे। बृश्चिक नवमांश के प्रभाव आपके लिए सुरक्षा कवच के समान है। यह संभव है कि आप अपने जीवन की न्यूनता को त्याग देंगे। यदि ऐसा न हो सका तो आप दैन्यता और शारीरिक रोग के शिकार हो जाएंगे। यह आवश्यक नही है कि आपको संकट के आने की कोई पूर्व सूचना विदित हो सके। आप में अपार शक्ति साहस और सामर्थ्य से युक्त प्राणी हैं। आप अपने जीवन में लाभ प्राप्त करने तथा अपनी अभिलाषा की पूर्ति हेतु सुयोग्य एवं सक्षम प्राणी होंगे।

आप अपने रास्ते में आने वाली बाधाएं और बुराईयों को बाहर हटाने में समर्थ हों। आप स्वयं अपनी बुद्धि से अपनी महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए बिना किसी सहयोग के पूरी तन्मयता के साथ समर्पित भाव से एवं विश्वास पूर्वक संपादन कर सकेंगे। भगवान आपको अवश्य ही निर्भयता प्रदान करेंगे। आप अपने सभी कार्यों को संपादन हेतु लंबी दूरी तय करने में भी किसी की सहायता अथवा साथ लेने की परवाह नहीं करेंगे।

वास्तव में आपके जीवन के 25 वें वर्ष से आपका स्वर्णिम काल प्रारंभ होगा। आप बहुत बड़े धन शक्ति और संपन्नता से युक्त हों जाएंगे। आप बहुत उन्नति प्राप्त करके धन, भूमि, भवन, वाहन एवं सेवकों से युक्त हो जाएंगे। आपके आदेश को आपके सेवक अनुमोदन एवं अनुपालन करेंगे। आपके सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने में आपके अधीनस्थ सेवा करने वाले सेवक तथा अनुचर आपके आदेशानुसार आचरण करेंगे।

आप स्वभावतः बहुत बड़े कामुक प्राणी है। यदि आप क्षणिक आनंद के लिए संयोगात्म प्रवृत्ति से किसी भी विपरीति योनि के साथ क्षणिक सुख भोग हेतु जोखिम उठाएंगे तो वह किसी भयंकर रोग का सूचक होगा। उत्तम तो यह होगा कि आप प्रतिबंधित क्षेत्र अर्थात् अपने घर में किसी पसंदीदा या अधिकृत विपरीत योनि के साथ ही शारीरिक सुख-भोग का आनंद प्राप्त करें।

यदि आप अपनी उच्चाकांक्षा को प्राप्त करना चाहते है, तो स्वप्निल विचारों का त्याग करें एवं कठिन परिश्रम करने के प्रति सतर्क रहे तो वास्तव में आप अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु निश्चित रूप से समर्थ हों जाएंगे।

आपके समक्ष जो कुछ भी व्यवधान आ जाए तो आप में यह सामर्थ्य है कि आप अपनी जान्मजात नेतृत्व की क्षमता द्वारा अपने साहस और महत्वाकांक्षित भावना से स्पष्ट कर लेंगे।

यदा-कदा आप क्रोधित होकर अधिक जिद्द पकड़ लेते हैं तथा अपने मित्रों से असंतुष्ट होकर उनके साथ क्षमतापूर्वक व्यवहार नहीं कर पाते हैं।

आप अपने मित्रों की लंबी सूची के अनुरुप उनसे मिलने-जुलने के कार्यक्रम त्याग करने योग्य है। फिर भी आपके कुछ ऐसे मित्र हैं जो पूरे मन से आपको उन्नति के मार्ग में सहयोग प्रदान करते हैं। आप को बार-बार मित्रता के लिए होने वाली यात्राओं का कुछ समय के लिए प्रतिबंधित करना चाहिए। अर्थात् यात्रा बंद कर दें। यात्रा क्रम में आप देश के विस्तृत और विभिन्न स्थान के व्यक्तियों के साथ मित्रता संबंध स्थापित करेंगे।

आप भली प्रकार अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे। आपकी साहसिक प्रवृत्ति एवं अतिरिक्त क्रिया-कलाप से कई अन्य द्वेष भी रखेंगे। आप अपनी माता के प्रति पूर्ण आस्थावान रहेंगे तथा आपका दाम्पत्य जीवन अच्छी प्रकार संचालित रहेगा। आप स्थिर चित्त से अपने परिवार के हित में समय लगाएंगे। आपके पारिवारिक सदस्य आपके उत्तेजनात्मक जीवन से दुखी रहेंगे।

आपके लिए मंगलवार, गुरुवार, रविवार एवं सोमवार उपयुक्त एवं भाग्यशाली दिन है। शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार तीन दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं व्ययकारी होंगे।

आपके लिए लाभप्रद एवं प्रमाणित अंक 9 एवं 1 अंक है।

आप अपने जीवन के लिए रंग लाल, पीला और स्वर्णिम रंग को पसंद करेंगे। आपको हर दशा में काले रंग का त्याग करना चाहिए।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सट्टे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एव दाँत रोगी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते है तथा उनमें पराक्रम साहस एवं तेजस्विता का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है। इसके साथ ही जीवन में वे स्वपरिश्रम एवं योग्यता के बल पर उन्नति मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होते हैं। शारीरिक रूप से वे स्वस्थ रहते है तथा कठिन से कठिन कार्य को परिश्रम पूर्वक सफल बनाना उनके लिए आसान कार्य होता है।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे बिना किसी भय के अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में सफल होंगे। इससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही आप प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि भी अर्जित करेंगे। आप एक स्वाभिमानी पुरूष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सम्मान जनक स्थिति में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे।

आप में प्रारम्भ से ही तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इसी परिपेक्ष्य में यथा कदा आप क्रोध के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे फलतः इससे आपको कई बार अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः अनावश्यक क्रोध के भाव का यत्नपूर्वक परित्याग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे तथा आनंद पूर्वक सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगे।

मंगल की राशि की लग्न में स्थिति के प्रभाव से आप एक सत्यवक्ता पुरूष होंगे तथा सत्यानुपालन में यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगे। आप तेजस्वी एवं साहसी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से किसी उच्च एवं प्रतिष्ठित पद को अर्जित करने में समर्थ रहेंगे जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी प्रवृति दानशीलता के भाव से भी युक्त होगी तथा समय समय पर दीन दुखियों को अपनी ओर से सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे। आपमें महत्वाकांक्षा का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नित्य परिश्रमशील रहेंगे। शारीरिक रूप से आप बलिष्ठ रहेंगे तथा उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहकर अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। कार्य क्षेत्र में व्यापार की अपेक्षा नौकरी आपके लिए उत्तम रहेगी अतः व्यवसाय के प्रति उपेक्षा का ही भाव रखें।

इस प्रकार आप अपने साहस पराक्रम तेजस्विता एवं योग्यता से अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके इच्छित मात्रा में धनैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करके आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों तथा धनऐश्वर्य का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे साथ ही किसी संबंधी की सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त कर सकते है क्योंकि अपने नजदीक के संबंधियों के प्रति आपके मन में हमेशा सद्भावना रहेगी तथा सुख दुख में आप उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे। बागवानी के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा समय समय पर आप इस रूचि का प्रदर्शन करते रहेंगे।

आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक परिवार के मध्य आपका समय व्यतीत होगा। सामाजिक जनों के मध्य भी आप एक सम्माननीय पुरूष रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा मिष्ठान भक्षण के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। साथ ही अपने सम्भाषण में हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन तथा बहुमूल्य रत्नों को भी आप जीवन में प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी वस्तु को एक बार देखकर या सुनकर आप चिरकाल तक उसे नहीं भूलेंगे। साथ ही आप शीघ्र ही किसी कार्य प्रणाली को हृदयगम कर सकते है। आप उच्च शिक्षा, नीति, शास्त्र आदि में सफलता प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथा लेखन आदि क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त कर सकते है। आपके भाई बहिनों से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप एक बुद्धिजीवी प्राणी होंगे तथा शारीरिक बल की अपेक्षा बौद्धिक कार्य ही अधिक सम्पन्न करेंगे। अतः समाज में एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में आपकी पहचान बनी रहेगी। आप एक बहादुर एवं साहसी पुरूष होंगे तथा कलम की ताकत भी आपके पास रहेगी। अतः किसी उच्च अधिकारी या नेता के विरूद्ध आप साहस पूर्वक कुछ भी लिख सकते है। आप एक स्पष्टवादी पुरूष होंगे तथा स्पष्ट रूप से अपनी राय अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। संचार के सभी साघनों से आप युक्त रहेंगे तथा सूचना केन्द्रों में आप कार्यरत भी हो सकते है। जैसे डाकखाना, दूर भाष केंद्र , दूर संचार विभाग। आप संगीत प्रिय होंगे तथा वाद्य यंत्रों के उपयोग से आपको आनन्द प्राप्त होगा। समीपस्थ यात्राओं से आपको लाभ होगा तथा ऐसी यात्राओं से आपको महत्वपूर्ण स्मृतियां भी प्राप्त हो सकती हैं। कला के क्षेत्र में भी आपकी इच्छा रहेगी परन्तु समाचार पत्र के संपादक या संवाद दाता के रूप में कार्य करना आपके लिए अधिक लाभदायक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा पत्नी के प्रति आपके मन में निश्चल प्रेमभावना रहेगी। साथ ही हृदय में उदारता रहेगी एवं सत्य का आप पालन करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने कुल में प्रधान रहेंगे तथा सज्जन लोगों से सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्कराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है तथा केतु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगे। साथ ही ऐश्वर्य एवं समृद्धि भी आपकी बनी रहेगी तथा समाज में उच्चस्तर पर स्थापित होंगे। लेकिन उपरोकत सुख आपको स्वपराक्रम बुद्धिमता एवं परिश्रम से ही प्राप्त होंगे तथा केतु के प्रभाव से न्यूनाधिक विलम्ब भी हो सकता है।

आप एक भाग्यशाजी व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल संपत्ति से युक्त रहेंगे। साथ ही जमीन जायदाद के अच्छे योग बनते है। आप को नाना-नानी की ओर से कुछ सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा समाजिक प्रभाव भी बढेगा। चूंकि आप पराक्रमी एवं परिश्रमी व्यक्ति है। अतः अपने इन गुणों से भी आप इच्छित धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपका गृह सुख भी अच्छा रहेगा तथा एक सुंदर एवं आकर्षक घर के स्वामी होंगे। घर की तरफ से आप पूर्ण सक्रिय होंगे तथा स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखेंगे एवं भौतिक उपकरणों से आकर्षण में वृद्धि करेंगे। आपको घर में सभी वस्तुएं यथास्थान में ही अच्छी लगेंगी तथा उनके इघर उघर होने पर आप काफी नाराजगी का प्रदर्शन करेंगे। इसके लिए अन्य परिवारिक जनों को भी आप प्रेरित करेंगे। इस प्रकार आप सुख पूर्वक घर में निवास करेंगे। साथ ही उत्तम वाहन सुख की भी प्राप्ति होगी।

आपकी माता जी एक शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। सारे परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य एवं अपनत्व का भाव होगा एवं समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप भी माता का सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपके आपसी संबंधो में भी मधुरता रहेगी।

अध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा प्रारंभिक कक्षाओं में ही अच्छे अंको में परीक्षाएं उतीर्ण करेंगे। अध्ययनशील प्रवृति होने के कारण आप अन्य कक्षाओं में भी अच्छे अंक अर्जित करेंगे। स्नातक परीक्षा आप आसानी से उतीर्ण करेंगे तथा इससे आप उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होंगे। समाज में भी आपके मान एवं सम्मान में वृद्धि होगी तथा आप में आत्म विश्वास की वृद्धि होगी ।

चतुर्थ भाव में केतु के प्रभाव से जीवन में आपको यदा कदा रक्त चाप एवं हृदय रोग संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। यद्यपि इसका दुष्प्रभाव अधिक नहीं होगा तथापि युवावस्था से ही आपको खान-पान पर नियंत्रण रखना चाहिए तथा ऐसे भक्ष्य या पेय पदार्थो का सीमित उपयोग करना चाहिए जो रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानियों को उत्पन्न करता है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा शनि भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करने में तत्पर होंगे। यदा कदा उचित योजना के अभाव में आपको अधिक परिश्रम भी करना पड़ सकता है लेकिन परिश्रम करने में आप समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य एवं धार्मिक शास्त्रों में आपकी रूचि अल्प होगी परन्तु आधुनिक शास्त्र इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में ज्ञानार्जन में तत्पर रहेंगे तथा अपने परिश्रम एवं बुद्धिमता से इन क्षेत्रो में शोधकार्य के भी इच्छुक होंगे फलतः समाज में आप एक विद्वान एवं आदरणीय व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे।

शनि की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों आदि में आपकी रूचि कम ही होगी तथा इस में आप आदर्शवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। इस क्षेत्र में आप भावुकता की अपेक्षा व्यावहारिक्ता से कार्य लेंगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है क्यों कि आप एक से अधिक प्रसंग पसंद नहीं करेंगे।

पंचमभाव में सिंहराशि में शनि के प्रभाव से आपकी संतति अल्प होगी तथापि एक पुत्र का योग अवश्य बनता है। आपकी संतति बुद्धिमान गुणवान एवं योग्य होगी तथा अपने कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे। वे स्वपराक्रम एवं परिश्रम से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनका विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए माता से उनका सम्पर्क अधिक होगा। लेकिन माता पिता का आदर या सम्मान समान रूप से करेंगे तथापि शनि के प्रभाव से यदा कदा आज्ञा का उल्लंघन भी कर सकते हैं या अपनी मनमानी का प्रदर्शन करेंगे लेकिन इससे आपको चिंतित नहीं होना चाहिए क्यों कि वे योग्य है तथा जीवन में सफलताएं अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल वे आपकी सेवा भी करेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति की प्रगति सन्तोष जनक रहेगी तथा प्रारंभिक कक्षाओं से ही वे अच्छी सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगे। वे व्यावहारिक चतुर कुशल भी होंगे जिससे वे किसी भी क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भी बच्चों की उच्च शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्व अधिक से अधिक सुविधाएं प्रदान करेंगे। अतः बच्चों के भविष्य निर्माण में आप का मुख्य योगदान रहेगा लेकिन वृद्धावस्था में वे किंचित आपकी उपेक्षा कर सकते है जिसके लिए आपको सामंजस्य बनाए रखना चाहिए।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बुध है चूंकि यह भाव रोग का प्रतिनिधित्व करता है। अतः इसके प्रभाव से आप नाक कान तथा गले आदि के कष्ट से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आप में सहन शक्ति के भाव की भी यदा कदा अल्पता रहेगी एवं चर्म रोगों से आपको परेशानी होगी ।

आपको क्रोध एवं उत्तेजना पर हमेशा नियंत्रण रखना चाहिए अन्यथा इसके दुष्प्रभाव से आपके मित्रों की संख्या में कमी आएगी तथा विरोधी पक्ष में वृद्धि होगी। साथ ही बन्धु वर्ग तथा अन्य संबन्धी आप के लिए छिपकर षडयंत्र भी कर सकते हैं। सरकार या पड़ोसियों से भी आपको शत्रुता का सामना करना पड़ सकता है। अतः आप अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें तथा किसी अन्य की अनावश्यक आलोचना न करें एवं सहनशीलता बनाएं रखें। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको जीवन में अनावश्यक शत्रुओं एवं समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

आपके लिए धन सम्बन्धी झगड़े या मुकद्दमे अनुकूल नहीं रहेंगे। अतः ऐसे मामलों की यत्न पूर्वक उपेक्षा ही करें। सेवक वर्ग की आपको प्रबल आवश्यकता रहेगी लेकिन इनसे आपको समय समय पर धन एवं अन्य प्रकार से हानि होती रहेगी अतः नौकरों का अत्यधिक सावधानी से चयन करें। साथ ही ऋण आदि लेने की भी आपको उपेक्षा करनी चाहिए यदि आपकी प्रवृत्ति इस ओर रही तो आप काफी समय तक ऋण के भार से दबे रहेंगे। बचपन में मामा तथा मामी से आपको सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त खान पान में तेज मसालों आदि का भी परहेज रखना चाहिए अन्यथा इससे उदर या गुर्दे सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त शत्रु वर्ग का आप दमन करेंगे परन्तु स्त्रियों के प्रति आसक्ति में आपका धन व्यय हो सकता है अतः सतर्क रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया तुला राशि चंचल, भ्रमण प्रिय, प्रियवक्ता तथा माता पिता एवं गुरू जनों पर श्रद्धा रखने वाली होती है। यह वायुतत्व राशि है जिससे जातक सौम्य एवं गंभीर स्वभाव का होता है। लेकिन मंगल नैसर्गिक रूप से तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं अग्नितत्व ग्रह है तथा तुला राशि में स्थित होने के कारण जातक की प्रबल कामेच्छा रहती है।

अतः इनके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वभाव सौम्यता के साथ साथ तेजस्वी भी होगा तथा अवसरानुकूल वे इस भाव का प्रदर्शन करेंगी। साथ ही साहस एवं पराक्रम का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा। सांसारिक कार्यो में वह दक्ष होंगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी। पाक शास्त्र के प्रति उनकी विशेष रूचि रहेगी तथा उनके द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट व्यंजन सबको प्रिय लगेंगे।

आपकी पत्नी लालिमा लिए गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा तुला राशि के प्रभाव से उनके सौंदर्य में प्रबल आकर्षण रहेगा तथा इसमें वृद्धि करने के लिए वह आधुनिक सौंदर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। साथ ही शारीरिक स्वस्थता एवं अंगों की पुष्टता के लिए वे व्यायाम या यौगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। अग्नि तत्व ग्रह मंगल के प्रभाव से उनकी शारीरिक संरचना में पतलापन रहेगा परन्तु आकर्षण में कोई कमी नहीं आएगी।

सप्तम भाव में तुला राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा। आपका विवाह विज्ञापन या किसी समीपी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देंगे। इससे जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह समृद्ध परिवार में होगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनऐश्वर्य से सुसम्पन्न होंगे । तथा समय समय पर उनसे आर्थिक एवं नैतिक सहयोग मिलता रहेगा आपके आपसी संबंधों में विशेष मधुरता रहेगी ।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा एवं सम्मान का भाव होगा तथा बहू के रूप में जितनी सेवा या सुख उन्हें देना चाहिए देंगी जिससे उनसे संबंधों में मधुरता रहेगी साथ ही देवर एवं ननदों से भी मधुर स्वभाव के कारण मैत्री पूर्ण संबंध बनेंगे।

व्यापार या अन्य योजनाओं में साझेदारी की दृष्टि से आप के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे आपको लाभ एवं उन्नति मिलेगी। अतः साझेदारी के कार्यो को आप सम्पन्न कर सकते है।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। इसके प्रभाव से आप एक व्यवहारिक व्यक्ति होंगे तथा ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि पर आपका विश्वास अल्प ही रहेगा तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप भाग्यशाली रहेंगे तथा जमीन जायदाद मुकद्दमे या अन्य किसी भी प्रकार से आपको विशिष्ट लाभ होता रहेगा। साथ ही पैतृक सम्पत्ति या किसी समीपस्थ संबन्धी के द्वारा भी आपकी जायदाद में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। साझेदार या पत्नी के द्वारा भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप यद्यपि घर से पूर्ण सुसम्पन्न व्यक्ति होंगे तथापि शादी के समय भी आप दहेज नकदी या आभूषण आदि को भी प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी।

जीवन में आपके घर में चोरी आदि की संभावनाएं अल्प रहेंगी यदि कोई ऐसी घटना घटेगी तो यह सामान्य रहेगी अतः इसके विषय में आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि सावधानी वश आपको अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को किसी सुरक्षित स्थान में रखना चाहिए। आपको अपने घर या कार आदि का बीमा अवश्य कराना चाहिए क्योंकि इनसे आपको पूर्ण लाभ होने की संभावना रहेगी। दीर्घावधि बीमा की अपेक्षा लधु अवधि बीमा कराने से अधिक लाभ होगा। सामान्यतया आप उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहेंगे परन्तु वाहन चलाते समय आपको गति पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए तथा ध्यान से सवारी चलानी चाहिए अन्यथा सामान्य दुर्घटना घट सकती है। इसके अतिरिक्त आप की आयु अच्छी रहेगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहंगे। साथ ही तीर्थ स्थानों की यात्रा करने की भी आपके मन में रूचि बनी रहेगी। आप प्रतिदिन न्यूनाधिक समय दैनिक पूजापाठ पर अवश्य व्यतीत करेंगे। समाज में धर्म के क्षेत्र में आप कई कार्यो को सम्पन्न करेंगे। साथ ही धर्मोपदेशक के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा आपके विचार से बिना उसकी इच्छा के कुछ भी कार्य होना असम्भव सा है। साथ ही आप कर्म की अपेक्षा भाग्य पर अधिक विश्वास करने वाले व्यक्ति होंगे।

आपके पास अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी विद्यमान रहेगी। अतः अपने विषय में आपको पूर्वाभास हो सकता है। आप धार्मिक क्षेत्र में उच्च शिक्षा अर्जित करने के भी इच्छुक रहेंगे साथ ही लम्बी तीर्थ यात्राओं को भी जीवन में सम्पन्न करेंगे। अपने जीवन में आपको सामाजिक तथा कार्य क्षेत्र में इच्छित सफलता एवं ख्याति प्राप्त होगी तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपको इच्छित मान प्रदान करेंगे। आपके विचार से जीवन में मनुष्य को जो भी शुभ या अशुभ फल प्राप्त होते है वे सब पूर्व जन्म में किए गए कार्यो का फल है अतः आंतरिक रूप से आपकी सन्तुष्टि बनी रहेगी पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही ज्योतिष या तंत्र मंत्र में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसका ज्ञान भी रहेगा। इसके अतिरिक्त आप धर्मानुपालन में तत्पर, देवता एवं ब्राह्मणों के सेवक महात्माओं की आज्ञा का पालन करने वाले तथा परम्परागत धर्म से समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही राहु भी मित्र राशि में दशम भाव में ही स्थित है। मकर राशि भूमि तत्व एवं राहु वायुत्व ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य सामान्यता श्रमसाध्य होगा एवं बौद्धिकता तथा मानसिक क्रिया का इसमें अल्प समावेश होगा। साथ ही राहु के प्रभाव से आप अपने स्वंतत्र व्यवसाय को करने में विशेष रूचिशील रहेंगे तथा इसमें आपको इच्छित उन्नति एवं सफलता की भी प्राप्ति होगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए वायु सेवा, एअर लाइन्स, खनिज एवं खनिज विभाग रासायनिक क्षेत्र, लोहे की उत्पादन वाली फैक्टरियां, उद्योग, पेट्रोलियम विभाग, फैक्टरी कर्मचारी, नौकरी, मध-विभाग आदि क्षेत्रो में आजीविका प्रारम्भ करके वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही इन क्षेत्रों में कार्य करने से आप को सतत उन्नति की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा तथा आपके मन में भी शांति तथा सन्तुष्टि की भावना बनी रहेगी।

व्यापारिक क्षेत्र में इच्छित उन्नति एवं सफलता के लिए आप भारी उद्योग, फैक्टरी, प्रेस, लोहे के संबंधित कार्य, हवाई ट्रेवल एजेन्सी, खनिज तथा पेट्रोलियम पदार्थो का व्यापार, शराब एवं राजनीति के क्षेत्र को व्यवसाय के रूप में अपना सकते है। यदि आप इन्हीं क्षेत्रों में अपना व्यापार स्थापित करेंगे तो आपको वांछित सफलताएं मिलेंगी एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। साथ ही उन्नति के क्षेत्र में नवीन आयाम स्थापित करने में समर्थ होंगे।

मित्रराशि में दशम भावस्थ राहु के प्रभाव से जीवन में आप उच्चाधिकार एवं सम्मानित पद प्राप्त करने में समर्थ होंगे तथा इसमें आपको जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी। यद्यपि राहु एक नैसर्गिक पापी एवं वाधा कारक ग्रह है। अतः जीवन में मान सम्मान एवं उच्चाधिकार प्राप्त होने में किंचित व्यवधान एवं विलम्ब हो सकता है। इसलिए आपको इस ओर से मन में निराशा की भावना नहीं रखनी चाहिए तथा ईमानदारी एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए। राहु के प्रभाव से आपको राजनीति के क्षेत्र में शीध्र एवं अप्रत्याशित सफलता भी मिल सकती है।

दशम भाव में राहु के प्रभाव से आपके पिता पराक्रमी, तेजस्वी एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा स्वभाव से वे क्रोधी भी होंगे लेकिन उनका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य जनों के ऊपर उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सहयोग की भावना रहेगी तथा आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही उच्च शिक्षा के प्रति विशेष चिन्तित होंगे। आपको उनके प्रभाव से भी काफी मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे लेकिन नैसर्गिक पाप ग्रह राहु के प्रभाव से यदा कदा संबंधो में तनाव तथा मतभेद उत्पन्न होंगे तथापि आप सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे तथा अप्रिय स्थिति से सदैव सुरक्षित होंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से आप सौभाग्य से युक्त रहेंगे तथा आपकी मनोकामनाएं शीघ्र ही पूर्ण होती रहेंगी। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा आपकी कई इच्छाएं मन में विद्यमान रहेंगी तथा अन्य जनों की अपेक्षा आप की महत्वाकांक्षाएं यथा समय पूर्ण होंगी। आपके आय स्रोतों में स्वतः वृद्धि होती रहेगी तथा इनमें आपको अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। अतिरिक्त आय स्रोतों के लिए आप मूल संबन्धी व्यापार लकड़ी या पेट्रोलियम पदार्थों के कार्य से इच्छित लाभ अर्जित कर सकते है।

आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रों की संख्या भी अल्प ही रहेगी जिसमें आपको हार्दिक प्रसन्नता मिलेगी एवं उनसे भी यथा समय यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। अपने से अधिक आयु के लोगों से मित्रता आदि संबंध स्थापित करने से आपको इच्छित लाभ होगा क्योंकि अपनी आयु की अपेक्षा अधिक आयु के लोगों को समझना आपके लिए आसान रहेगा। प्रौढ़ या वृद्धावस्था में मित्रों के मध्य आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा वे सभी आपको अपना पथ प्रदर्शक समझेंगे।

आपके अंदर सामाजिकता की भावना हमेशा विद्यमान रहेगी तथा सामूहिक मनोरंजन में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा आदरणीय पुरूष समझें जाएंगे तथा कोई भी व्यक्ति आपके विरूद्ध सत्य असत्य बात कहने के लिए तैयार नहीं होगा तथा आपके सभी आभारी रहेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपको इच्छित सुख एवं सहयोग सामान्य मात्रा में ही प्राप्त होगा परन्तु बहिनों से यदा कदा विशिष्ट लाभ या सहयोग मिल सकता है। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपके बाऐं कान में कोई परेशानी होगी परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक मामलों में प्रारंभ से ही भाग्यशाली रहेंगे लेकिन समय के साथ ही आप बिना सोचे समझे कई बार मुक्त हाथों से व्यय करेंगे इससे आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप बुद्धिमता पूर्वक योजना बनाकर व्यय करेंगे तो आप आर्थिक परेशानियों से सुरक्षित रह सकते है।

आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे अतः धार्मिक कार्य कलापों तीर्थ यात्राओं मन्दिर निमार्ण आदि कार्यो या परोपकार संबंधी कार्यो पर समय समय पर व्यय करते रहेंगे। बच्चों की आप पूर्ण चिन्ता करेंगे तथा उनके रहन सहन पठन पाठन का विशेष ध्यान रखेंगे तथा उन पर यथोचित व्यय करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप उन्हें अच्छे स्कूलों तथा कालेजों में प्रवेश दिलाने के परम इच्छुक रहेंगे। साथ ही आपके मित्र एवं संबंधी भी अधिक होंगे। अतः समय समय पर इन पर भी आपका व्यय होता रहेगा। साथ ही घर की साज सज्जा की वस्तुओं यथा फर्नीचर टेलीफोन आदि भौतिक उपकरणों पर भी आपका समय समय पर व्यय होता रहेगा लेकिन आप व्यय पहले करेंगे बाद में अपना आर्थिक बजट देखेंगे इससे यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आप कर्ज आदि ले सकते है लेकिन इससे कोई परेशानी नहीं होगी तथा आप आसानी से कर्ज वापस कर देंगे।

आप नवीन विचारों की खोज में हमेशा मननशील रहेंगे तथा जीवन में नवीन आयाम भी प्राप्त करेंगे। साथ ही यात्रादि से भी आपकी इस क्षेत्र में उन्नति होगी आप शिक्षा, सरकारी अथवा कम्पनी के कार्य से विदेश यात्रा भी कर सकते है तथा इन यात्राओं से आपको भविष्य में पूर्ण लाभ होगा। इसके अतिरिक्त आप विदेश में लम्बी अवधि तक प्रवास भी कर सकते है जो आर्थिक एवं सामाजिक स्तर बढ़ाने के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। इससे आपके रहन-सहन, खान पान एवं अन्य क्षेत्रों में उन्नति कारक परिवर्तन दृष्टिगोचर होंगे।

नक्षत्रफल

आपका जन्म उतरा फाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, योनि गौ, नाड़ी आद्य, गण मनुष्य तथा वर्ग श्वान होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "टे" होगा।

आपके मन में दया तथा दानशीलता का भाव स्वभाव से ही विद्यमान रहेगा तथा समयानुसार आप दीन दुःखियो तथा जरूरतमन्द लोगों के प्रति इस भावना को प्रदर्शित करते रहेंगे। आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा आपका आचरण अन्य जनों के लिए अनुकरणनीय तथा प्रशंसनीय रहेगा। साथ ही अपने अच्छे आचरण स्वभाव तथा कार्यों के द्वारा आप समाज से पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आप राज्य में या क्षेत्र में किसी उच्च पद पर भी सुशोभित हो सकेंगे। आपका स्वभाव कोमल होगा तथा सबके साथ आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही आप एक धैर्यशाली पुरूष भी होंगे तथा धैर्यपूर्वक अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

दाता दयालु सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपते प्रधानः।
धीरोऽत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, शीलवान, कीर्तिवान राजमंत्री, स्वभाव से कोमल तथा धैर्यधारण करने वाला होता है।

आप जीवन में समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखो का आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। साथ ही समाज से पूर्ण मान सम्मान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। आप अन्य जनों के द्वारा किये गए उपकार को मानने वाले होंगे तथा उनके प्रति अपनी पूर्ण कृतज्ञता के भाव को प्रकट करेंगे। इसके अतिरिक्त आप श्रेष्ठ विद्वान के गुणों से भी पूर्ण रूप से युक्त रहेंगे।

भोगी चोत्तरफाल्गुनीभजनितो कृतज्ञः सुधीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक भोगी सम्माननीय, कृतज्ञ तथा विद्वान होता है।

समाज में सभी वर्गो के लोगों को आप अपनी सेवाओं तथा अच्छे कार्यों से प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा उन सबके प्रिय रहेंगे। साथ ही आप अपनी स्वर्जित विद्या के द्वारा धनार्जन करके जीविकोपार्जन करेंगे एवं समस्त सुखों के उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभागद्वितीयफाल्गुन्यां।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्या से धन प्राप्त करने वाला, भोगी तथा सुखी होता है।

सहनशीलता के गुण से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे तथा वीरता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर तथा प्रिय होगी जो अन्य जनों को रूचिकर लगेगी। साथ ही आप निशाने बाजी की कला में भी निपुण होंगे। आप एक महान योद्धा भी होंगे तथा जन सामान्य से आपका प्रिय व्यवहार रहेगा।

दान्तः शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थ पण्डितः।
उत्तराफाल्गुनी जातो महायोद्धा जनप्रियः।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सहनशील वीर तथा मधुर बोलने वाला, धनुष बाण विद्या में निपुण, महायोद्धा तथा सर्वसाधारण का प्रिय होता है।

इन्द्रियों का दमन करने अर्थात् संयम रखने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगे तथा आपका स्वभाव भी अत्यन्त शान्त होगा। सभी लोग आपसे लगाव प्रदर्शित करेंगे तथा समाज में आप एक बुद्धिमान पुरूष के रूप में आदरणीय समझे जाएंगे।

दान्तः शान्तो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदस्य पारगः।
उत्तराफाल्गुनिजातो महाबुद्धिर्जनः प्रियः।।
जातकदीपिका

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक इन्द्रियों को वश में करने वाला, शान्त स्वभाव से युक्त, मधुर बोलने वाला, धनुर्वेद में पारंगत, महान बुद्धिमान तथा जनता का प्रिय होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

सिंह राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वभाव उग्र तथा तेज होगा। आपकी आखें छोटी तथा पीले रंग की होगी। वनों तथा पर्वतों में भ्रमण करने का आपको अत्यन्त शौक रहेगा तथा मांस भक्षण करना आपको रूचिकर लगेगा। सन्तति में आपके पुत्रों की संख्या अल्प

मात्रा में ही रहेगी। आप शीघ्र ही बिना किसी कारण के ही क्रोधित होने वाले व्यक्ति भी होंगे तथा अभिमान का भाव भी आपके अर्न्तमन में व्याप्त रहेगा जिस का आप यदा कदा प्रदर्शन करते रहेंगे। आप अपने जीवन में तृष्णाओं से भी व्याकुल रहेंगे तथा समय समय पर इनसे आपको कष्टानुभूति होती रहेगी। आपकी प्रवृति दानशील होगी एवं अवसरानुसार आप दीन दुःखियो तथा जरूरतमन्द लोगों को दान देते रहेंगे। आप एक पराक्रमी तथा स्थिर बुद्धि से युक्त पुरूष होंगे तथा आपके समस्त कार्य धैर्यपूर्वक सम्पन्न होंगे।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोळल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगनग कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरूजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योळर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की अस्थियां अत्यन्त ही पुष्ट होंगी तथा उग्रता के भाव से अधिकांश युक्त रहेंगे। किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले आप अवश्य ही कोई न कोई ध्वनि मुंह से निकालेंगे। आप विशाल तथा आकर्षक वक्षस्थल के स्वामी होंगे तथा अपने पराक्रम से समाज में अपने प्रभुत्व को पूर्ण रूप से स्थापित करने में सफल रहेंगे। आप चारों तरफ गम्भीरता से निरीक्षण करने के बाद ही सन्तुष्ट होकर किसी भी कार्य को आरम्भ करेंगे।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररूदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दातातीक्ष्णोळल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आप का मुखमंडल भी विशाल एवं विस्तृत रहेगा तथा स्वभाव में अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा जिसका आप समाज में प्रदर्शन करते रहेंगे। साथ ही माता के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोळभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप उदरभरण योग्य जीविकार्जन से पूर्ण सन्तुष्टि अनुभव करने वाले होंगे तथा मांस के प्रति आप में लोलुपता के भाव की प्रबलता रहेगी साथ ही पर्वतों की गहन गुफाओं में भ्रमण करने में आप हमेशा उत्सुक रहेंगे। आप सेवक तथा बन्धुवर्ग से युक्त रहेंगे।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरूगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।

जातकदीपिका

आप स्वभाव से ही क्षमाशीलता के गुण से सुशोभित रहेंगे तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमा करना ही श्रेयस्कर समझेंगे। आप अपने समय को व्यर्थ में नष्ट नहीं करेंगे तथा सदैव अपने कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे। आपका अधिकाँश समय यात्राओं तथा भ्रमण में व्यतीत होगा तथा शीत से आप अत्यधिक भय का अनुभव करेंगे। आपके सभी मित्र अच्छे तथा गुणवान होंगे। समाज में अन्य जनों से आपका व्यवहार विनयशील रहेगा तथा माता पिता का आपके प्रति विशेष अनुराग रहेगा। इसके अतिरिक्त आप कई बुरी आदतों से भी युक्त रहेंगे फिर भी संसार में पूर्ण ख्याति को प्राप्त करेंगे।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपके नेत्र तथा शरीर की बनावट अत्यन्त ही मनोहर एवं आकर्षक रहेगी तथा गम्भीरता से अवलोकन करने की प्रवृति से आप युक्त होंगे तथा अपने सम्पूर्ण जीवन को विभिन्न प्रकार के सुखों से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप देवता तथा ब्राहमणों के प्रिय भक्त होंगे इनके प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा व्याप्त रहेगी तथा समय समय पर इनकी पूजार्चना करते रहेंगे। आपका हृदय दया की भावना से भी युक्त रहेगा तथा बल का भी आप में कदापि अभाव नहीं रहेगा। साथ ही आप विभन्न कलाओं के विषय में जानकारी रखने वाले व्यक्ति होंगे। आप तीव्रबुद्धि के स्वामी भी होंगे तथा आपकी शारीरिक कान्ति अति दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त आप बहुत से लोगों को आश्रय तथा सुख प्रदान करने वाले पराक्रमी पुरूष भी होंगे।

आप समाज में पूर्ण मान तथा सम्मान की प्राप्ति करेंगे तथा धन से हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आखें भी विशालता से युक्त रहेंगी तथा निशानेबाजी में आप अत्यन्त दक्ष एवं चतुर होंगे। आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण तथा नगर वासियों को वश में करने में आप पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्री वर्ग के अत्यन्त प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। आपका मन हमेशा उत्साह से परिपूर्ण रहेगा तथा अपने जीवन के समस्त कार्यकलापों को उत्साहपूर्वक सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही वाद विवाद करने में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे तथा अपनी चतुराई से सभी जनों को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त

रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, बवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सचेत रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य अशुभ फल हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट सूर्य भगवान को प्रातः काल अर्ध्य प्रदान करना चाहिए तथा रविवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, माणिक्य, रक्त वस्त्र, गेहूं, गुड़ इत्यादि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य सुपात्र से कम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्वऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या अधिक से अधिक दस-दस रुपये जितने भी रुपये सभी दे सकें) इकट्ठा कर के धर्म स्थान पर सामूहिक यज्ञ करें।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का

अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री मातृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर वजन में चांदी लेकर उसी दिन दरिया में बहा देवे।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में ग्यारहवें खाने में सूर्य पड़ा है। इसकी वजह से आपकी इच्छाएं बहुत ऊंची होंगी और पूर्ण भी होंगी। आप पूर्ण धार्मिक विचारों के होंगे। सत्तापक्ष से लाभ होगा। आपको ऐशो-आराम मिलेगा और जीवन उत्तम रहेगा। आपको तीन पुत्रों का सुख मिलेगा। आप बाहर से सुंदर दिखने वाला मकान बनाएंगे। आप अमीरी जीवन व्यतीत करेंगे। सुस्ती और लापरवाही से जीवन में आए शुभ अवसरों को आप खो सकते हैं। आपके जीवन की आखिरी अवस्था अच्छी बीतेगी। आपकी उन्नति होती रहेगी। आप आस्तिक होंगे। आपके अपने सरकल में अच्छे ताल्लुकात बनेंगे। बुराई के कामों से आप हमेशा दूर रहेंगे। आप शाकाहारी होंगे और आज्ञाकारी स्त्री व संतान का सुख मिलेगा। जीवन में सभी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। आपके पूरे परिवार का धार्मिक होना शुभ होगा।

यदि आपने पब्लिक को लाभ देने की बजाय उल्टे उनका काम बिगाड़ा, भेड़-बकरी मारी या भेड़-बकरी का मांस खाया, पिता के बहन-भाई से झगड़ा किया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से पिता के बहन भाई अशुभ फल देंगे। शराब पीने, मांस खाने और झूठ बोलने से चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा नजर आएगा। आपको सपने में सांप दिखें तो, इसका अशुभ फल होगा। दूसरे को गाली देना, लड़ाई-झगड़ा करना, झूठी गवाही देने पर किसी की अमानत में खयानत करने से आपका जीवन बर्बाद हो सकता है। पुत्र जन्म में बाधा या पुत्र सुख नहीं मिलेगा। झूठ बोलने से आपकी शक्ति कम होगी। यात्रा में चोट-हानि का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. झूठ-झूठ से परहेज रखें।
2. शराब-मांस-मछली का प्रयोग न करें।

उपाय :
1. मूली का दान करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

संतान सुख और संतान की लंबी आयु के लिए -
1. 45 वर्ष की आयु में कसाई से बकरा छुड़ा कर जंगल में खुला छोड़ दें।
2. 43 दिन तक रेत पर बिस्तर लगा कर सोयें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के पांचवें खाने में चंद्रमा है। इसकी वजह से हीरे-जवाहरात से

संबंधित नौकरी-व्यापार लाभ देगा। कन्या सन्तान अधिक होने का योग है। आपको सुख के सभी साधन मिलेंगे। वन विभाग के अधिकारी हो सकते हैं। आप 9 वर्ष जीवन में यात्रा करेंगे। विदेश यात्रा से लाभ संभावित है। आपकी संतान की उम्दा परवरिश होगी। धार्मिक विचार रखने से आपके धन-दौलत की बरकत होगी। आप किसी के भी सामने नहीं झुकेंगे। आप दूसरों का इन्साफ करने में आगे रहेंगे। आप रहम दिल इंसान होंगे और किसी से बेइंसाफी नहीं करेंगे। लड़ाई-झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगे वह जरूर जीतेगा। सरकारी काम शुभ फल देने वाला होगा। आप सामाजिक कार्य करें तो आपकी औलाद के लिए अच्छा होगा। यात्रा का फल शुभ होगा। आपकी कभी भी बर्बादी नहीं होगी। आपको अपने जीवन की सभी मशहूर बातें हमेशा याद रखनी चाहिए।

यदि आपने धर्म विरोधी कार्य किये, गुप्त पाप किया, चकोर पक्षी का शिकार किया, अपना भेद किसी को बताया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी विद्या में विघ्न, संतान द्वारा विरोध होगा। आपका अपना भेदी तबाही कर सकता है। लालच और खुदगर्जी से नुकसान होगा। आपकी आदत हरेक को गुमराह करने वाली होगी। आपको नौकरी-व्यापार से अच्छा लाभ नहीं हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आप अपनी मर्जी से कोई कार्य न करें, किसी की सलाह जरुर लेवें।
2. किसी भी पाप कार्य में दखल न देवें।

उपाय :

1. धार्मिक कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लेवें।
2. कभी-कभी पहाड़ की यात्रा करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप न्यायप्रिय, साहसी, पशुपालक, व्यापारी होंगे। आपका स्वास्थ्य उम्दा रहेगा। अपनी किस्मत स्वयं बनाने वाले होंगे। आप अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। आपके जीवन में आपकी 28वें वर्ष से लगातार 42वें वर्ष तक की आयु तक खूब धनागम होगा। आर्थिक दशा में राजा के समान होंगे। आपके भाग्य के कारण छोटी उम्र में ही पिता के घर धन का भंडार लग जायेगा। आपका व्यवसाय या नौकरी ऊंचे दरजे की होगी। आपको पुत्र-पौत्र का सुख मिलेगा। आपके जीवन में बुरा असर कम पड़ेगा। कई प्रकार से आमदनी का स्रोत होगा। अपनी कमाई से भूमि-भवन प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं को दबा कर रखना पड़ेगा। आपको सुख-सुविधाओं की कमी नहीं रहेगी। फकीरी वेश-भूषा में रह कर भी आपकी आध्यात्मिक शक्ति अच्छी होगी।

यदि आपने माता-पिता, संबंधियों से झगड़ा किया, भाई-बन्धुओं से जमीन जायदाद

के लिये मुकद्दमा किया, किसी से काम करवा कर उसका मेहनताना नहीं दिया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से भाई-बंधुओं से जमीन-जायदाद, धन संबंधी झगड़े का भय रहेगा। अगर आपका चाल-चलन ठीक न रहे तो आमदनी होते हुये भी कर्जदार होंगे, संपत्ति बर्बाद होगी। आपके बच्चे झगड़ालू होंगे या परिवार में बच्चा गोद भी लेना पड़ सकता है। उसके आगे के जीवन में कुछ भी बुराइयां नहीं रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. भाई-बंधुओं पर भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :

1. जीजे-साले-भांजे या दोहते की सेवा करें।
2. मिट्टी के बर्तन में शहद या सिंदूर भर कर घर में रखें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में ग्यारहवें खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपकी गुणी और संपन्न संतान होगी। आपकी संतान का विवाह उच्च कुल में होगा। आपके जीवन के 1, 23, 33, 36, 44, 57, 73 84 एवं 94वां वर्ष शुभ और लाभदायक होगा। आप स्वयं हुनरमंद तथा शर्मसार होंगे। आपकी पूरी तरह तकदीर बनने की उम्मीद रहेगी। 34 वर्ष के बाद आप अच्छी प्रकार से जीवन बिताएंगे। आपको दोस्ती करने से लाभ नहीं होगा। आपको विदेश के व्यवसाय से भी लाभ हो सकता है। बुद्धि के कामों में आपको सफलता मिल सकती है। सरकारी पक्ष से लगाव, लाभ और सम्मान प्राप्त हो सकता है। आपको कसीदाकारी, चित्रकला, कलाकारी, अध्यापन या कानूनी काम से लाभ हो सकता है। विशेष रूप से आप अपनी बुद्धि का प्रयोग कर लाभ और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आपने बुरे या बदकारी के काम किये, चौड़े पत्तों का वृक्ष आपके घर में हुआ, साधू-फकीर से धागे ताबीज आदि लिया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से जीवन के 39वें वर्ष में शारीरिक कष्ट की आशंका है। आपकी बहन अमीर घर में ब्याही जाएगी परंतु पति की वजह से दुःखी रहेगी। आपके बच्चों पर भी कुछ बुरा असर हो सकता है। आपके पांव में, कान में, जिस्म के जोड़ों पर बीमारी होने की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चौड़े पत्तों का वृक्ष घर में न लगाएं।
2. पीतल खाली बर्तन बंद न रखें।

उपाय :
1. कंठी वाला तोता पालें।
2. तांबे का पैसा या चौरस टुकड़ा सफेद धागे में डाल कर गले में पहनें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से जीवन निर्वाह के लिए आपको अकेले ही संघर्ष करना पड़ेगा। आप अपने पराक्रम से यशस्वी होंगे। आपको सोने, चांदी, कपड़े के काम में खूब लाभ होगा। कपड़े या दलाली के कामों से यश और अधिक धन मिलेगा। आप जीवन के 29वें वर्ष से सुख की ओर अग्रसर होंगे। आपको अपने लिए संघर्षरत रहना पड़ सकता है। आपको पिता की तरफ से जितना सहयोग चाहिए उतना सहयोग नहीं मिलेगा। दस्तकारी के कामों में खूब धन मिलेगा। आप धर्म में विश्वास रख कर नेकी के काम करेंगे। आपका गृहस्थ जीवन सामान्य रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। आप सरकारी विभाग से संबंधित यात्रा से हीरे-मोती पैदा करेंगे। विदेश की यात्रा से भी भरपूर लाभ मिलेगा। आप अपने पराक्रम से काम करके बहुत सुखी हो जाएंगे।

यदि आपके घर में या घर के पास सूखा पीपल का वृक्ष हुआ, विद्या अधूरी रही, ख्वाबी महल देखने शुरु किये तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से उम्र के 36 वर्ष के बाद धर्म के मंदिर में जाकर शीश झुकाने से बहुत लाभ होगा जिससे आपका भाग्य बदल जाएगा। आप चरित्रहीन औरतों के साथ रह कर बहुत दुःखी रहेंगे। आप चोरी और चरित्रहीनता से दूर रह कर, भाग्य के लिए अच्छा फल प्राप्त कर सकते हैं। दूसरों पर रहम करके दुःख उठाने के भागी होंगे। आपके यहां अग्निकांड न हो इसके लिए सतर्क रहना चाहिए। आपका संतान के साथ मनमुटाव रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सोना न बेचें।
2. पीले वस्त्र या सोना न पहनें।

उपाय :
1. गुरु-साधू की सेवा करें, पीपल को पानी से सींचें।
2. 43 दिन तांबे का पैसा बहते पानी में प्रवाह करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी ज्योतिष, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी। आप अपने परिवार का पोषण करेंगे। राज्य पक्ष से अच्छा लाभ मिलेगा। आप हर प्रकार से सुखी रहेंगे। स्त्री के माध्यम से जो भी कार्य संपन्न होते हैं वह आपके लिए अच्छा होगा। आपके काम के सुनिश्चित परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आड़े समय में मदद्गार होगी। आपके जीवन में तरक्की की बागडोर आपकी पत्नी के हाथ में होगी। आप औरत की इज्जत करेंगे इसका अच्छा फल मिलेगा। विवाह के बाद काफी धन मिलेगा। स्त्री का पूरा सुख मिलेगा। आप सदैव ही दूसरों की सेवा हेतु तत्पर रहेंगे। आप जवानी में अपना समय ऐशो आराम से बिताएंगे। आपके मन में वहम समाया हुआ रहेगा। आप चित्रकला प्रिय अथवा गायन प्रिय होंगे। आप धर्माचरण करके शुभ प्रभाव को अपनाएंगे। आपको खेती-बाड़ी का लाभ भी मिलेगा। आप बेरहम होंगे फिर भी आपका मान-सम्मान बरकरार रहेगा। आपके पास बहुत जायदाद होगी।

यदि आपने पत्नी से अच्छे संबंध न रखे या पत्नी की सेहत खराब के समय देखभाल न की, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप बूढ़े होने पर दूसरे लोगों को अपने जीवन में भुगती बातों को सुना कर समय बर्बाद करेंगे। पत्नी बीमार रहा करेगी तो आपका भाग्य अच्छा नहीं रहेगा। कन्या संतान का आपके जीवन पर बुरा प्रभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. पत्नी के स्वास्थ्य का विघेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. गाय दान करें।
2. देसी घी का दीपक जलावें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि पांचवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से मकान बनवाना संतान के लिए हानिकारक है। यदि मकान बन जाए तो 48 वर्ष तक आपको संतान सुख नहीं होगा या संतान से संबंधित मुसीबत हो सकती है। आपकी संतान मकान बनाये तो लाभ रहेगा। आपका स्वभाव धर्म देवता के समान है और स्वभाव भोले बादशाह के जैसा होगा अर्थात् आप दिखने में भोले-भाले होंगे लेकिन काम करने में चतुर होंगे। आपकी आर्थिक हालात सुधरेगी। अभिमान और अक्ल की बारीकी से अपनी जिंदगी को कामयाब बनाएंगे। आपकी किस्मत अच्छी होगी। आप अपनी मर्जी के मालिक होंगे। आप काम-काज बड़ी सफाई से करेंगे। आपकी प्रबंध व्यवस्था अच्छी होगी। अधिक संतान सुख की संभावना कम है। आप

राजकीय सेवा में हैं तो आपको राज्य पक्ष से लाभ होगा। आप तकनीकी कामों से संबद्ध रहेंगे इसलिए आपकी पूछ हर जगह होगी। आपकी तरक्की भी होगी। कोई जमीन से या आकस्मिक धन प्राप्ति के भी योग बनेंगे।

यदि आपने 48 वर्ष से पहले मकान बनाया, भाई-बंधुओं आदि से चोरी-ठगी की, आपके शरीर पर अधिक बाल हुए मांस-मदिरा का सेवन किया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से पेट में खराबी, विद्या में रुकावट, शराब-मछली का सेवन करने से खानदान नष्ट हो जाने का भय होता है। आपको सांप से डंक का भय है। आपकी आर्थिक हालत पर बुरा असर पड़ सकता है। 48 वर्ष की आयु तक पुत्र या मकान दोनों में से एक का सुख मिलेगा। विवाह एक से अधिक होने पर भी संतान सुख नहीं मिलेगा या बच्चा गोद लेना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. शराब-मांस-मछली का सेवन न करें।
2. 48 वर्ष आयु से पहले मकान न बनावें।

उपाय :
1. सोना-केसर पास रखें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप शील संपन्न, अच्छे स्वभाव के, शूरवीर, साहसी होंगे। आपका हर काम सराहनीय होगा। आपके उच्च विचार होंगे। आपको सबसे यथोचित सम्मान मिलेगा। आप बड़े कारखाने के मालिक होकर या उच्च पद पर रह कर बहुत बड़ी संपत्ति कमाएंगे। आपके जीवन में राजयोग रहेगा और अच्छा सुख प्राप्त होने की उम्मीद है। आप निश्चित ही बड़े व्यापारी और धनवान होंगे। फिजूल के खर्चों से सावधान रहें। धन-दौलत का अच्छा असर रहेगा। सिर के बाल जल्दी सफेद हो जाएंगे मगर उनको डाई न करें। आपका चरित्र बहुत ऊंचा होगा।

यदि आपने अपना सिर नंगा रखा अर्थात् सिर पर टोपी/पगड़ी न रखी, मौके के आफिसर से झगड़ा किया, अपने परिवार को तोड़ा तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से माता-पिता को कष्ट की आशंका है। शरीर में कोई विकार उत्पन्न होगा। धन-संपत्ति का नुकसान हो सकता है। आपमें कोई न कोई व्यसन विद्यमान हो सकता है, सावधान रहें। आप अपने हाथों संपत्ति को बेच भी सकते हैं। आपकी तंगदिली से दूसरों के साथ बैर पैदा हो सकता है। परिवार के लोगों से अनबन रहेगी। माता के लिए कष्टकारक समय भी आ सकता है। आंखों पर बुरा असर पड़ने की आशंका है। सिर दर्द से आपकी परेशानी बढ़ सकती है। कोई काला आदमी आपकी धन-संपत्ति का नाश कर

सकता है। ऊंची जगह से गिरने का भय, सरकारी अधिकारी से झगड़ा करने पर जुर्माने आदि का भय, बीमारी पर धन का खर्च हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सिर पर सूर्य की रोशनी न पड़े अर्थात् नंगा सिर न रखें।
2. मौके के अधिकारी से झगड़ा न करें।

उपाय :
1. सिर पर सफेद टोपी या शरबती पगड़ी टोपी जरूर पहनें।
2. जौ अंधेरी जगह में बोझ के नीचे दबायें।
3. मीठा भोजन अंधों को बांटें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के चाथे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप पूर्ण आस्तिक होंगे। हर काम धीरज के साथ करेंगे। सभी के साथ आपका व्यवहार सौहार्दपूर्ण रहेगा। आप आशावान, गुरु और पिता की सेवा में संलग्न, चरित्रवान और जो मिले उसी में संतोष प्राप्त करने वाले होंगे। आपकी कन्या भाग्यवान और आपके लिए लक्ष्मी स्वरूपा होगी। कन्या के जन्म के बाद आपका घर धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाएगा। आपको पिता का लम्बे समय तक सुख मिलेगा। आप पिता और गुरु की भक्ति करने वाले होंगे। आपको जायदाद संबंधी कानूनी समस्या खड़ी हो सकती है। आप स्वयं एवं आपके पुत्र दीर्घायु होंगे। आपको अच्छा भवन और उत्तम वाहन सुख प्राप्त होगा।

यदि आपने कुत्ते को मारा या किसी दूसरे से मरवाया, कुत्ता पानी में गिराया, कुल पुरोहित से झगड़ा किया या उससे नाता तोड़ा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो देर से संतान पैदा होगी या संतान सुख में कमी बताता है। पुत्र संतान की अपेक्षा कन्या संतान अधिक होंगी, ऐसी आशंका है। पुत्र जन्म के बाद माता को कष्ट की आशंका है। मधुमेह रोग की आशंका है। रीढ़ की हड्डी, पेशाब की बिमारी होगी ऐसी आशंका है। दुर्घटना या ऊपर से गिरने का भय है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. कुत्ते को चोट न मारें।
2. माता से दूर न रहें।

उपाय :
1. चने की दाल, केसर धर्मस्थान में देवें।

2. कुल गुरु या कुल पुरोहित का आशीर्वाद प्राप्त करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में एकादश में और राहु मीन राशि द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में लग्न में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तम भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त करेंगे। जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। लग्न का गुरु नवीन विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। इस समय आपका भाग्य भी आपके अनुकूल है। इसलिए कम समय में सफलता प्राप्त कर सकते है।

द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपके कार्यों में कुछ गुप्त शत्रुओ द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु आप अपने विवेक से उसे भी अनुकूल बना लेंगे। फिर भी आपको किसी पर विश्वास किये बिना अपना कार्य करते रहना चाहिए। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अप्रैल के बाद सफलता प्राप्त होगी। पदोन्नति के साथ-साथ मान सम्मान में भी वृद्धि होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान का शनि आपको भाईयों से लाभ प्राप्त करा सकता है। अप्रैल के बाद आपको रत्न आभूशण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपके रुका हुआ धन मिल सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य के चलते धन का व्यय हो सकता है।

द्वादशस्थ राहु के कारण आप निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। इस वर्ष अचानक कोई बड़ा निर्णय न लें। सभी कार्य योजनाबद्ध तरीके से संपन्न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा।

अप्रैल के बाद परिवार में सदस्य संख्या में बढ़ोत्तरी हो सकती है। यह वृद्धि विवाह या जन्म से होगी। भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। समाज में आपका पराक्रम बढ़ेगा। षष्ठस्थ केतु के प्रभाव से आपके मामा मामी के साथ समन्वय मधुर रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। गर्भाधान के लिए समय उपयुक्त है।

यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त होगी। आपको अपने बच्चों पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में सदैव अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। आपकी सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होगी।

खान-पान पर विशेष ध्यान दें एवं अपनी दिनचर्या सुनियोजित करें। मौसम जनित रोगों से स्वास्थ्य पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। द्वादशस्थ राहु के कारण काफी समय यात्राओं में व्यतीत होगा, फिर भी आपके स्वास्थ्य पर उसका विशेष नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। गुरू ग्रह के गोचर के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। रोजगार के लिए अप्रैल के बाद समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से विदेश यात्रा के भी योग बन रहे हैं।

यात्रा पर जाते समय स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। जिसके प्रभाव से आपकी पूजा पाठ के प्रति रूचि बढ़ेगी। आप गुरू मन्त्र लेकर साधना कर सकते है।

- दुर्गा बीसा कवच अपने गले के धारण करें।
- नित्य प्रति दुर्गा कवच का पाठ करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य प्रति घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डाल कर खिलाएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्णरूपेण संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। साथ ही घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति प क्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में भी अभिवृद्धि होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप यथोचित सम्मान तथा पूजन करेंगे। समाज में इस समय आपके यश की वृद्धि होगी एवं भाग्योदय सम्बंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा एवं यात्रा से आप पूर्ण लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके सम्बन्धों में मधुरता रहेगी तथा सर्वत्र माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। जिसके कारण आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं या किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानीपूर्वक कार्यो को सम्पन्न करें।

फरवरी 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे एवं अशुभ फल न्यून ही घटित होंगे। इसके प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे एवं वे सभी आपसे संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उनसे सम्बन्ध भी मधुर रहेंगे।आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा उनकी सेवा एवं पूजन के कार्य को आप अवश्य सम्पन्न करेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करके मानसिक शान्ति एवं प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभ फलदायक ही सिद्ध होगा।

साथ ही यदा कदा अशुभ फलों के प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा को आंच आएगी एवं आप उसके लिए पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा धन हानि का योग भी बनता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

मार्च 2024 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्व व्यतीत करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आप पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करेंगे। आपका स्वास्थ्य इस मास अच्छा रहेगा तथा किसी भी प्रकार से शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता नहीं रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रूचि बढ़ेगी तथा मित्र वर्ग से सम्बन्धों में मधुरता रहेगी एवं उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही वांछित द्रव्य पदार्थों का उपभोग करके आप प्रसन्नता को प्राप्त करेंगेत संतति पक्ष से भी आपको शुभ फल ही प्राप्त होंगे तथा किसी प्रकार से चिन्ता नहीं रहेगी। मित्रों तथा सम्बन्धियों में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित होगी। फलतः आप आनंदपूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

इसके साथ ही आप पुत्र एवं स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा विद्याध्ययन में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या द्रव्य आदि की भी आपको उपलब्धि हो सकती है। इस प्रकार आप शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

अप्रैल 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप दुष्ट मनुष्यों की संगति को प्राप्त करेंगे तथा व्यय भी काफी होगा जिससे आर्थिक एवं मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति होगी। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे। काफी परिश्रम के बाद भी आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प सफलता ही प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों को आप उचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। आपके मित्रों एवं सम्बन्धियों से तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे तथा नौकरी या व्यापारिक कार्यों में भी अनावश्यक रूप से बाधाएं या रूकावटें उत्पन्न होंगी। शत्रु पक्ष से भी आपके मन में भय तथा चिन्ता रहेगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः समय समय पर मन से बेचैनी भी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त आदि से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगे तथा रक्तविकार का भी योग बनता है अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हो सकें तथा शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

मई 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुखदायक एवं आनंदवर्द्धक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं का नाश होगा तथा लाभमार्ग भी नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आर्थिक रूप से आप पूर्ण सुदृढ़ रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त

आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे।साथ ही समाजिक जनों से आप पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। यह मास आपकी भाग्योन्नति में भी सहायक रहेगा तथा कई ऐसे शुभ कार्य जो समय से सिद्ध न हो रहे हों इस समय सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्रों से संबन्धों में मधुरता बढ़ेगी तथा सांसारिक कार्यों में पूर्ण सफलता मिलेगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे तथा इनसे आप अनुकूल सहयोग होता रहेगा।

साथ ही आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा सुख पूर्वक मास को व्यतीत करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

जून 2024 के लिए फलादेश

इस मास को सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।साथ ही आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगे। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धुओं एवं मित्र वर्ग से आप आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा सहायता भी अर्जित करेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न का भी अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस समय शत्रु वर्ग भी आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा भी धनार्जन होगा। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही आप स्त्री का पूर्ण सुख भी प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी उचित सहयोग तथा सहायता मिलती रहेगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाजिक जनों से भी पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

जुलाई 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम रहेगा तथा इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपको यश तथा सम्मान की भी प्रप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा तथा सत्कार की भावना उत्पन्न होगी। आप अन्य जनों की भलाई के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसे सम्पन्न करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करके यश की प्रप्ति करेंगे। साथ ही आपकी मानप्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस मास भाइयों से आप पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही अन्य शुभ फलों के प्रभाव में भी नित्य वृद्धि होती रहेगी। इससे शरीर में आरोग्यता मन में संतुष्टि एवं बुद्धि के प्रभाव में वृद्धि होगी। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक होगा एवं मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न रहेंगे।

अगस्त 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आपके लिए मिलेजुले शुभाशुभ फल होंगे।अतः शारीरिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।साथ ही दुश्मनों से भी आपको भय तथा चिन्ता का वातावरण प्राप्त होगा फलतः मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे। इस समय पारिवारिक जनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से आपसी सम्बन्धों में तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास हानि या मंदी आ सकती है साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है या संबधित कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य लोगों से भी आपके संबन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। अतः सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिकत शरीर में रोग तथा धन की हानि होने की भी सम्भावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे जिससे आप उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगे एवं कार्यों में किंचित उन्नति का भी आभास होगा। आप इस समय दूर समीप की यात्रा भी करेंगे एवं नवीन वस्त्रादि की भी प्राप्ति होगी। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

सितम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का अभिवर्द्धन होगा तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही संतति पक्ष से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी हो सकता है। इस मास में आपका प्रभुत्व बढ़ेगा तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस माह में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों की भी प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों का आप पूर्ण सम्मान करेंगे तथा श्रद्धापूर्वक उनका पूजन भी केरेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल सिद्ध होंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी एवं समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी जिससे आप मन से सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य कई प्रकार से भी आवश्यक सुखों को प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी। इस प्रकार आप इस मास को पूर्ण सुख शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

अक्तूबर 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ एवं दुर्बलता की अनुभूति करेंगे साथ ही शत्रुपक्ष से भी अनावश्यक भय एवं चिन्ता

का वातावरण रहेगा जिससे मन में अशान्ति उत्पन्न होगी। इस समय आपके घर में या अन्यत्र चोरी आदि भी हो सकती है। अतः आपको चोरों से सावधान रहना चाहिए। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का उलंघन न करें अन्यथा आप दंडित भी हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे साथ ही धन का भी अनावश्यक व्यय होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी इस समय सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। सम्बन्धियों एवं मित्रों से भी आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा समाज से उपेक्षा प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त आशाओं की पूर्ति में भी आप असफल ही रहेंगे।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे जिससे आप स्त्री से सुखी रहेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से अपने प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा एवं यत्नपूर्वक आप इसका अनुपालन करेंगे। इस प्रकार आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

नवम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ एवं परेशानी उत्पन्न करने वाला होगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं की ओर से भी नित्य चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। आपके उत्साह में भी इस मास अल्पता रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा।जिससे आर्थिक परेशानी हो सकती है।साथ ही आप शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे तथा मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। स्वबन्धुजनों से भी आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा एवं तनाव का भाव रहेगा जिससे मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। अतः मानसिक तनाव से आप ग्रस्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से विवाद या संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय अनुसार चलने का प्रयत्न करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी तथा पित्तजनित दोषों से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त सम्बन्धी विकार से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा दुर्घटना से भी बचें। इस मास में अग्नि से भी किसी प्रकार की हानि हो सकती है।अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक रहेगा।

दिसम्बर 2024 के लिए फलादेश

समान्य रूप से इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार से चोरी आदि की घटना भी घटित हो सकती है।साथ ही आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से परेशानी का अनुभव करेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में अल्पता आएगी तथा स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। इससे शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। साथ ही आप दूर या

समीप की यात्रा भी कर सकते हैं। सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे एवं मुकद्दमे आदि के कार्य में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी पूर्वक ऐसे समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे।अतः स्त्री तथा पुत्र संतति से सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी एवं अन्य प्रकार से भी शान्ति की अनुभूति करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि द्वादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि चतुर्थ स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा कार्य व्यवसाय में अच्छा लाभ होगा। व्यापार में बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर सफलता प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च के बाद द्वादस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे।

आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। इस समय के अंतराल में कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो 14 मई के बाद लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगा जिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। रत्न आभुषण इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का योग बन रहा है। 30 मई के बाद राहु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है उस समय आपको अचानक धन लाभ होगा जिससे आपको पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना होने से सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 14 मई के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे और समाजिक उत्थान के लिए कोई संस्था का संचालन भी कर सकते है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगा। 14 मई के बाद दूसरी संतान के लिए समय बहुत उत्तम है।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं। तो गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में बच्चों के साथ भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं।

समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इन सबका आपकी सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

29 मार्च से समय बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बेरोजगार लोगों को रोजगार मिलने का प्रबल योग बन रहा है। गुरु के गोचर के बाद सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक मेहनत करनी पड़ेगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधनी बहुत जरूरी है, क्योंकि 29 मार्च के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 14 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि सम्पन्न करेंगे एवं तीर्थ यात्रा कर

पुण्यार्जन भी करेंगे।

- शनिवार के दिन सुबह-सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ऊँ गं गणपतये नमः मन्त्र का पाठ करें।
- नित्य प्रति हनुमान चालीस का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन लाभ अर्जित करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे। इस मास में आप घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं। सन्तति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे तथा इनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन एवं सम्मान करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। इस मास में समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की प्रबलता रहेगी एवं दूर समीप की आप कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न करेंगे। मित्र तथा बन्धुवर्ग से इस समय सम्बन्धों में घनिष्ठता होगी। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

इसके साथ ही इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा वातोत्पन्न रोगों से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि का भी भय होगा जिससे हानि की आशंका बनी रहेगी। अतः संयम एवं सर्तकता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके उच्चाधिकारी या वरिष्ठ सहयोगी आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे फलतः आप कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति प्राप्त करेंगे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्योंको भी सम्पन्न करेंगे साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सिद्ध होंगे। फलतः आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों में आपकी श्रद्धा होगी तथा इनकी पूजा एवं सेवा में भी आप तत्पर रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। इसके साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभ योग बनते रहेंगे। इस समय आप नवीन स्थान या गृह आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त पिछली असफल आशाओं को पूर्ण करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप पुत्र एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी प्राप्ति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ, महत्वपूर्ण एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा जिसमें आपको अपने असफल कार्यों में भी सफलता प्राप्त होगी।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ होगा तथा सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपका स्वास्थ भी उत्तम रहेगा तथा मन से भी पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। आपको इस मास वांछित पदार्थों की भी प्राप्ति होगी तथा इनका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। समाज तथा समाजिक जनों से आप पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे साथ ही विगत रूके हुए कार्यों में भी आप इच्छित सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

इसके साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार का योग भी बनता है। अतः दुर्घटना आदि से भी सावधान रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी धन हानि होने की सम्भावना है अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लए मध्यम रहेगा अर्थात शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे अतः आप का व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति भी करेंगे। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी पूर्ण रूप से ठीक नहीं रहेगा इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य पराक्रम एवं परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। मित्रों एवं सम्बन्धियों के मध्य आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा उनसे उचित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में भी इस मास में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा शत्रुओं से नित्य भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। साथ ही मन से भी अशान्त रहेंगे एवं बैचेनी की अनुभूति करेंगे।

इसके साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं उससे आपको अपेक्षित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा पूर्ण रूपेण धन लाभ तथा सुख प्राप्त करेंगे। साथ ही आप समाज में कीर्ति भी प्राप्त कर सकेंगे।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन में सन्तुष्टि का भाव विद्यमान रहेगा। आपके पराक्रम में

इस समय पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग को परास्त करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही आपके लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे फलतः इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे। इस मास आप भाग्योन्नति सम्बन्धी कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा ऐसे महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे जिनको आप काफी समय से सिद्ध करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके दृढ़ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा सबसे आप यथोचित मान सम्मान अर्जित करेंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफलता अर्जित करेंगे राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण प्रतिष्ठा तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ रहेगा।

जून 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने उत्साह द्वारा धन को अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप अपने बन्धुओं तथा मित्रों के मध्य उचित प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। साथ ही मिष्ठानोपभोग भी आप अधिक मात्रा में करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं उनको पराजित करने में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं व्यापारादि कार्यों में भी आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी अभिवृद्धि होगी तथा सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में आपको सफलता मिलेगी।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों के मध्य यशार्जन करने में भी आप समर्थ रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। साथ ही अन्य जनों का परोपकार करने के लिए भी आप उद्यत रहेंगे। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा किसी भी प्रकार से

आप शारीरिक या मानसिक कष्ट प्राप्त नहीं करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनके आश्रय से समाज में ख्याति अर्जित करेंगे।मित्र एवं भाइयों से इस मास आपको उचित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इस समय आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं जिससे आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र तथा द्रव्यों को भी आप प्राप्त करेंगे या इनसे युक्त होंगे। अतः यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं आनंददायक रहेगा।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शत्रु बलवान रहेंगे जिसके कारण आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही पारिवारिक जनों से सम्बन्धों में भी तनाव का वातावरण रहेगा जिससे परिवार में अशान्ति रहेगी। अतः मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या अजीविका संबधी कार्यों में मंदी आएगी या आपका कोई कार्य छूट भी सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक जनों से आपका विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का योग भी बनता है एवं शरीर में कोई रोग भी हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री का आपको पूर्ण सुख मिलेगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा बुद्धि बल से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने के लिए उत्सुक होंगे।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस मास में आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अपनी बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र सुख भी आपको प्राप्त होगा। आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे। इस मास आपके शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इनका आप यथोचित सम्मान एवं पूजन करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप यथोचित लाभ अर्जित करने में भी सफल सिद्ध होंगे एवं समाज से पूर्ण मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।अतः मानसिक रूप से पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से आवश्यक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में भी सफल रहेंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक कार्य क्रम का आयोजन करने में भी आप प्रवृत होंगे।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। आपके शत्रु इस समय अधिक प्रबल होंगे फलतः शत्रु पक्ष से भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है ।अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। नौकरी या व्यवसाय में अपने उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित या जुर्माना प्राप्त कर सकते हैं। इस मास आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके साथ ही आप किसी कठोर कार्य को भी सम्पन्न कर सकते हैं। जिसका प्रभाव आपकी प्रतिष्ठा पर पड़ेगा तथा इससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। आपकी मित्रों तथा सम्बन्धियों से भी इस समय सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा आशाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में भी असमर्थ रहेंगे।

साथ ही इस समय आप पित्तादि दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रूधिर विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः इस मास शारीरिक सुरक्षा का भी आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए जिससे अल्प मात्रा में ही कष्ट हो।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री या बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा आपके बन्धु वर्ग तथा स्त्री को किसी प्रकार का कष्ट होगा। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आपको नित्य चिन्ता तथा भय बना रहेगा। आपमें इस मास उत्साह की अल्पता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी तथा अनावश्यक रूप से धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप कष्टानुभुति प्राप्त करेंगे आपके मन में लालच के भाव की भी वृद्धि होगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। बन्धु जनों से आपके सम्बन्धों में तनाव व्याप्त होगा तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आपको मानसिक रूप से असन्तुष्टि रहेगी। साथ ही अन्य पारिवारिक या समाजिक जनों से भी वादविवाद होते रहेंगे।

लेकिन इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इससे आपको स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा इनसे आप पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों तथा द्रव्य आदि को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। अतः शत्रु पक्ष से आप चिन्तित रहेंगे तथा ये आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः चोरों से आपको सावधान रहना चाहिए। इस महीने में आपका अनावश्यक धन का व्यय होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे फलतः आपकी शारीरिक शक्ति का ह्रास होगा। साथ ही इस महीने आप घर से दूर किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं। सांसारिक कार्यों में भी आपको कष्ट होगा तथा मुकद्दमे आदि में भी आपके धन का व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी एसे कार्य को भी आप सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी मान प्रतिष्ठा को आघात पहुचेगा। इस समय अग्नि के द्वारा भी आप किसी प्रकार से हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वादशभाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि सेवर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नही होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए समय कुछ अच्छा हो रहा है। उनको अपने अधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण भी अनुकूल स्थान पर हो सकता है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में कुछ सफलता मिल सकती है। नवम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। जिसके कारण बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा जिसके फलस्वरूप आप कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि सेयह वर्ष सामान्यरहेगा।एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। परन्तु द्वादश स्थान केशनि अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। शारीरिक ब्याधियां दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

2 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको भुमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की संभावना बन रही है।31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आप अपने बच्चे की शिक्षा पर धने खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम नहींरहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा योग नहीं बना रही है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना में कमी आ सकती है। सामाजिक रूप से समय अच्छा रहेगा।तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा।

सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून से चतुर्थ स्थान मेंगुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे।आपको मित्रोंका भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 31 अक्टूबर के बाद संतान पक्ष के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचमस्थ केतु के प्रभाव से संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु लगातार परिश्रम करना पड़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा है।यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा हैयह समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा।द्वादशस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार चढाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ रह सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में अनुशासित भोजन अपनायें व लापरवाही न करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होनाशुरू हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों कीअध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावनासफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिन जातकों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 31 अक्टूबर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथलम्बी यात्राएं भी होंगी।

02 जून के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकीविदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ सकता है और घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वादश में आजाएंगे। मकर राशि के राहु दशम भाव में करेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप लापरवाह, आलसी व बीमार हो सकते हैं जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ ऐसे कार्य मिल सकते हैं जिससे आपको किंचित लाभ प्राप्त हो सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति या स्थानान्तरण होने की संभावना है।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से आप लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे परन्तु 26 नवम्बर के बाद गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप के कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे, जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। अतः उस समय के अंतराल में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केशनि आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यो से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें। पैसा कमाने के लिए शॉर्ट-कट न अपनाए नहीं तो नुकसान हो सकता है।

26 जून के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन रहा है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ पैसे मिल सकते हैं, जिससे आपको छोटे-मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें भी आपका धन खर्च हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक-दूसरे प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा। सब लोगों के अंदर परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होती रहेगी। दशमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपका समन्वय मधुर होगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। समाज में आपकी पद प्रतिष्ठ में वृद्धि होगी। 26 नवम्बर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा, उस समय भी आप अपने बौद्धिक बल से घरेलू वातावरण को अनुकूल करने की नाकाम कोशिश करेंगे।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रति सन्तान की रूचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

26 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। संतान के इच्छुक दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है। यह समय आपके बच्चों के लिए भी अच्छा है। वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। विवाह योग्य सन्तान का विवाह हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

26 जून के बाद आपका समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए

आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अध्ययन के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी परन्तु अस्थिरता की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

विद्यार्थियों के लिए 26 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपको उचित सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थ शनिपर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से दान, पुण्य, भण्डारा इत्यादि भी करेंगे। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी और आप अध्यात्मिक शक्ति को प्रबल करने के लिए मन्त्र, पाठ एवं यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करेंएवं शनिवार को काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।बड़े-बुजुर्गों की सेवा करें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य बना रहेगा जिससे व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने स्थिति में कुछ सुधार होगा। नौकरी के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा हैं। अतः इस समय के अंतराल में आत्मविश्वास बनाए रखें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा एवं आप अपने साझेदार से भी असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। बड़े भाई या पिता से भी धन लाभ हो सकता है। रुके या फंसे हुए पैसे भी मिल सकते हैं। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

24 जुलाई के बाद फिर से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए अभी से पैसा बचाना शुरु कर दें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें क्योंकि वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सदस्य एक दूसरे का सहयोग करेंगे। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। 28 फरवरी के बाद पुत्र व बड़े भाईयों का सहयोग

मिलेगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय है।

24 जुलाई के बाद सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। उस समय अपने विवेक से काम लें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत में ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती हैं। आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु 28 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए समय काफी अनुकूल है। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह हो जायेगा ।

24 जुलाई के बाद संतान की शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ नहीं है। उसके खान पान पर ध्यान दें नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ न कुछ परेशानियां होती रहेंगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी व तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। 28 फरवरी के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होगी। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। लग्नस्थ शनि एवं छठे स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से परेशान रह सकते हैं। कभी-कभी बीमार नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। शारीरिक व्याधिओं को दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यवसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को

अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगारों जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्राएं होंगी। 28 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक या तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

24 जुलाई के बाद अचानक यात्राएं हो सकती हैं। यात्रा के दौरान सावधानी बहुत जरूरी है। शनि ग्रह का गोचर शारीरिक कष्ट दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वन्दता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ दान पुण्य कम ही कर पाएंगे। 28 फरवरी के बाद पंचम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। मन्त्र जाप या साधना (ध्यान) करेंगे। गुरु के दिये गये उपदेशो का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, सन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। या शनि मन्त्र का जाप करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी नये कार्य में भाग्य आजमा सकते हैं। अचानक बहुत ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ प्रतिस्पर्धी अड़चनें पैदा करने की कोशिश करेंगे परन्तु षष्ठस्थ मंगल के कारण आप उन पर नियन्त्रण पा लेंगे। मार्च से अगस्त तक समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको धोखा मिल सकता है।

05 अक्टूबर से आपका समय फिर से अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों के आय के स्रोत खुलेंगे। उच्च अधिकारियों या बड़े लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा जिससे आप कार्यों में बहुत उन्नति करेंगे। काम-काज में पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आर्थिक उन्नति होगी। इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। 29 मार्च के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में आपका व्यय होगा। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर अंकुश लगाएं नहीं तो अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

25 अगस्त से गुरु का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार में किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह होगा जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद आपका मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

08 अगस्त के बाद द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसे भी अनुकूल बना लेंगे। 05 अक्टूबर के बाद इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपकी संतान की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति करेंगे परन्तु पंचम भाव पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। आपका दूसरा बच्चा विवाह के है तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद फिर अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी परन्तु लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता हैं। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आपके अंदर शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी। 05 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। अचानक आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा रहेगा। उनको अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें।

गुरु ग्रह का गोचर 25 अगस्त को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ-साथ छोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 29 मार्च के बाद विदेश यात्राए होंगी।

08 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 29 मार्च के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभाविता हो रहा है। 25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व शनि मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि प्रथम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं अष्टम में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

आजीविका के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान के शनि आपको आलसी बना सकते हैं। कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। व्यापार में हानि या किसी से धोखा मिल सकता है। अतः इस बात का ध्यान रखें व सतर्क रहें और किसी पर भी बहुत ज्यादा विश्वास न करें। अपने आत्मविश्वास को बनाए रखें।

1 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको अच्छा लाभ मिलेगा। इष्ट मित्रों या सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। साझेदारी के लिए यह समय अनुकूल है। कानून से जुड़े लोग जैसे वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। वरिष्ठ अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे फिर भी बड़े अधिकारियों से निश्चित दूरी बनाए रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। धनागम में कमी व मानसिक कष्ट भी हो सकता है। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। लग्न स्थान के शनि शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय करा सकते हैं। अतः अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहें। 17 अप्रैल के बाद आपके संचित धन में भी कमी आ सकती है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नही तो आपका पैसा फंस सकता है, क्योंकि अष्टम स्थान में राहु-गुरु चण्डाल योग बन रहे हैं।

01 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने से आपके आय स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यापार में उन्नति व उम्मीद से अधिक लाभ की संभावनाएं बन रही हैं। आपको मित्र व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर पैसा खर्च हो सकता है। नई संपत्ति क्रय-विक्रय करने के लिए अभी समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष की शुरुआत पारिवारिक अनुकूलता के लिए शुभ नहीं रहेगी। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा। आपके माता-पिता का

स्वास्थ्य अच्छा नही रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध खराब हो सकते हैं। ऐसी विपरीत स्थिति में आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे जिससे जिससे समाज में आपका कद और बढ़ेगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

01 मई से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपकी संतान के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपकी संतान अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेगी। वे परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे आपकी दूसरी सन्तान के लिए यह समय बहुत शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करें व खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें।

अप्रैल के बाद तकनीकी शिक्षा व व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आपकी सारी यात्राएं अकस्मात् ही होंगी।

अप्रैल के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे। लग्नस्थ शनि एवं नवमस्थ राहु आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित कर सकते हैं। पूर्व से निर्धारित कोई धार्मिक कार्य करना चाहते हैं तो वह भी निरस्त हो सकता है। 01 मई के बाद सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को राहु तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह साल बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर अथक प्रयास करने की आवश्यकता है। क्योंकि इस वर्ष भाग्य आपका साथ नहीं देगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

वर्ष के उतरार्द्ध में कुछ गलत फहमियों के कारण आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालाँकि 15 अक्टूबर के बाद आपका ग्रह गोचर अनुकूल हो रहा है। आपके काम करने का तरीका सबसे अलग है इसलिए यह आपके व्यक्तित्व को सबसे जुदा करता है और आपके इस तरीके से कई अधिकारी प्रभावित है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। यह साल जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें। आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

जून के बाद पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसे खर्च हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आप अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं। जून से सितम्बर तक का समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। सितम्बर के बाद घरेलू वातावरण में अनुकूलता आना शुरु हो जाएगी।

15 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य में

उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से रहना चाहिए अन्यथा गर्भपात भी हो सकता है।

18 फरवरी के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। जून के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने बच्चों पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी। आप स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ नहीं है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। 18 फरवरी के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में कोई अड़चन नहीं आएगी। अध्ययन कार्य में आपकी रूचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 15 अक्टूबर से आप गुप्त विद्या ओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के शुरु में आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 18 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे। कुछ समय के लिए प्रवास भी कर सकते हैं। 15 अक्टूबर के बाद विदेश जाने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होगा। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा। जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत बढ़िया हो रहा है।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को काला कम्बल दान करे।
- हनुमान चालीसा या दुर्गा कवच का प्रत्येक दिन पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं द्वितीय भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं तृतीय में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशिएवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरु का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तसस्थ राहु एवं द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता हैपरन्तु आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

12 अगस्त से आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। 23 अक्तूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों कापदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि सेवर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर ही उसमें निवेश करें क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छा नहीं होती। 5 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन किया हो तो इस समय के अंतराल में आपको ऋण मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधाओं पर भी अधिक खर्च करेंगे।

23 अक्तूबर से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा।

31 मई से समय आपके छोटे भाई-बहनों के लिए काफी शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग मिलेगा। 12 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि

होगी। गुरु की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। पिताजी के लिए यह समय लाभप्रद सिद्ध होगा। संतान के विवाह आदि का भी शुभ योग बना हुआ है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों कीशिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

आपकी सन्तान के विवाह का पूर्ण योग बन रहा है। भाग्योदय तथा धर्म कार्यों में रुचि के साथ-साथ यात्राओं का योग बना हुआ है। आप अपनी सन्तान के सौभाग्य व सुख से प्रसन्नता का अनुभव करेंगे।

स्वास्थ्य

द्वितीस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं क्योंकि लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगी जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा।शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

12 अगस्त से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आप अतिसक्रिय बने रहेंगे। सुबह-शाम के सैर-सपाटे या नियमित अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा। अभ्यास से आपके अन्दर की ऊर्जा का प्रवाह होगा और दूसरें कार्यों में पूरी तरह से ध्यान केन्द्रित करने में सहज महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मई के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

सप्तमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय प्रतिकूल रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी यात्राएं होती रहेंगी। 05 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

31 मई के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकीविदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक व्यक्तियों कीउन्नति कारक यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थगुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 5 मार्च के बाद घरेलू सुख शान्ति के लिए विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। 31 अगस्त के बाद आप दान, पुण्य करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष श्रेष्ठमत रहेगा। 'जो चाहना वह पाना' वाली कहावत आप पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होगी। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी। साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए 18 मार्च से पहले का समय बहुत ही शुभ है।

आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय-विक्रय, या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष भर आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी बनाएंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्नाभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं कि प्राप्ति होगी। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए उत्तम हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंग। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक माहौल काफी अच्छा रहेगा। आप अपनी घरेलू जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। 5 मार्च से आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। अविवाहित व्यक्तियों के लिए विवाह के संकेत हैं। विवाहित व्यक्तियों हेतु संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी जिससे आपका आत्म-सम्मान बढ़ेगा।

आपके भाई-बहनो के लिए समय बहुत शुभ है। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि

होगी। मातुल पक्ष के लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य भी संपन्न होते रहेंगे। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आपको उनके ऊपर अभिमान होगा। उनकी कामयाबी से समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपके अन्दर दृढ़ता और सशक्त इच्छाशक्ति जाग्रत होगी। आपको किसी बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है।

स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। संतुलित आहार के साथ-साथ नियमित व्यायाम/योगा आदि भी करते रहें जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष विद्यार्थी व प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 5 मार्च के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए कोई नया स्रोतों का सृजन करेंगे।

प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले जातकों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है।

द्वादश स्थान पर शनि एवं राहु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- लक्ष्मी जी के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक रूप से अत्यधिक उन्नतिकारक रहेगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति करेंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। मार्च के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

वर्ष के उतरार्द्ध में राहु एवं शनि ग्रह के प्रतिकूल होने से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगी। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण आय के स्रोत बढ़ेंगे, जिससे धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल होंगे। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन देन के मामले में सावधान रहें। पैसे के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। संचित धन में कमी आ सकती है। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। नहीं तो धन हानि का योग बन रहा है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से श्रेष्ठ रहेगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। माता पिता के साथ आपके संबंध बहुत ही मधुर रहेंगे। मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि पारिवारिक शुभता के लिए बहुत ही अच्छी है। धर्म पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा व उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी।

13 जुलाई से द्वितीय स्थान के शनि आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न करेंगे। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त रह

सकते हैं। अष्टम स्थान का राहु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पंचमस्थ राहु के कारण आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। परन्तु मार्च के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय और ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं करनी चाहिए। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। तेल, मसाला व बाहरी भोजन का परित्याग करें। संतुलित आहार के साथ साथ आप नियमित व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। छठे स्थान का राहु एवं एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं मे सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलैक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप शत्रुओं को परास्त करने में सफल रहेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रतिकूल होने कारण सफलता के मार्ग प्रभावित होंगे। विद्यार्थिओं की शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर के पास भी हो सकता है। आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

इस यात्रा के अंतराल में पुत्र या परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः यात्रा करते समय सावधानी बहुत जरूरी है। द्वादश स्थान का गुरु आपको विदेश यात्रा भी करा सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा, जिससे निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंग जैसे- गरीबों को खाना खिलाना, भिक्षुओं को दान देना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आदि आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- आठ मुखी रूद्राक्ष धारण करें जिससे राहु का नकारात्मक प्रभाव समाप्त होगा।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि चतुर्थ भाव में और सिंह राशि का राहु पंचम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल व्यवसायियों के लिए मिला-जुला रहने वाला है। वर्ष के प्रारम्भ में गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। विश्वास पात्र लोगों के साथ कार्य करना लाभप्रद रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 5 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके कार्यों में कुछ सुधार होगा।

अतः इस समय के अंतराल में एकाग्रचित होकर व्यापार के विस्तार और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। बेकार के कुछ मुद्दे आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। यह सदा सत्य है कि रात के बाद दिन जरूर होता है, इसलिए अपने प्रयासों को जारी रखें, सफलता जरूर मिलेगी। कोई कार्य प्रारम्भ करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु व्यय अधिक करा सकता है। अतः बहुत ही सोच विचार कर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। आयात-निर्यात करने वालों को बहुत उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। नए कार्य में हाथ डालने के लिए बेहतर समय नहीं है। 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रहा है।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात की जाए तो इसमें कुछ उतार-चढ़ाव रहने की स्थिति बनी रहेगी। चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकता है। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। आप अत्यधिक क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति हैं। स्वभाव में परिवर्तन करें, यह आपके पारिवारिक जीवन के

लिए अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। माता पिता के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। इस समय थोड़ा सावधान रहें और वाद-विवाद में न फंसे। बच्चों के साथ भी कुछ अनबन होने की संभावना है और उनके स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी हो सकती है, अतः उनका ख्याल रखें। आपको जीवनसाथी का अच्छा सहयोग मिलेगा। जिससे आपकी मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो वह गलत संगत में पड़ सकते हैं। जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकती है।

पंचम स्थान का राहु संतान को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं दे सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों को ज्यादा ध्यान देने की जरूरत हैं नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अधिक प्रतिकूल रहने वाला है। द्वादश स्थान का गुरु पेट व मोटापे से संबंधित परेशानी दे सकता है। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण भी परेशनी हो सकती है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

5 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान एवं दिनचर्या को अनुशासित बनाएं। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। अपने जीवन में उन्नति करने के लिए अत्यधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। पंचम स्थान का राहु विद्यार्थियों की पढ़ाई में अरूचि उत्पन्न करा सकता है। अतः इस समय के अन्तराल में पढ़ाई में मन को एकाग्र करना भी बहुत जरूरी है। नहीं तो आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

गुरु का गोचर व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अनुकूल सिद्ध होगा। उस समय के दौरान व्यवसायियों को अच्छा लाभ मिलेगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से समय अनुकूल है वर्ष के प्रारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है। 6 अप्रैल से आप लम्बी यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे।

नौकरी करने वालों व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि कम ही रहेगी। यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो उसको भी योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा कार्य में असफलता या यात्रा में व्यवधान आने की आशंका है। 6 अप्रैल से आपका दैनिक पूजा-पाठ सुधरेगा। यज्ञ, अनष्ठान, पूजा-पाठ इत्यादि के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे। अपने माता पिता की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म समझेंगे।

- बृहस्पतिवार के दिन बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान (तुला दान) करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में प्रवाहित करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। लग्न का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापर को और सुदृढ़ बना सकते हैं। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें कम समय में अच्छा लाभ होगा। 13 अपैल से चतुर्थ स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति नौकरी करने वालों के लिए अच्छी नहीं है। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है या प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु 27 अगस्त के बाद आप उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से सोना, चांदी, रत्न व ज्वैलरी से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागमन तो होगा परन्तु बचत नहीं कर पाएंगे। 13 अप्रैल से समय किंचित प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई क्रय-विक्रय न करें। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। भूमि व वाहन खरीदते समय बहुत ही सावधान रहें और जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। किसी से उधार पैसा न लें। यह आपके लिए घाटे का सौदा हो सकता है।

अगस्त के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं, तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। 13 अप्रैल से चतुर्थ स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति पारिवारिक माहौल को और भी ज्यादा प्रभावित कर रही है। आपके

माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए और घरेलू माहौल को अनुकूल बनाए रखने के लिए छोटी-मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

27 अगस्त के बाद नैसर्गिक रूप से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में नये सदस्य की बढ़ोत्तरी होगी। मातुल व ससुरल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

पंचम स्थान का राहु अचानक आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। नव विवाहित व्यक्तियों संतान प्राप्ति के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 13 अप्रैल के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी।

शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट व शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है, तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

15 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। उस समय सिर दर्द, गैस, व पेट से संबंधित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। परन्तु अगस्त के बाद आपका समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। शनि एवं गुरु का गोचर अच्छा होने के कारण आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। परन्तु आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण आप मानसिक परेशान रह सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

अगस्त के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को नौकरी

मिल सकती है परन्तु परिश्रम के बाद इंजीनियर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। अप्रैल के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समुद्र व सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होगी।

अप्रैल से अगस्त तक वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है। 27 अगस्त के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपका पूजा पाठ के प्रति विशेष रुचि रखेंगे। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा।

- अगस्त के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तिर्थ यात्रा कर व भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले में धारण करें ।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यदि आप व्यापारी हैं तो इस साल आपको काफी लाभ प्राप्त होने वाला है। धन व प्रतिष्ठा दोनों की प्राप्ति होगी। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे। अहंकार का त्याग करें और क्रोध पर काबू रखें। 26 अप्रैल के बाद का समय उन लोगों के लिए अच्छा है जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कारोबार कर रहे हैं। साझेदारी व मित्रता में भी आप कोई कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

नौकरी वालों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। आपका अपने बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है या अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। जो आपके हित में नहीं होगा। चतुर्थस्थ राहु के कारण कुछ लोग आपके खिलाफ साजिस भी कर सकते हैं। परन्तु 16 सितम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। उसके बाद सफलता और समृद्धि आपके साथ रहेगी। 19 अक्टूबर के बाद बिना रुकावट उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक रहने वाली है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। द्वितीयस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। 26 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय शेयर बाजार से दूरी बनाकर ही रहें तो बेहतर होगा। निवेश करने से ज्यादा पैसा बचाना आपके लिए फायदेमंद होगा। 16 सितम्बर के बाद से आपको लाभ होने लगेगा और जमापूंजी में भी वृद्धि देखने को मिलेगी।

19 अक्टूबर के बाद फिर से विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिलेंगे। भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

घर-परिवार, समाज

26 अप्रैल तक पारिवारिक वातावरण बहुत ही उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के

प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। चतुर्थ स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में नकारात्मक स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे में आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। मेष लग्न के जातक जल्द ही नाराज हो जाते हैं और बाद में अफसोस भी जाहिर नहीं करते हैं। जीवनसाथी के साथ बेहतर रिश्ते निभाने के लिए आपको अपने स्तर पर प्रयासरत रहना होगा।

माता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे। अतः थोड़ा सावधान रहें। पिता के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है, जो आपकी अंतःक्लेश का कारण होगा। इसलिए अंतःक्लेश को अपने ऊपर हावी न होने दें। संतान का स्वास्थ्य अचानक खराब हो सकता है, जिससे आपको परेशानी हो सकती है, अतः संतान के स्वास्थ्य का उचित ख्याल रखें। 19 अक्टूबर के बाद आपकी समाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

26 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही उत्त्म हो रहा है। उसके साथ संबंधो में मधुरता आएगी, जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। आप बच्चों की सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

इस साल आपकी सेहत ठीक-ठाक रहेगी। आपकी जिन्दगी सुचारु रूप से चलेगी। 26 अप्रैल के बाद कुछ असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। इससे आप जल्द ही उबर जाएंगे। आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी। लेकिन कुछ सामान्य सी दिक्कतें आ सकती हैं। जैसे-पेट में दर्द, बदहजमी, जोड़ों और घुटनों में दर्द संबंधी शिकायत हो सकती है।

वजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नहीं तो आपका वजन बढ़ सकता है। चतुर्थस्थ राहु के कारण आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। 16 सितम्बर के बाद आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा, जिससे आपकी आरोग्यता बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन समय के साथ स्थिति में सुधार होगा। 26 अप्रैल के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 19 अक्टूबर के बाद समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। कार्यस्थल पर आपके कार्यों की प्रशंसा होगी और आय में वृद्धि होगी। वरिष्ठ आधिकारी आपकी हर सम्भव मदद करेंगे। आपके प्रदर्शन से आगे कॅरियर में काफी लाभ होगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 29 अप्रैल के बाद से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

16 सितम्बर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनिय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ शनि के कारण आपके सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपके आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। 26 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गरीबों को दान करें एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। सितम्बर के बाद अपने घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं पंचम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं चतुर्थ में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर 11 मई को पुनः कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष व्यवसायियों के लिए अनुकूल रहेगा। अपने मन को शांत और एकाग्र करके व्यवसाय को बढ़ाने या फिर नए व्यवसाय को शुरू करने के बारे में सोचने की जरुरत है। आपका कुछ समय बर्बाद हो सकता है। परन्तु आप परेशान न हों और अपनी कोशिश को जारी रखें तो सफलता मिलना तय है। सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको व्यवसाय से लगातार आमदनी होती रहेगी। आपके सभी कार्य शीघ्र ही पूरे होंगे। वित्तीय कार्यों से जुड़े लोगों को धन-हानि हो सकती है। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर नौकरी करने वालों के लिए बहुत ही शुभ है। पदोन्नति के साथ मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

22 अक्टूबर के बाद आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपके लिए एक सुझाव है कि जुआ, सट्टा इत्यादि से दूरी बनाकर ही रहें और साथ ही किसी प्रकार का आर्थिक जोखिम उठाने से परहेज करें। यह हम सभी जानते हैं कि धन की प्राप्ति कठिन परिश्रम और काम के प्रति ईमानदारी से ही होती है। इसलिए धन से सम्बन्धित कोई भी फैसला सोच समझ कर ही लें और कोई भी जोखिम ना उठाएं। अगर आप शेयर बाजार से जुड़े हुए हैं तो उससे थोड़ी दूरी बना लें और कहीं भी निवेश करने से पहले सौ बार सोचें। थोड़े समय बाद आपको खुद ज्ञात होगा कि यह साल अनावश्यक रूप से पैसे खर्च करने के लिए बिल्कुल नहीं था। 11 मई के बाद समय अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन रही है।

7 अक्टूबर के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोत खुलेंगे, जिससे आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे जिसमें आप अच्छा खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात करें तो वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहने वाला है। कभी-कभी आप ज्यादा क्रोधित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे समय में कुछ ऐसा न करें जिससे बाद में पछताना पड़े। जीवनसाथी के साथ बेहतर सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें। 11 मई से समय अनुकूल हो रहा है। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भुमिका होगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु बड़े भाई एवं संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा।

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकर करेंगे। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी भी हो सकते हैं।

संतान

पंचम स्थान का शनि संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चे अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उस समय आपके बच्चों की आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो उसके विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपकी दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। बजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। मई के बाद आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी, जिससे आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना।

अक्टूबर के बाद समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगे एवं

सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रहों का प्रभाव होने से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। पंचम स्थान का शनि विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। विदेश में आपको सफलता मिल सकती है।

अक्टूबर के बाद मुख्यतः सारे ग्रह अनुकूल हो रहे हैं। उस समय आप समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ से ही छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। मई के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। अपने पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

अक्टूबर के बाद विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन सभी यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि तीर्थ यात्रा भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। मई के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशष पूजा का आयोजन करेंगे। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को दान देना, भिक्षुओं को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आप धर्म समझेंगे। कर्म ही पूजा है इस सिद्धांत के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा और आप अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- सातमुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

मुख्यतः सारे ग्रहों को गोचर अनुकूल होने के कारण वर्ष का प्रारम्भ काफी श्रेष्ठ रहेगा। कार्य व्यवसाय में वांछित उन्नति करेंगे। आपके सारे प्रतिद्वन्दी शान्त होंगे। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। परन्तु मार्च के बाद आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं।

पारिवारिक समस्याओं के कारण कार्य व्यवसाय प्रभावित होगा। फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय ज्यादा प्रतिकूल रहेगा। राजनीति व शेयर बाजार से जुड़े लोगों को भी अचानक हानि हो सकती है। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा नहीं है तथा साझेदार से भी अनबन हो सकती है। हालांकि 13 जुलाई के बाद आप सभी समस्याओं का निदान निकाल लेंगे और फिर से अपने उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो जाएंगे। उस समय के अंतराल में कुछ अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में पंचमस्थ गुरु आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ हैं। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्ति इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। छठे स्थान के शनि शत्रुओं से भी धन लाभ करा सकते हैं। परन्तु मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः वित्तीय विषयों के लिए यह समय सही नहीं है। अतः लेन-देन करते समय सावधान रहें।

13 जुलाई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इस अवधि में आप उन्नति करेंगे, परन्तु आर्थिक स्थिति को लेकर मानसिक कष्ट भी बना रहेगा। नई संपत्ति क्रय करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। 4 नवम्बर के बाद शेयर, लॉटरी व सट्टे से दूर ही रहें क्योंकि गुरु, राहु एवं शनि से प्रभावित होकर छठे स्थान में पीड़ित है। जो आपके लिए हितकर नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक सुख-समृद्धि के प्रबल योग बने हुए हैं। पत्नी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे तथा उनके स्वास्थ्य में लाभ होगा। संतान के लिए भी यह समय काफी शुभ है। 7 अप्रैल को द्वितीय स्थान में राहु का गोचर अचानक पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। अतः आपको परिवार से जुड़ी छोटी छोटी बातो को भी गंभीरता से लेना होगा तथा परिवार में सभी लोगों के साथ भावनात्मक लगाव बनाए रखें।

पंचम स्थान के शनि आपकी संतान के लिए शुभ नहीं हैं तथा परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित कर सकता है। परन्तु 13 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय घर परिवार में कोई शुभ कार्य होंगे, जिसके प्रभाव से आपके परिवार में स्नेह-सौहार्द का संचार होगा। सामाजिक रूप से यह साल अच्छा रहेगा। वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आपके प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। 5 अप्रैल से समय प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तथा आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते हैं।

13 जुलाई से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि के कारण आप किसी भी कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे तथा शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आप खूब परिश्रम भी करेंगे। आपकी कार्य क्षमताएं निश्चित रूप से बढ़ेंगी। 5 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। स्वास्थ्य में कुछ उतार-चढ़ाव की स्थिति बनेगी। मौसम जनित बीमारियों से भी आप प्रभावित रहेंगे।

पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि 13 जुलाई के बाद समय में फिर से सुधार आएगा। रोगों से शीघ्र मुक्ति मिलेगी। हाथ पैर के दर्द में सुधार होगा और आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए श्रेष्ठ है। रोजगार के नये

अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी।

13 अप्रैल के बाद सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से उन्नति के मार्ग प्रभावित होंगे। जुलाई के बाद आपका नई नई तकनीकि विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। अप्रैल के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

2 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिकयात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। दान-पुण्य में भी आप तत्पर्य रहेंगे। साधना, योग व ध्यान में अपना समय अधिक व्यतीत करेंगे। मार्च के बाद आलस्य बढ़ेगा, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। जुलाई से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आप गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। दूसरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र स्थापित करें एवं उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- श्रीखण्ड चन्दन में केसर मिलाकर वीरवार के दिन तिलक करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

काम काज की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। यदि व्यावसायिक दायरा बढ़ाना चाहते हैं तो मार्च के बाद ही इसके बारे में सोचें क्योंकि मार्च से पहले समय अच्छा नहीं रहेगा। 6 अप्रैल के बाद नौकरी वालों के लिए समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

6 अप्रैल से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आपके उन्नति के मार्ग खुलेंगे तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। लोहा, कच्चे तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा। व्यापार में उम्मीद से अधिक उन्नति मिलेगी। जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ेगा और आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे। वर्षान्त आपके लिए श्रेयस्कर रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु संचित धन में कमी कर सकता है। निवेश व लेन-देन के मामले में सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। हालांकि 6 अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप व्यापार में अनुकूलता आएगी। शेयर, सट्टा व जुआ से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम है। सम्पत्ति क्रय करने का सुंदर योग बन रहा है। गुप्त धन, वसीयत व अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होगी।

जून के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। चोरी, बीमारी व दुर्घटना इत्योदि में आपका धन व्यय होने की संभावना बन रही है। यदि धन सम्पत्ति से संबंधित कोई मामला कोर्ट कचहरी में चल रहा है तो उसमें अनुकूलता प्राप्त होगा। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। किसी से ब्याज पर व उधार पैसे लेने की संभावना बन रही है। इस समयांतराल में आपको अपनी धैर्य शक्ति बढ़ानी होगी क्योंकि नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है तथा उसके बाद आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति

अनुकूल नहीं रहने से आप चिन्तित रहेंगे। द्वितीयस्थ राहु के कारण परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसे में आपको अपनी सहनशक्ति को बढ़ाना चाहिए। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अप्रैल से समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपके भाईयों की उन्नति होगी। मातुल पक्ष के लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे तथा सुख व संपन्नता का भाव बना रहेगा। माता पिता से संबंध मधुर रहेंगे। जून के बाद पारिवारिक माहौल किंचित प्रतिकूल होगा परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी अनुकूल बना लेंगे। षष्ठस्थ शनि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ-साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे तथा सामाजिक लोग आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी, जिसका असर उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। परन्तु 6 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है।

आपके बच्चे आपकी उम्मीदों से बढ़कर अच्छे कार्य करेंगे, जिससे आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। आपको भी उन पर गर्व होगा। परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं है अतः उनके रहन सहन पर ध्यान दें। दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। हालांकि 6 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि शारीरिक आरोग्यता के लिए श्रेष्ठ रहेगी।

आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करना ज्यादा पसंद करेंगे, परिणामस्वरूप आपके मन में अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। 11 दिसम्बर के बाद लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को अचानक प्रभावित कर सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। यदि आप विदेश में उन्नति करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल हो रहा है। प्रतियोगिता परिक्षार्थियों को वांछित क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक यात्राओं का आनन्द लेंगे।

मुख्यतः आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

साल का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है, परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। सांस्कृतिक उत्सव में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। 28 जून से आप दान पुण्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान आदि में ज्यादा रुचि लेंगे। धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना इत्यादि।

- अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दूर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डू का भोग लगाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवन का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष कवच धारण करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए शुभ रहेगा। व्यापार में वांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। नौकरी में पदोन्नति व नई नौकरी मिलने की प्रबल संभावना बन रही है। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे, परन्तु जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

व्यापारिक वर्गों से आपको ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे जिसमें आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कोर्ट कचहरी व विवादों से दूर रहें। 25 सितम्बर के बाद कुछ नये निवेशक मिलेंगे। आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के मार्ग प्रशस्त होंगे जिसके कारण आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे। नई संपत्ति क्रय करने का योग बन रहा है तथा अकस्मात् धन की प्राप्ति होगी। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आपको बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लेना होगा। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य पर भी कुछ पैसे खर्च करा सकता है। आपको सकारात्मक बने रहना बेहतर होगा।

वर्ष उत्तरार्द्ध आपके लिए काफी उत्तम रहेगा। आर्थिक लाभ में वृद्धि होगी। बैंक से लोन इत्यादि आसानी से प्राप्त सकेगा। पत्नी एवं भाईयों से भी लाभ होगा। छठे स्थान का शनि आपको शत्रुओं से भी धन लाभ करा सकता है। निवेश के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। सितम्बर के बाद आपको अचल संपति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परिवार में सुख-शान्ति का माहौल बना रहेगा। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपको भाईयों एवं मातुल पक्ष का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय अच्छा नहीं है। अतः इस अवधि में पारिवारिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। पत्नी के स्वास्थ्य का खास ध्यान रखना आपके लिए हितकारी रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद में न पड़ें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा।

उत्तरार्द्ध में समय पुनः अनुकूल हो रहा है। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलेगी तथा आपके सारे विरोधी शान्त होंगे। परिवार में आपसी सद्भाव का माहौल बनेगा। पारिवारिक रिश्ते बेहतर रहेंगे तथा समय आनंदपूर्वक व्यतीत होगा। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। परिवार के सदस्य आपकी बुद्धिमता की तारीफ करेंगे। जन्दिगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। प्रथम संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी।

यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। पूरे वर्ष कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। संक्रमण संबंधित बीमारियों से आप ज्यादा प्रभावित रहेंगे। जाँघ, जननांग या लीवर संबंधिक बीमारियां भी हो सकती हैं। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमारियों से बचा जा सकता है। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय और भी ज्यादा प्रभावित हो रहा है। इस अवधि में आप अचानक बीमार हो सकते हैं तथा आप शारीरिक ऊर्जा में कमी का अनुभव करेंगे।

जुलाई के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा,

जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय प्रभावित रहेगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्षान्त सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 6 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा होने की संभावना बन रही है। नवम स्थान पर राहु की दृष्टि लम्बी यात्राओं का प्रबल योग बना रही है। राहु के कारण अधिकांश यात्राएं अचानक होंगी।

सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यवसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में मित्रता व किसी पर विश्वास करना आपके लिए हानिकारक हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्य के कारण कर नहीं पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित रहेगा, परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में मानसिक शान्ति बनी रहेगी। धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को खुशी के साथ मनाएंगे। साधु महात्माओं का प्रवच सुनना, सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके अंदर गरीबों व दुखियों की निःस्वार्थ सहायता का भाव उत्पन्न होगा।

- अपने पूजा घर में देशी घी का दीपक जलाकर श्रीसूक्त या कनकधारा स्तोत्र का पाठ नियमित करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।
- सात एवं आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

दशमेश शनि के सप्तम भाव में उच्च राशि में होने कारण बड़े कार्यों के प्रस्ताव मिलेंगे व आप उन कार्यों को करने में सफल भी होंगे। व्यापार के बड़े निर्णय सावधानी से लें तथा विकास की योजनाओं को पूरी जांच परख करके अंजाम दें। किसी भी कानूनी झंझट में पड ने से बचें।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय साझे में काम करने वालों के लिए शुभ रहेगा। दूसरों की लापरवाही और असफलताओं से आप चिन्तित रह सकते हैं। किसी की झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। किसी कार्य में अधिक आत्मविश्वास दिखाना नुकसान दे सकता है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना भी जरूरी होगा। इन सबके बावजूद अपने रुचि के क्षेत्र में आप अच्छा काम करेंगे और जनप्रिय बने रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप कुछ ऐसे कार्यों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। निरर्थक ही पैसे बर्बाद कर सकते हैं। इस वर्ष कुछ ऐसे खर्च भी आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। इस प्रकार की आर्थिक समस्याएं आपकी दिमागी शांति को भंग करने का काम करेंगी। जोखिम उठाने वाली प्रवृत्तियों जैसे सट्टेबाजी, जुआ आदि से बचें, क्योंकि इनसे आपको कोई बड़ा घाटा हो सकता है।

जून से अगस्त के अंतराल में कुछ व्यापारिक सौदों के माध्यम से आप अच्छा लाभ कमा सकते हैं। आपको बड़े भाई या मित्र से लाभ हो सकता है। भौतिक सुख सुविधा पर आपका पैसा अधिक खर्च होगा। निवेश के लिए यह समय अनुकूल नहीं है क्योंकि द्वादश स्थान का राहु हानि करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं है। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार आपके प्रति वैमनस्यपूर्ण भी रह सकता है।

ईष्ट मित्र के साथ सम्बन्धों में मधुरता कम हो सकती है। आप अपने घर परिवार के सदस्यों के हित के बारे में सोचेंगे। परिवार के सदस्यों के ऊपर धन व्यय करेंगे। इन सबके बावजूद भी बीच-बीच में परिवार के कुछ सदस्यों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अपनी समस्याओं के समाधान के लिये परिवार पर अधिक निर्भरता उचित नहीं होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। जून से अगस्त तक का समय आपकी दूसरी संतान के लिए शुभ है। यदि वे विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय अधिक कष्टकारक हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु के जलीय राशि में होने के कारण कफ या उदर संबंधित बीमारी से परेशानी हो सकती है। जून से अगस्त तक का समय किंचित अनुकूल रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी। अगस्त के बाद समय फिर से प्रतिकूल हो रहा है।

आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। अतः इस अवधि में स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। जहां तक सम्भव हो गैर जरूरी यात्राओं से बचें अन्यथा आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम नहीं है। पढ़ाई-लिखाई व प्रतियोगिता परीक्षा में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे।

जून से अगस्त तक का समय अच्छा रहेगा। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। मई के बाद व्यवसाय से संबंधित यात्राएं अधिक होगी। ये यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी सारी धार्मिक यात्राएं प्रभावित होंगी।

अगस्त के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है क्योंकि वर्षान्त में राहु ग्रह का गोचर दुर्घटना के योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। अष्टमस्थ गुरु एवं लग्नस्थ राहु के कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। जून के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। इस समय के अंतराल में आप कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। जैसे- हवन, माता की चौकी इत्यादि। वर्षान्त में तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों की सेवा करें तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार का व्रत करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कारोबारियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं, उन्हें अधिक लाभ होने वाला है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से कुछ प्रतिद्वंदियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु आपके सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

30 जुलाई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। ब्याज पर पैसे देने के लिए समय उचित नहीं है लेकिन 11 सितम्बर के बाद आपका समय अच्छा होगा तथा आपका भाग्योदय होगा। आपको वांछित उन्नति मिलेगी। नौकरीपेसा जातकों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं या प्रतिकूल स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 30 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि के प्रभाव से भुमि, भवन व वाहन के साथ-साथ रत्नाभूषण इत्यादि की प्राप्ति भी हो सकती है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आप खूब खर्च करेंगे।

द्वादश स्थान का राहु कुछ अनावश्यक खर्चे करा सकता है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है इस पूरे वर्ष को आप आनन्द के साथ बिताएंगे। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके पक्ष में होने की संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक अनुकूलता के लिए अच्छी नहीं है। आपके माता जी के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। बात बात पर क्रोधित न हों क्योंकि यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें नहीं तो परिवार में किसी के साथ अनबन हो सकती है । आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य के बल पर आगे बढ़ेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने के प्रबल योग बन रहे हैं। जुलाई से सितम्बर तक का समय प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें तथा उन्नति में व्यवधान आ सकता है। लेकिन चिंता न करें क्योंकि सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा तथा उस समय आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। परन्तु 30 जुलाई के बाद अचानक आपकी सेहत बिगड़ सकती है। अष्टमस्थ गुरु एवं द्वादशस्थ राहु के कारण आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें तथा खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें।

11 सितम्बर को गुरु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य को सुधारने वाला है तथा उसके बाद आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक संतुष्टि प्रदान करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार हैं। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा।

मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल है। ऐसी स्थिति में अपने कार्यों में किसी प्रकार की जल्दबाजी न करें और उसे अविलंब पूरा करने की कोशिश करें क्योंकि वर्षान्त में सफलता मिलने का पूर्ण योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। ज्यादातर समय आप अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधनी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होता। वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में आपका धन चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान की वृद्धि होगी। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। गुरु दीक्षा लेकर उस मन्त्र की साधना कर सकते हैं। गुरुवाणी व गुरुजी पर आपका अटूट विश्वास होगा।

- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- आठ मुखी रूद्राक्ष गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन नीली वस्तु का दान करें एवं निम्नलिखित राहु मन्त्र का जाप करें-

  ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(05/10/2014 - 05/10/2024)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्षों की है। आपकी कुण्डली में यह 05/10/2014 को आरम्भ और 05/10/2024 को समाप्त होगी।

चंद्र पंचम भाव में अवस्थित है। पंचम भाव संपत्ति, आनन्द, मनोरंजन, मनोविनोद, विश्राम, वर्ग पहेली, जुआबाजी आदि प्रतियोगी गतिविधियों, लॉटरी प्रेम, उच्च शिक्षा और ज्ञान, अकूत सम्पत्ति तथा आध्यात्मिक गतिविधियों का द्योतक है। अतः यह अवधि आपके लिये आनंद दायक होगी और आपको समृद्धि तथा शांति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी की त्रिकोण में स्थिति के कारण आपका जीवन उत्तम होगा। इस अवधि में किसी बड़े रोग अथवा दुर्घटना की सम्भावना नहीं है और आप सामान्य जीवन का आनन्द लेने में सक्षम होंगे तथा अपने दैनिक कर्त्तव्यों का नियमित रूप से बिना किसी रुकावट के सम्पादन करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा अनुकूल होगी जब पंचम भाव में अवस्थित महादशा के स्वामी की एकादश भाव पर दृष्टि होगी। इस अवधि में आपकी चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि होने की संभावना है। आपकी आय में वृद्धि होगी और आप सुख-साधनों पर व्यय करने की स्थिति को प्राप्त करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

व्यवसाय :

आप निष्कपट, सत्यवादी, भद्र तथा ईश्वर से भयभीत रहने वाले हैं इसलिए आपको सरकारी पद, राज्य की सेवा के अवसर की प्राप्ति होगी। आपकी प्रतिष्ठा और स्थिति से समाज के अन्य लोगों को ईर्ष्या होगी और आपका कोई शत्रु नहीं होगा। सट्टे की ओर प्रवृत्ति के संकेत भी हैं जिसमें आपको लाभ मिलेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण और आनन्ददायक होगा। आपके जीवन साथी सहयोगी और सहायक होंगे तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। संभव है आपका कोई बेटा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध होगा और परिवार को प्रसिद्धि दिलाएगा। आपका मस्तिष्क साफ रहेगा और बच्चों से आपको सुख की प्राप्ति होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शांति, मस्तिष्क और शिक्षा का कारक चंद्र आपको साहित्य के अध्ययन और उससे जुड़ी गतिविधियों की ओर प्रेरित करेगा। इन कार्यों में आप सफल होंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(05/08/2022 - 05/04/2024)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 05/10/2014 को प्रारंभ होकर 05/10/2024को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 05/08/2022 को प्रारंभ होकर 05/04/2024 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

इस अवधि में आप सुख-सुविधाओं के पीछे भागेंगे, मगर सफलता नहीं मिलेगी। निम्न स्तर के विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध हो सकते हैं।

धन कमाने के लिए अवैध तरीके अपना सकते हैं। कंजूसी भी बढ़ेगी। इन सबके कारण जीवनसाथी से संबंध-विच्छेद हो सकता है। सावधानी की आवश्यकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मी जी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(05/04/2024 - 05/10/2024)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 05/10/2014 को प्रारंभ होगी और 05/10/2024 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 05/04/2024 से प्रारंभ होकर 05/10/2024 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। सूर्य सर्वाधिक शक्तिशाली ग्रह है; पिता व आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सभी कार्यों में सफलता सरलता से प्राप्त करेंगे। महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति और लोकप्रियता में वृद्धि के लिए यह आदर्श समय है, मगर शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। सतर्क रहना आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न टोटकों का प्रयोग करें।

1. दूध और शहद का सेवन करें, अग्नि में दूध अर्पित करें।
2. गरीबों को आटा, गुड़ और तांबे का दान करें।
3. किसी नदी, नहर आदि में तांबे के सिक्के डालें और उन्हें प्रवाहित होते देखें।

महादशा :- मंगल
(05/10/2024 - 05/10/2031)

मंगल की महादशा 05/10/2024 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 05/10/2031 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। मंगल की दशा में आपको शुभ फल मिलेगा इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपको हर प्रकार का लाभ, आराम ओर सुखमय पारिवारिक जीवन मिला होगा। इस दशा के दौरान आपको सफलता और हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आप लोकप्रिय होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मंगल के कारण आपमें स्फूर्ति, जीवन शक्ति और रोग से लड़ने की क्षमता होगी। आप स्वतंत्र विचार के व्यक्ति हैं और आप अपना विरोध बरदाश्त नहीं कर सकते। इस दशा के दौरान आप अपने नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। आप कृत संकल्प होंगे और आप में शक्ति व आत्मविश्वास होगा। आप दाँत और ताप से सम्बद्ध संक्रामक बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।

अर्थ और व्यवसाय :

जहाँ तक अर्थ का प्रश्न है, आपके लिए यह दशा अति उत्तम होगी। आपको निवेश तथा सट्टे से लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनसंचय करेंगे और आपकी सम्पत्तियों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। आपके अधीनस्थ तथा सहकर्मी आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपके अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी। हर प्रकार का लाभ मिल सकता है। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी। संगठन में परिवर्तन हो सकता है जो अन्ततः लाभदायक सिद्ध होगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध, व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। योजना और प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में आप अच्छा करेंगे। आप रसायन, समुद्री उत्पाद या कुटीर उद्य ोग का चयन कर सकते हैं। आप एक सफल दन्तचिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं या आपका तकनीकी या कृषि जीवन सफल होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल और बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी यात्राएं होंगी। शनि तथा शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्राएं हो सकती हैं। इस दशा में आपको जमीन जायदाद और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको कुछ पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। तकनीकी विषय, गणित, विधि, इन्जीनियरिंग या चिकित्सा के विषय आपके लिये उपयुक्त होंगे। खेल तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में आपकी रुचि होगी।

आप कार्यक्रमों के आयोजन में अग्रणी होंगे तथा अपने नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनकी आय, सम्पत्ति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनकी छोटी यात्राएँ होंगी और सम्बन्धियों से लाभ प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी, उनकी लम्बी यात्राएँ होगी और पिता से लाभ प्राप्त होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की परियोजनाएं सफल होंगी, उन्हें यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आप के मित्रों की संख्या विशाल होगी जो आपकी बहुत सहायता करेंगे। आपको थोड़े प्रयास से ही सफलता मिलेगी और अनेक मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आपके लिये शुभ होगी, आपकी आय तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आपका निवेश सफल होगा। आगे राहु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको साझेदारी में कुछ लाभ तथा जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। शनि की अन्तर्दशा कुछ मिश्रित फल देगी और आपके कार्य में परिवर्तन होगा और यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। लग्नेश बुध के कारण आपको यश, ख्याति, सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। केतु कुछ मानसिक तनाव दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा तथा निवेश सफल रहेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएँ हो सकती हैं तथा भाइयों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिल सकता है, आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(05/10/2024 - 03/03/2025)

आपके लिए मंगल की महादशा 05/10/2024 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 05/10/2024 को प्रारंभ होकर 03/03/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप धनी, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। जीवन में खुशियां रहेंगी। आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है। संतान सुखकारी होगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आप शक्तिशाली और सफल होंगे। मातहत सहयोग करेंगे। धनागम होगा, मगर खर्चे भी बढ़ेंगे। कटु वचन बोलने से बचें।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा; जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है। उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम करना होगा; उन्हें छोटी-मोटी बीमारियों से बचाव करना चाहिए। माता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। भाई-बहन धन कमाएंगे; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपकी संतान को सफलता और प्रसिद्धि मिलेगी; परीक्षा में सफल होंगे, साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, हाथ-पैरों में कुछ कष्ट हो सकता है। मंगल के गायत्री मंत्र का जाप लाभदायक रहेगा।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(03/03/2025 - 21/03/2026)

आपके लिए मंगल की महादशा 05/10/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 03/03/2025 को प्रारंभ होकर 21/03/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित घटनाएं आपको सुर्खियों में रखेंगी। समाजसेवा में मन लगेगा। परिश्रम और दक्षता द्वारा सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। माता से लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। निवास में परिवर्तन या सुधार संभव है। भूमि से खूब लाभ हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता खूब धन कमाएंगे। उनके जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं। आपकी माता को

साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है; उन्हें उपहार आदि से लाभ होगा, उनके खर्चे बढ़ेंगे, नेत्रों की देखभाल करनी चाहिए।

आपकी संतान शारीरिक कार्य जैसे खेलकूद आदि में उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कठिन परिश्रम करने से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारियों को अचल संपत्ति में निवेश करने से भविष्य में लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घुटनों या पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरवजी के रूप में पूजा करें।

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(21/03/2026 - 25/02/2027)

आपकी मंगल की महादशा 05/10/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/03/2026 को प्रारंभ होकर 25/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। प्रोन्नति और कार्यों में प्रगति की संभावना है। प्रसिद्ध लोगों से संपर्क हो सकते हैं। शुभ कार्यों के लिए यात्रा होगी, मुकदमे में विजय होगी, व्यापार में कमाई होगी। माता से संबंध मधुर होंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। शत्रुओं पर विजय होगीः चुनाव या स्पर्धा में विजय मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपके पिता धन कमाएंगे, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी, कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी। भाई-बहनों को अचानक फ़ायदा हो सकता है, परिवर्तन आएंगे, यात्रा और खर्चे का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धा में सफलता मिलेगी, शत्रुओं पर विजय मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारी अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अधिक परिश्रम से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र, हल्दी और चने की दाल दान में दें।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(25/02/2027 - 05/04/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 05/10/2024 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 25/02/2027 को प्रारंभ होकर 05/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपको कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चपद और प्रोन्नति का संकेत है। आप प्रत्येक कार्य सोच-समझकर करेंगे। निर्माणकार्य कर सकते हैं। शिशु का जन्म हो सकता है, संतान से सुख मिलेगा। सलाहकार के तौर पर कार्य कर सकते हैं। विवाह संभव है। वर्तमान व्यापार में स्थायित्व आएगा या नया व्यापार प्रारंभ करेंगे। सरकारी नौकरी वाले प्रसन्न रहेंगे। विदेश यात्रा हो सकती है। किसी अनुबंध (विशेषकर श्रमिक वर्ग से) पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को समृद्धि मिलेगी। पिता को सांसारिक सुख मिलेगा। यात्रा हो सकती है। माता को धन का लाभ होगा, पारिवारिक जीवन में स्थायित्व आएगा। भाई-बहनों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी, वे किसी से साझा कर सकते हैं, यात्रा और विवाह संभव हैं।

आपकी संतान के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, परीक्षा में सफल होंगे। उनकी लोकप्रियता बढ़ेगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अवांछित तबादला हो सकता है। परामर्शदाताओं के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचन तंत्र का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल, काले तिल और सरसों का तेल दान करें।

अंर्तदशा :- मंगल - बुध
(05/04/2028 - 02/04/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 05/10/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 05/04/2028 को प्रारंभ होकर 02/04/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से खुशी और सहायता मिलेंगी। लोकप्रियता बढ़ेगी। विभिन्न माध्यमों से धन आएगा। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। संतान सुखकारी रहेगी। शत्रु परास्त होंगे। हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध रहेगी। सर्जनात्मक शक्ति और कल्पना उत्तम रहेंगी। निवेश से लाभ हो सकता है। संतान का जन्म संभव है। कला, नाटक, खेलकूद आदि में भाग ले सकते हैं।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी; निवेश अधिक करेंगे। पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं; जनता से संपर्क बढ़ेगा। माता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है ; अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी, कुछ परिवर्तन संभव है।

भाई-बहनों की यात्राएं हो सकती हैं; उच्चशिक्षा और समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान को साझेदारों से लाभ होगा, व्यापार में धन कमा सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न होंगे। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

कान और शरीर के निचले भागों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए हरी मूंग की दाल का दान करें।

अंर्तदशा :- मंगल - केतु
(02/04/2029 - 29/08/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 05/10/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/04/2029 को प्रारंभ होकर 29/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। कभी-कभी कार्यवश घर से दूर जा सकते हैं। आपके बहुत से मित्र होंगे जो आपकी मदद करेंगे। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। समाज, कार्यक्षेत्र और व्यापार में लाभ होगा; चुनाव में जीत होगी, शत्रुओं पर विजय की संभावना है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता को धन का लाभ और संचय होगा। माता का व्यक्तित्व चमकेगा। भाई-बहनों के लिए धनार्जन का संकेत है, प्रसन्न रहेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी, मामापक्ष से लाभ होगा।

आपकी संतान की शिक्षा में बाधाएं आ सकती हैं। उन्हें ऊर्जा के अपव्यय से बचना चाहिए, बिना लाभ की गतिविधियों से दूर रहें। अगर से कार्यरत हैं तो कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं।

अगर आप कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ हो सकता है, जबकि व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; छाती में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शुक्र
(29/08/2029 - 30/10/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 05/10/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 29/08/2029 को प्रारंभ होकर 30/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। मितव्ययता द्वारा धन संचित करेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी। सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। आप दयालु हैं। दान-धर्म में रुचि लेंगे। एकांत में किया कार्य लाभकारी होगा। अध्यात्म में रुचि होगी। मुकदमे में सफल होंगे। नौकरी में कार्यालय उत्तम मिलेगा।

कार्यक्षमता बढ़ने से सब समस्याओं का समाधान हो जाएगा। आपके जीवनसाथी को कार्यालय उत्तम मिलेगा। आपके पिता को अचल संपत्ति और वाहन प्राप्त होंगे। माता को सुख, प्रसन्नता, यात्रा, ज्ञान में वृद्धि का योग है। आपके भाई-बहनों के सम्मान में वृद्धि होगी, कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, व्यापार और विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा।

आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन हो सकता है, सम्मानित होंगे। अगर वे सेवारत हैं तो समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य और घरेलू सुख का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारी या अनुबंध से लाभ होगा। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारी कठिन स्पर्धा के बावजूद लाभ उठाएंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पैर और नेत्रों की व्याधिओं से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - सूर्य
(30/10/2030 - 06/03/2031)

आपकी मंगल की महादशा 05/10/2024 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 30/10/2030 को प्रारंभ होकर 06/03/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद और सरकार से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सरकार से सम्मान या पारितोषिक भी मिल सकता है। सूर्य की पंचम भाव पर दृष्टि के कारण आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, कार्य पूर्ण होंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। संतान का जन्म भी संभव है। अध्यात्म और तंत्र-मंत्र में प्रगति हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में सफलता, उत्तम स्वास्थ्य और लाभ का संकेत है। पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं। माता की अध्यात्म में रुचि होगी। उनके लिए

महादशा :- राहु
(05/10/2031 - 05/10/2049)

राहु की अन्तर्दशा 05/10/2031 को आरम्भ और 05/10/2049 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु-दशम भाव में स्थित है। राहु की

दृष्टि-चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। राहु की इस दशा में आपकी प्रगति, जीविका में उन्नति होगी, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा तीर्थस्थलों की यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति होगी और आप शक्तिशाली तथा सक्रिय होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुज्न्य संक्रामक रोग, रक्त संचार की समस्याएं, वातजन्य रोग, निचली भुजाओं की समस्या, चर्मरोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरत कर इनमें से अधिकांश से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यापार-व्यवसाय में अच्छी कमाई होगी। सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। पिता से कुछ लाभ मिलेगा। आपका बैंक बैलैंस सन्तोषजनक रहेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, उड्डयन, वैमानिकी, कला, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, कम्प्यूटर, खाद्यान्न से संबंधित सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टीबायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ तथा भोजन से संबंधित व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को लाभ, पदोन्नति, सहकर्मियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों से सद्व्यवहार और कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से जुड़े लोगों की अच्छी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपकी जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। आपको यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और आप मानवीयता के कार्य करेंगे।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सुख आराम मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में आपको अचल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा में छोटी तथा दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर विज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, भोजन, प्रोद्योगिकी आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है और आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं तथा मौलिकता और मानसिकता से सम्बद्ध सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे आनन्द मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, जीविकोपार्जन में प्रगति, सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपकी माता की यात्रा तथा साझेदार से लाभ मिलेगा, किन्तु, उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा। आपके पिता को लाभ, बचत तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ तथा परिवर्तन होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की यात्रा, व्यय तथा मामूली स्वास्थ्य-समस्याएं हो सकती हैं।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके जीविकोपार्जन में उन्नति तथा यात्रा होगी और आपको सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के कारण यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा। शनि की अन्तर्दशा में आपको यश ख्याति, कार्यों में सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, प्रतिद्वद्वियों पर विजय और यात्रा होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्या उत्पन्न कर सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, सफलता, सुख तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। सूर्य के कारण कुछ परिवर्तन हो सकता है जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ होगा और शादी तथा यात्रा होगी। मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, हर प्रकार का लाभ तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

अंर्तदशा :- राहु - राहु
(05/10/2031 - 18/06/2034)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/10/2031 को प्रारंभ होकर 05/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 05/10/2031 को प्रारंभ होकर 18/06/2034 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। दशम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे, साहस में वृद्धि होगी, लेखक, चित्रकार आदि हो सकते हैं। साहस की अधिकता के कारण पापपथ पर चल सकते हैं। इस संबंध में सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - गुरु
(18/06/2034 - 10/11/2036)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/10/2031 को प्रारंभ होकर 05/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 18/06/2034 को प्रारंभ होकर 10/11/2036 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 2, 4, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। धनी बनेंगे, धर्म में आस्था होगी। किसी धार्मिक संस्था से संबद्ध हो सकते हैं। धर्मगुरुओं की सहायता करेंगे। विचार और कार्यों में पवित्रता होगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - शनि
(10/11/2036 - 17/09/2039)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 05/10/2031 को प्रारंभ होकर 05/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 10/11/2036 को प्रारंभ होकर 17/09/2039 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 7, 11, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दुर्बल और बीमार हो सकते हैं। सबकी आलोचना करने की आदत पड़ सकती है; मित्रों और रिश्तेदारों से झगड़े कर सकते हैं। घरेलू जीवन दुखमय हो सकता है। समय-समय पर स्वभाव में बदलाव आ सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं
- पीपल की जड़ में जल अर्पित करें
- भोजन की पहली रोटी गाय को दें

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(17/09/2039 - 06/04/2042)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/10/2031 को प्रारंभ होकर 05/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 17/09/2039 को प्रारंभ होकर 06/04/2042 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा पूर्ण होगी। आप विभिन्न विषयों के विद्वान होंगे। कोई नयी खोज कर सकते हैं। धनागम उत्तम होगा, कर्मचारी वफ़ादार रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(06/04/2042 - 24/04/2043)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/10/2031 को प्रारंभ होकर 05/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 06/04/2042 को प्रारंभ होकर 24/04/2043 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके जीवन में असाधारण परिवर्तन आ सकते हैं, जो अशुभ हो सकते हैं। पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं हो सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए : हनुमान जी की उपासना करें, प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

शनिवार और मंगलवार को उपवास करें। उपवास के बाद हनुमान जी की उपासना करें, मीठा भोजन ग्रहण करें। नमक का सेवन न करें।

निम्न उपाय भी लाभकारी रहेंगे :

- गरीबों को और मंदिर में कंबल बांटें
- कुत्तों को भोजन दें
- भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(24/04/2043 - 24/04/2046)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/10/2031 को प्रारंभ होकर 05/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 24/04/2043 को प्रारंभ होकर 24/04/2046 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप ऐशो-आराम के पीछे बेचैन रहेंगे मगर यह बहुत परिश्रम के बाद ही उपलब्ध हो सकेगा। निम्न कोटि के विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध स्थापित करने की कोशिश कर सकते हैं। विषय-वासनाओं की तृप्ति के लिए पापपथ पर चल सकते हैं, जिस कारण जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2024

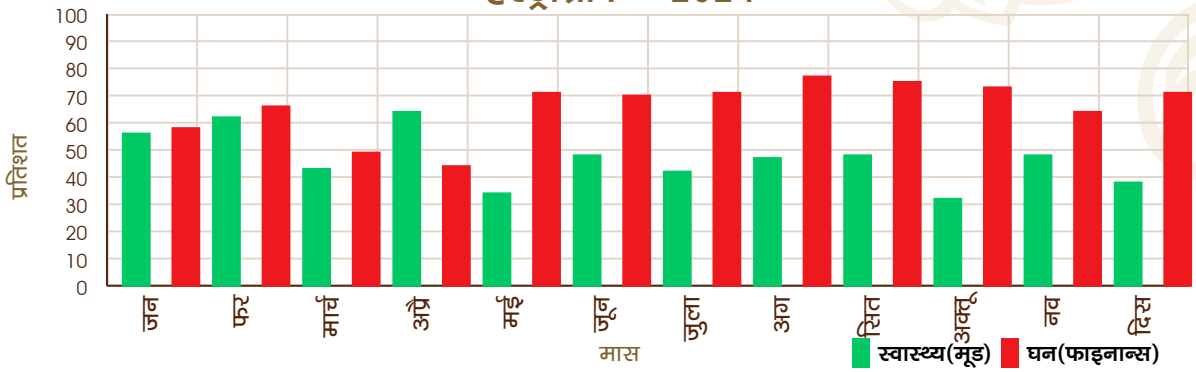

एस्ट्रोग्राफ - 2025

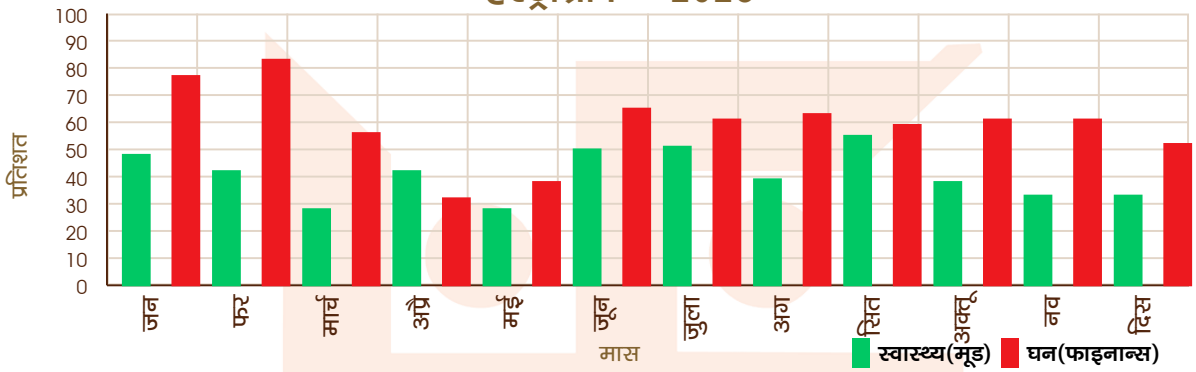

एस्ट्रोग्राफ - 2026

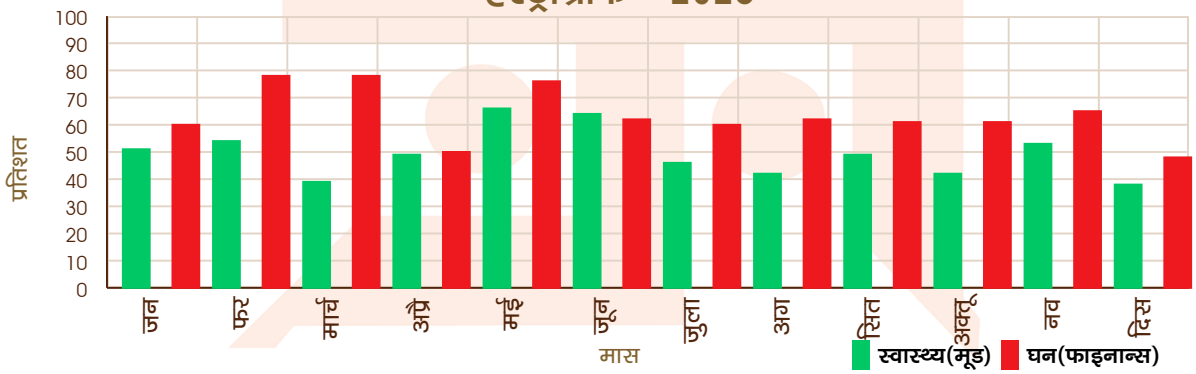

एस्ट्रोग्राफ - 2027

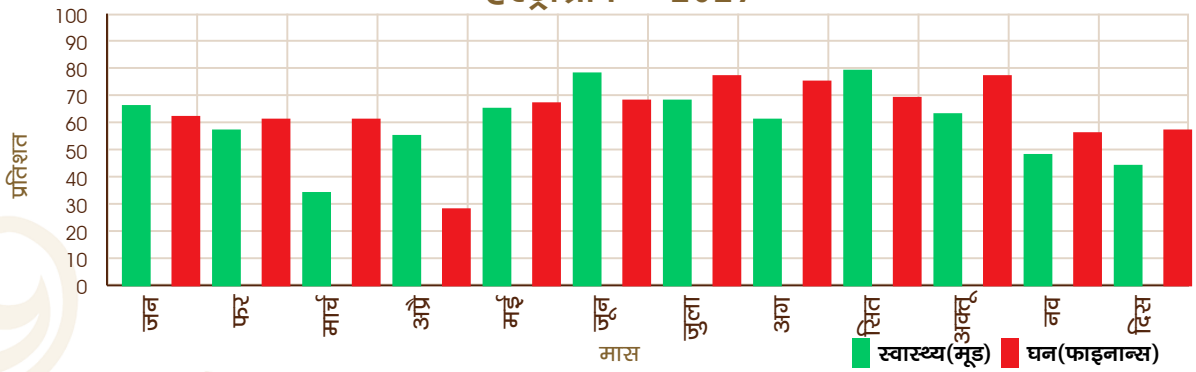

एस्ट्रोग्राफ - 2028

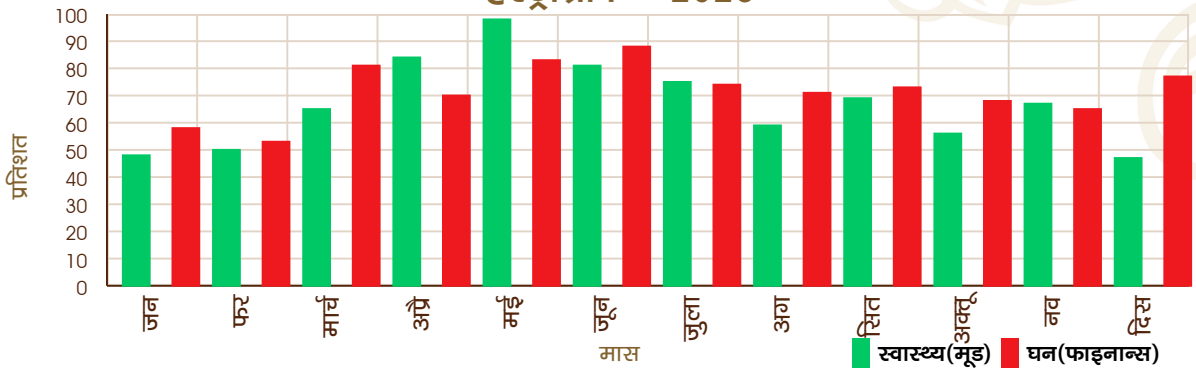

एस्ट्रोग्राफ - 2029

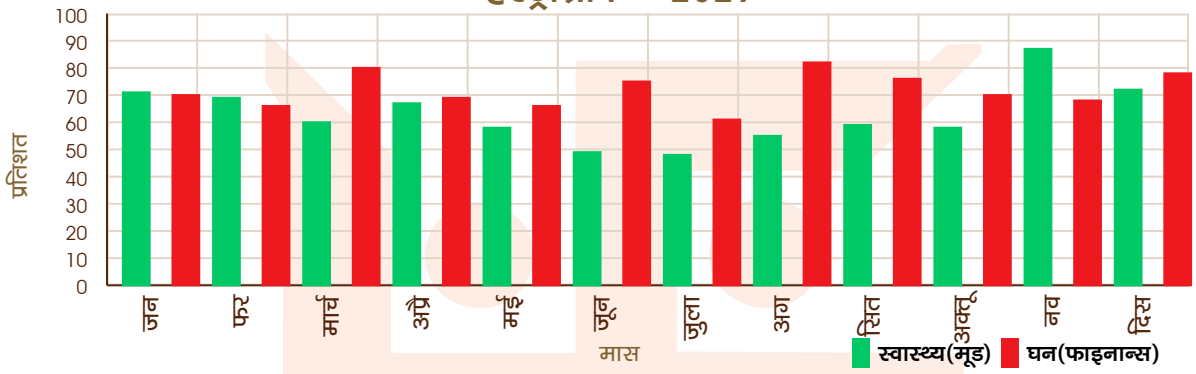

एस्ट्रोग्राफ - 2030

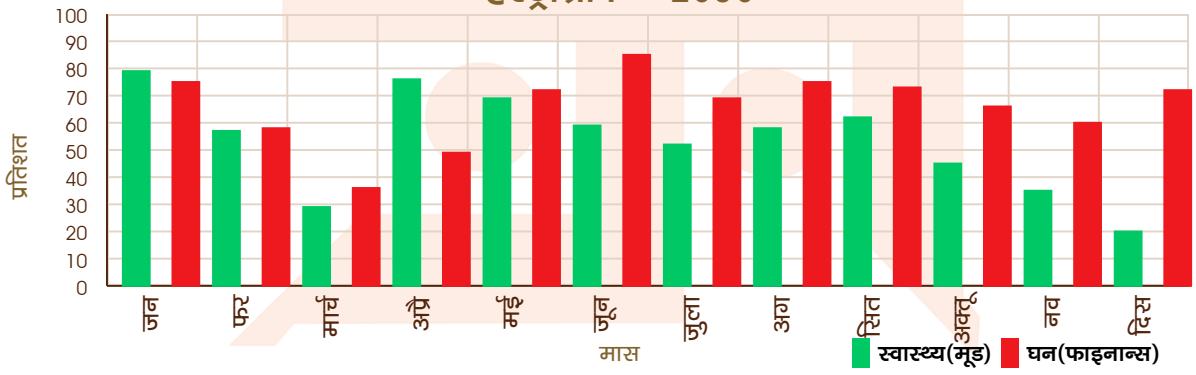

एस्ट्रोग्राफ - 2031

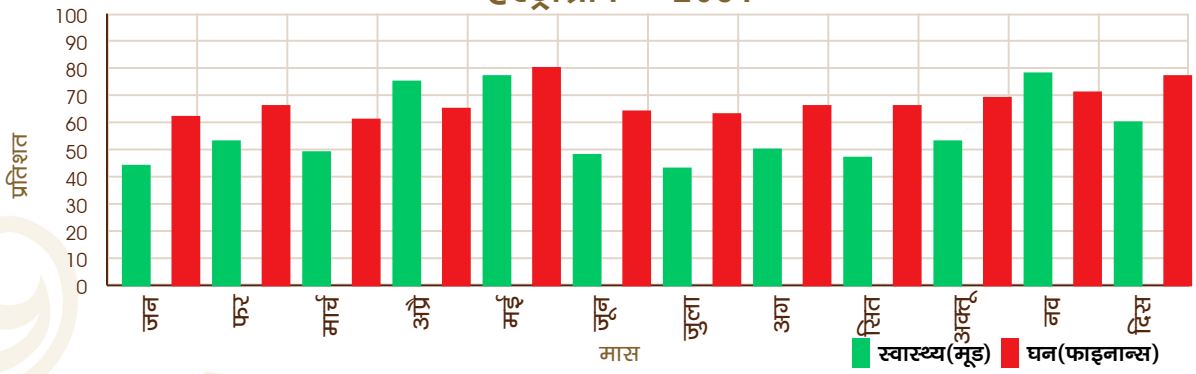

एस्ट्रोग्राफ - 2032

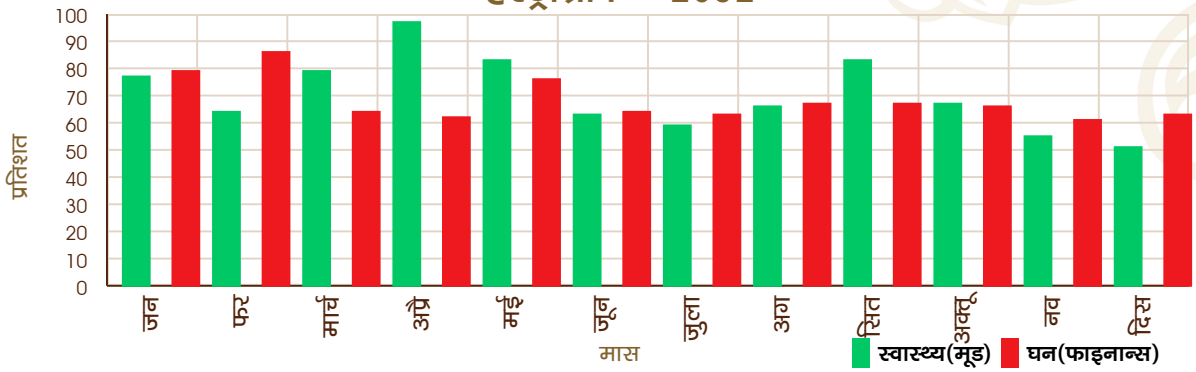

एस्ट्रोग्राफ - 2033

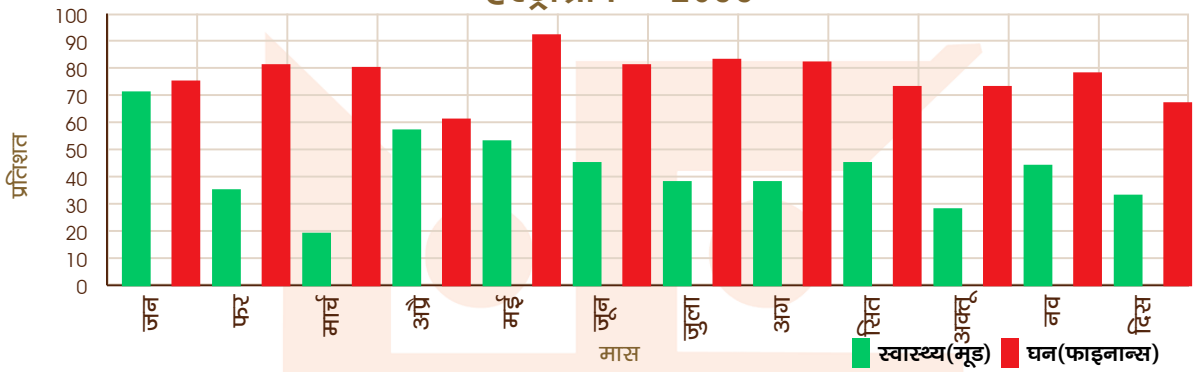

एस्ट्रोग्राफ - 2034

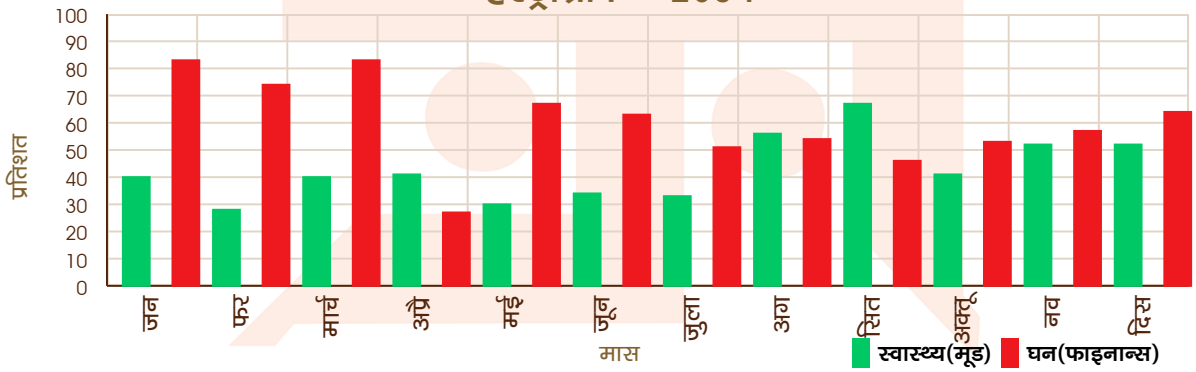

एस्ट्रोग्राफ - 2035

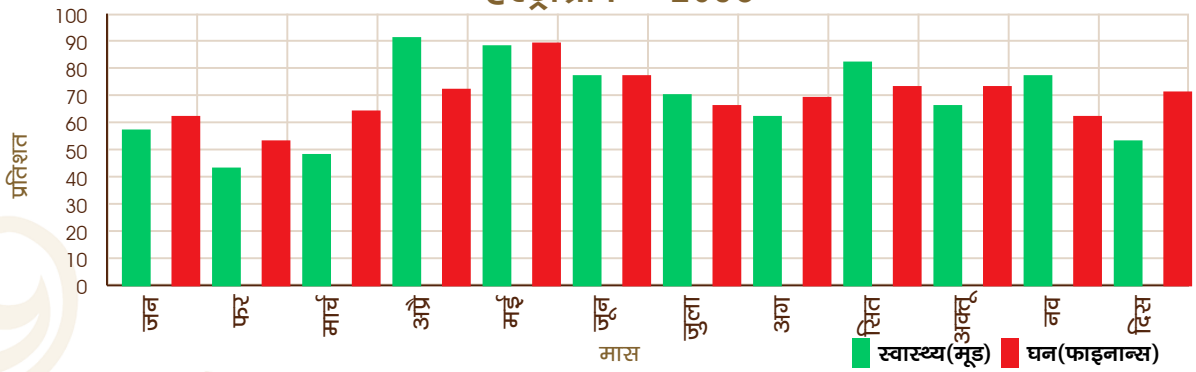

एस्ट्रोग्राफ - 2036

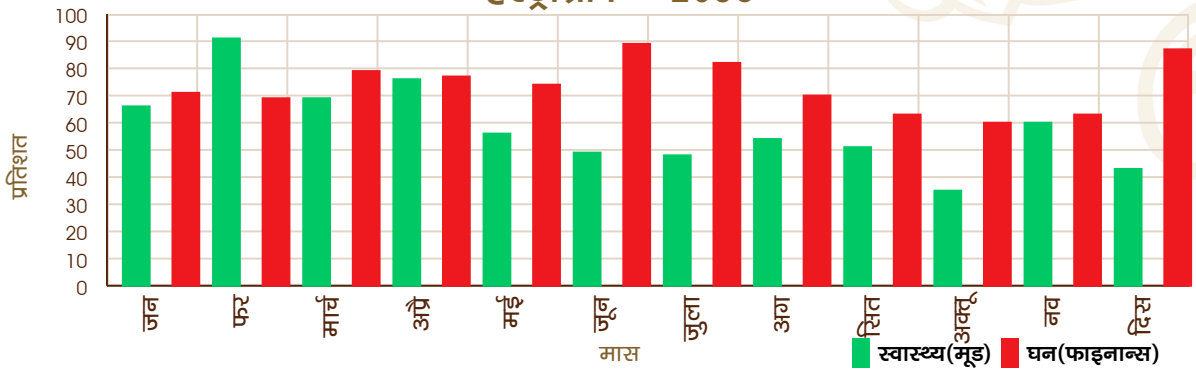

एस्ट्रोग्राफ - 2037

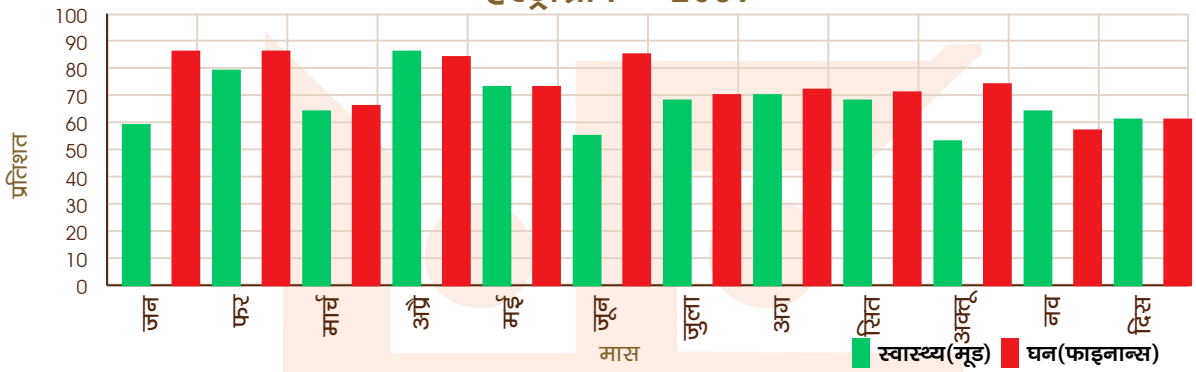

एस्ट्रोग्राफ - 2038

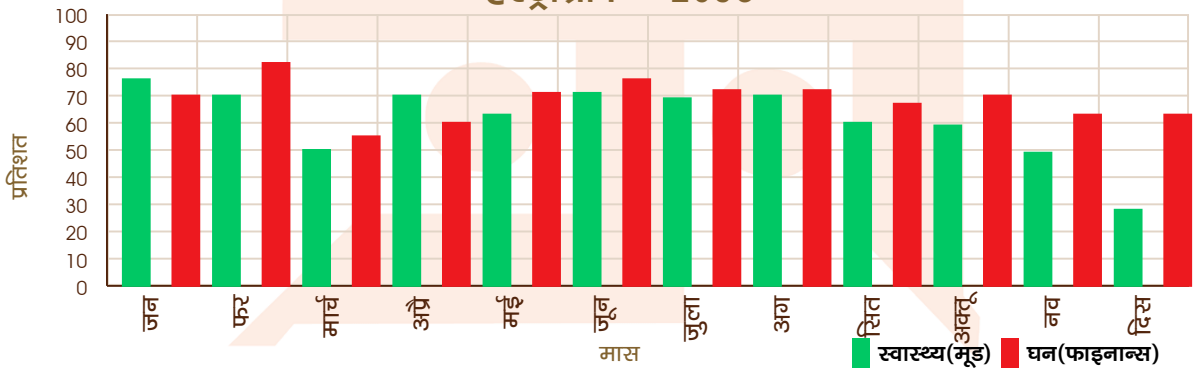

एस्ट्रोग्राफ - 2039

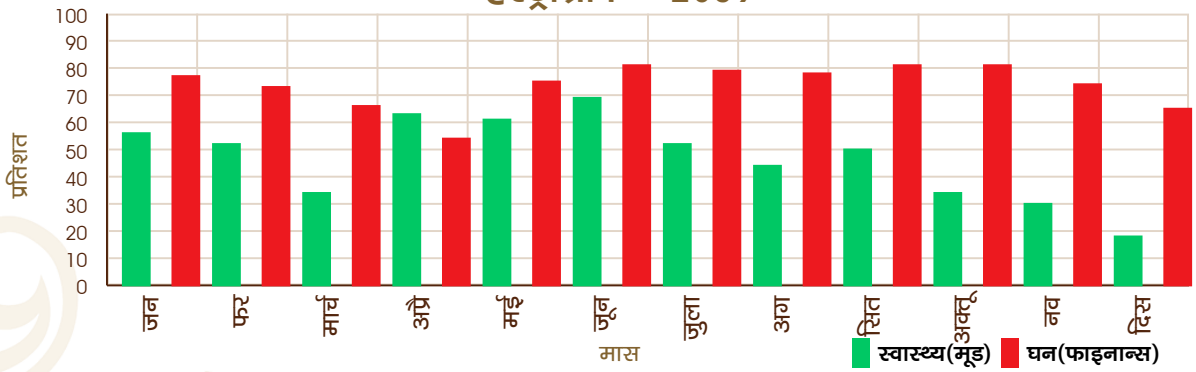

एस्ट्रोग्राफ - 2040

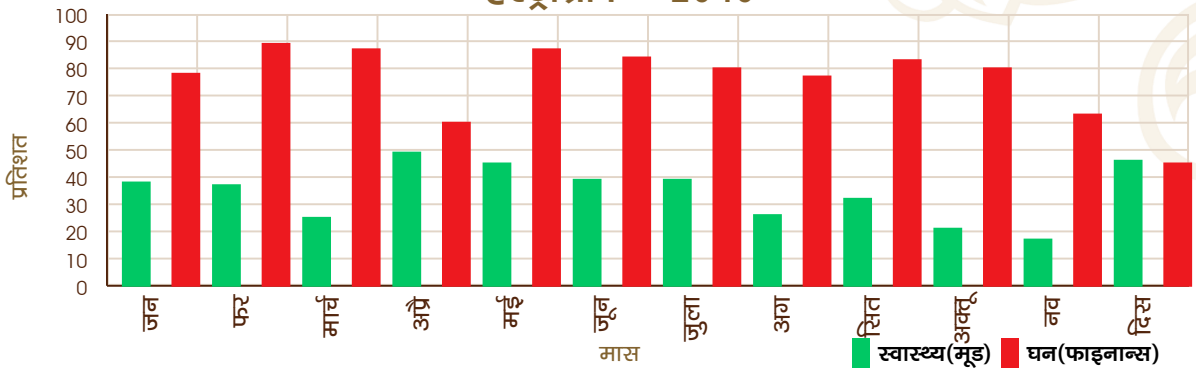

एस्ट्रोग्राफ - 2041

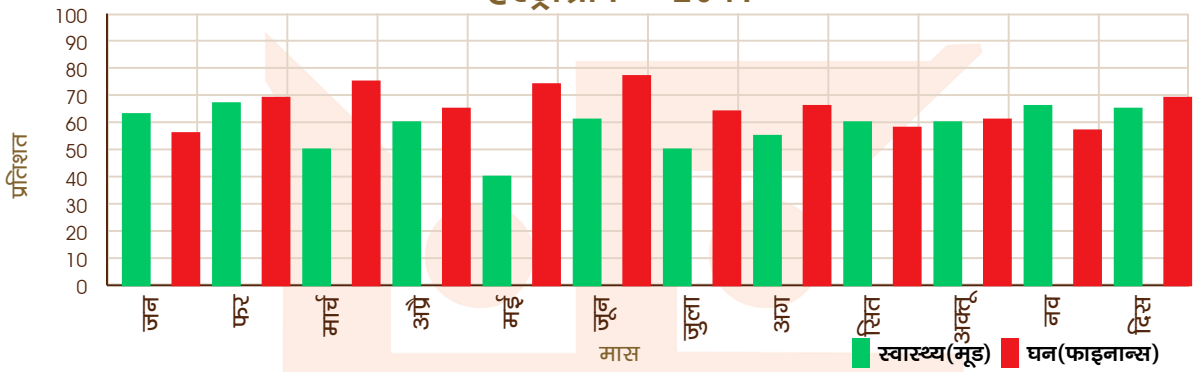

एस्ट्रोग्राफ - 2042

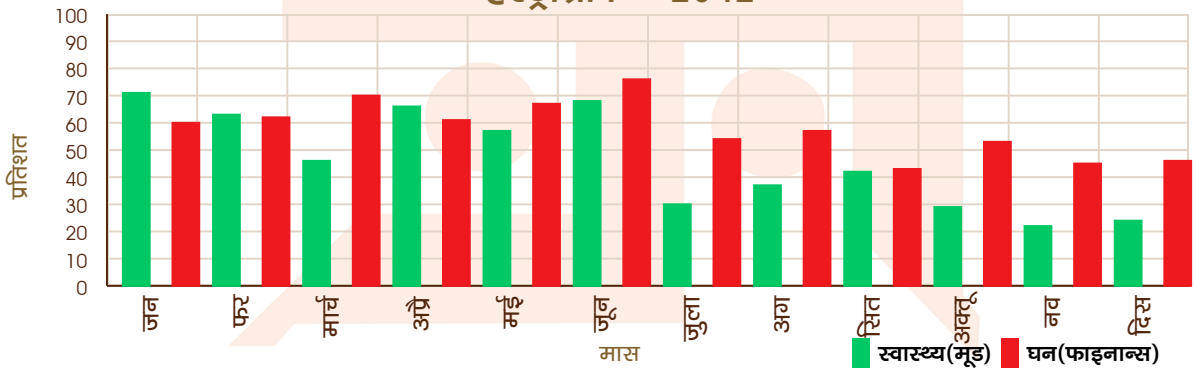

एस्ट्रोग्राफ - 2043

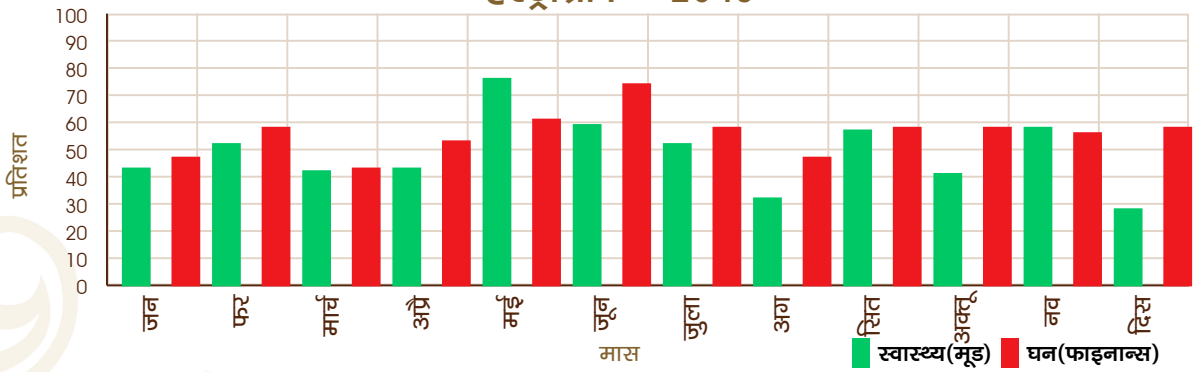

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,राहु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

अमलयोग

चन्द्राव्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

नीचभंग राजयोग

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः।
स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती।।
।। फलदीपिका।। अ. 7/श्लोक 26।।

यदि जन्मकाल के समय कोई ग्रह नीच राशि में स्थित हो तथा इस नीच राशि का स्वामी चंद्रमा से केंद्र में हो और जो ग्रह नीच है और उसका उच्चनाथ भी चंद्रमा से केंद्र में हो तो नीचता भंग हो जाती है। अर्थात् उत्तम राजयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निश्चय ही राजसुख का भोग करेंगे। सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होकर राजा के समान प्रतिष्ठित होंगे।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,बुध — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु,शनि,गुरु — योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

कारकस्थितराश्यंशनाथे केन्द्रत्रिकोणगे ।
बुद्धीश्वरेण संदृष्टे तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-36 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव कारक ग्रह जिसकी राशि अंशक में हो वह केंद्र या त्रिकोण में पंचमेश से दृष्ट हो तो तीव्रबुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीक्ष्ण बुद्धि वाले होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

अपुत्र/पुत्र क्लेश योग

ओजर्क्षेशे पुत्रगे सूर्यदृष्टे
चन्द्रे पुत्रक्लेशभाक् स्यादसूनुः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-7 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चंद्रमा ओज (1-3-5-7-9-11) राशि में ओज अंश में स्थित होकर पंचम भाव में हो तथा सूर्य से दृष्टगत हो तो अपुत्र या पुत्रक्लेश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन हो अथवा पुत्र के कारण क्लेशित रहेंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-10 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र,बुध — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-3।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि — योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 302-3 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश और द्वितीयेश शुक्र के साथ अथवा पाप ग्रह के साथ होकर 6/8/12 वें भाव में हों तो एक स्त्री की मृत्यु के पश्चात् द्वितीय विवाह होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र — योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप एक जीवनसाथी की मृत्यु के उपरांत दूसरा विवाह संभाव्य है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु,मंगल योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार

से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,राहु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।